# अंक चमत्कार

— कीरो
— CHEIRO

| ४ | ९ | २ |
|---|---|---|
| ३ | ५ | ७ |
| ८ | १ | ६ |

अंक १ के लिये

शुभ वर्ष
१ १० १९ २८ ३७ ४६
५५ ६४ ७३ ८२ ९१

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

**शुभ वार**
रविवार
सोमवार

**शुभ तारीख़**
१ तथा ४
१० तथा १३
१९ तथा २२
२८ तथा ३१

**शुभ मास**
२१ मार्च से
२८ अप्रेल तक
२१ जुलाई से
२८ अगस्त तक

जन्म तारीख़ से भविष्य जानने की नवीन पुस्तक

# अंक चमत्कार

(ज्योतिष)

**Numerology For All**


मूल लेखक

**कीरो (CHEIRO)**

विश्वविख्यात ज्योतिषी

हिन्दी रूपान्तरकार :

डॉ० गौरीशंकर कपूर


**रंजन पब्लिकेशन्स**

१६, अन्सारी रोड, दरिया गंज

नई दिल्ली—११०००२

## विषय-सूची

विषय प्रवेश | पृष्ठ संख्या

पृष्ठ सं०

# हस्त परीक्षा

## (Palmistry For All)

—कीरो

विश्वविख्यात हस्तरेखा विशेषज्ञ कीरो (Cheiro) ने हस्तरेखा विज्ञान पर अनेक छोटी और बड़ी पुस्तकें लिखी हैं; परन्तु ये सब अंग्रेजी भाषा में ही हैं। अतः हिन्दी जानने वाले पाठकों की सुविधा के लिए यह पुस्तक विद्वान ज्योतिषी डॉ० गौरीशंकर कपूर ने सरल अनुवाद में प्रस्तुत की है। कीरो के चुने हुए विचार इस अनूठी पुस्तक में दिये गए हैं जिससे साधारण हिन्दी जानने वाले पाठक भी हस्तरेखाएँ देखकर अपना तथा अपने मित्रों का भविष्य जान सकते हैं।

सरल भाषा में उदाहरणों तथा चित्रों द्वारा विषय को स्पष्ट किया गया है। मूल्य १० रु०।

# स्वप्न और शकुन (ज्योतिष)

—डा० गौरीशंकर कपूर

हमारे दैनिक जीवन में स्वप्नों का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक व्यक्ति को स्वप्न अवश्य आते हैं। उन स्वप्नों से अपने भविष्य में घटने वाली घटनाओं का सरलता से ०नुमान लगाया जा सकता है। इसी प्रकार शुभ या अशुभ शकुन जानने से प्रत्येक कार्य को सफलतापूर्वक करने में सहायता मिलती है।

प्रस्तुत पुस्तक में इन्हीं विषयों पर सरल एवं रोचक रूप से प्रकाश डाला गया है। इस अनुपम पुस्तक की सहायता से आप अपने भविष्य का सही-सही अनुमान लगा सकते हैं।

अपने विषय की सर्वप्रथम प्रामाणिक पुस्तक
जिससे आपको नया उत्साह मिलेगा।

मूल्य १० रु०

# विषय-प्रवेश

ज्योतिष और हस्त सामुद्रिक शास्त्र के सम्बन्ध में दिव्य दृष्टि रखने वाले हमारे ऋषि-मुनि तथा अन्य प्रकाण्ड पण्डित हमारे लिये एक अमूल्य भण्डार की विरासत छोड़ गये हैं। परन्तु अंक शास्त्र पर कोई प्रामाणिक तथा व्यावहारिक प्राचीन ग्रंथ या सामग्री उपलब्ध नहीं है और इस समय अंक विज्ञान का जो कुछ प्रचलन हमारे देश में है वह पाश्चात्य लेखकों की पुस्तकों के माध्यम से हुआ है। परन्तु यह बात नहीं है कि हमारे ऋषि-महर्षि अंकों की दैविक शक्ति से पूर्णतया अपरिचित थे। सम्भव है उसका उपयोग उन्होंने ज्योतिष या हस्त सामुद्रिक शास्त्र के समान भूत, वर्तमान और भविष्य का ज्ञान प्राप्त करने के लिए न किया हो; परन्तु यंत्र, मंत्र तथा उपासना में अंकों को उन्होंने पूर्ण महत्त्व प्रदान किया है। उदाहरण के लिये उन्होंने अंकों (संख्या) द्वारा जपसिद्धि के लिये मालाओं में मणियों या दानों की संख्या निर्धारित की। यह मान्यता है कि 25 मणियों की माला से मोक्ष प्राप्त होता है, 30 की माला से धन सिद्धि, 27 की माला से सर्वार्थ सिद्धि, 54 की माला से सर्वकामना सिद्धि और 108 की माला से सर्व प्रकार की सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

अंक नवग्रहों से सम्बन्धित हैं इसका भी पूर्ण ज्ञान हमारे ऋषि-महर्षियों को प्राप्त था। ग्रह-पीड़ा के निवारण के लिये जहां अन्य उपाय निर्धारित किये गये थे, वहां अंकों को एक विशेष योजना से लिखकर उनके द्वारा विभिन्न ग्रहों के यंत्रों का भी विधान किया गया। आगे हम नव ग्रहों के यंत्र दे रहे हैं जिनमें आप देखेंगे कि प्रत्येक यंत्र एक चौकोर आकार का है और उसमें नौ खाने हैं। आप जिस ओर भी तीन खानों के अंकों का योग करेंगे तो योगफल एक ही सा आयेगा। सूर्य के यंत्र में यह योगफल 15 है, चन्द्रमा के यंत्र में 18, मंगल के यंत्र में 21, बुध के यंत्र में 24, बृहस्पति के यंत्र में 27, शुक्र के यंत्र में 30, शनि के यंत्र में 33, राहु के यंत्र में 36 और केतु के यंत्र में 39 है। इन यंत्रों में इन अंकों को

इस प्रकार क्यों सुयोजित किया गया है इसका रहस्य किसी को मालम नहीं है।

सूर्य का यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| 6 | 1 | 8 |
| 7 | 5 | 3 |
| 2 | 9 | 4 |

चन्द्र का यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| 7 | 2 | 9 |
| 8 | 6 | 4 |
| 3 | 10 | 5 |

मंगल का यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| 8 | 3 | 10 |
| 9 | 7 | 5 |
| 4 | 11 | 6 |

बुध का यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| 9 | 4 | 11 |
| 10 | 8 | 6 |
| 5 | 12 | 7 |

बृहस्पति का यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| 10 | 5 | 12 |
| 11 | 9 | 7 |
| 6 | 13 | 8 |

शुक्र का यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| 11 | 6 | 13 |
| 12 | 10 | 8 |
| 7 | 14 | 9 |

शनि का यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| 12 | 7 | 14 |
| 13 | 11 | 9 |
| 8 | 15 | 10 |

राहु का यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| 13 | 8 | 15 |
| 14 | 12 | 10 |
| 9 | 16 | 11 |

केतु का यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| 14 | 9 | 16 |
| 15 | 13 | 11 |
| 10 | 17 | 12 |

इसी प्रकार हमारे ऋषियों-महर्षियों ने नवग्रहों की पीड़ा से निवारण के लिये ग्रह संबंधी मंत्रों की जप संख्या निर्धारित की है। सूर्य के मंत्र की जप संख्या 7000, चन्द्रमा की 11000, मंगल की 10000, बुध की 9000, वृहस्पति की 19000, शुक्र की 16000, शनि की 23000, राहु की 18000 और केतु की 17000 रखी गई है।

जैसा हमने ऊपर उल्लेख किया है कि इस समय अंक विद्या पर जो कुछ महत्वपूर्ण या अर्थपूर्ण अन्वेषण हुआ है, वह पाश्चात्य विद्वानों ने किया है और उन्हीं की लिखी पुस्तकों का इस समय देश में प्रचलन हो रहा है। हमारे देश में भी निगूढ़ विद्याओं (Occult sciences) में दिलचस्पी रखने वाले कुछ विद्वानों ने इस दिशा में कदम उठाया है; परन्तु अभी पाश्चात्य विद्वानों से वे इस क्षेत्र में बहुत पीछे हैं। यह अवश्य है कि इस दैविक विज्ञान की ओर भी झुकाव दिन प्रति दिन बढ़ रहा है और यह आशा की जा सकती है कि भारतीय संस्कृति तथा संस्कारों को ध्यान में रख कर हमारे अन्वेषण करने वाले विद्वान् भी इस क्षेत्र में पर्याप्त सफलता प्राप्त करेंगे।

पाश्चात्य अंक-शास्त्रियों में विश्व विख्यात तथा अपने समय के अत्यन्त विद्वान और लोकप्रिय कीरो को प्रमुख स्थान प्राप्त है। वह केवल अंक विज्ञान के ही प्रकाण्ड पण्डित नहीं थे, उन्हें हस्तरेखा और ज्योतिष विज्ञान में भी पूर्णरूप से दक्षता प्राप्त थी। कीरो का जन्म सन् 1866 में एक नारमन परिवार में हुआ था। वे बाद में इंगलैण्ड में आकर बस गये थे। उनका वास्तविक नाम काउन्ट लुई हेमन था। लगभग चालीस वर्ष तक वे निरंतर गुप्त विद्याओं के शोध-कार्य में लिप्त रहे। अपने कार्य-क्षेत्र से अवकाश लेने के तुरन्त बाद सन् 1936 में उनकी मृत्यु हो गयी। परन्तु वे हस्त-विज्ञान, अंक-ज्योतिष आदि पर ऐसी अनेकों विद्वत्तापूर्ण और अनुभव सिद्ध प्रामाणिक पुस्तकें लिखकर छोड़ गये हैं जो संसार के कोने-कोने में इन विषयों के छात्रों का एक दैदीप्यमान प्रकाश स्तम्भ के समान सदा मार्ग-प्रदर्शन करती रहेंगी। जब तक संसार में हस्तविज्ञान, अंक-ज्योतिष जैसी विद्याओं पर विश्वास रहेगा, कीरो का नाम आदरपूर्वक लिया जायेगा।

प्रस्तुत पुस्तक अंक विद्या के सम्बन्ध में कीरो के विचारों तथा उनके अनुभव सिद्ध सिद्धान्तों के आधार पर लिखी गई है। मैंने अंक विज्ञान पर अनेकों पाश्चात्य और भारतीय लेखकों की पुस्तकों का अत्यन्त ध्यानपूर्वक अध्ययन किया है; परन्तु जो सरल और स्पष्ट प्रणाली कीरो ने हमारे सम्मुख रखी है, पाठक स्वयं देखेंगे कि उसके द्वारा उनको अपने दैनिक जीवन की समस्याओं का समाधान करने में कितनी सहायता प्राप्त होती है।

कीरो ने गुह्य विद्याओं (Occult Sciences) में दक्षता प्राप्त करने के लिये भारत और अन्य दूर-दूर के देशों में भ्रमण किया और वहां के उन व्यक्तियों से भेंट की जिनके पास उनके पूर्वजों के समय से संचित निगूढ़ विद्याओं से सम्बन्धित प्राचीन ग्रन्थ संग्रहीत थे। उन ग्रन्थों को और जो ज्ञान उन्हें अपने पूर्वजों से प्राप्त हुआ था, उसको वे लोग सांप की मणि के समान छिपा कर रखते थे; परन्तु कीरो किसी प्रकार उनसे ज्ञानोपार्जन करने में सफल हुये।

कीरो ने लिखा है कि पौर्वात्य देशों में भ्रमण करते हुये जब वे भारत आये तो उन्हें कुछ ऐसे पण्डितों के निकट पहुंचने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिनके पास सदियों पुराना निगूढ़ विद्याओं का ज्ञान संचित था—जिसको वे उतना ही पवित्र और पूजनीय मानते थे जितना अपने धार्मिक संस्कारों को। उनसे जो कुछ जानकारी और ज्ञान कीरो को प्राप्त हुआ था उस पर उन्होंने सपरिश्रम अन्वेषण किया और फिर उसको अपने अनुभव की कसौटी पर जांचा-परखा। उनको ज्ञात हुआ कि प्रकृति के नियमों का अध्ययन करने वाले प्राचीन भारत के विद्वान इस दिशा में अत्यन्त दक्ष थे; परन्तु अपने उत्तराधिकारियों को अपना गुप्त ज्ञान देने में वे इतने सतर्क रहते थे कि कहीं वह जन साधारण में प्रकट न हो जाये। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत में संग्रहीत निगूढ़ विद्याओं के ज्ञान के भण्डार का अधिकांश भाग इधर-उधर बिखर कर लुप्त या नष्ट हो गया।

कीरो के अनुसार भारत के प्राचीन काल के ऋषि-महर्षि; चेल्डियन्स (Chaldeans) और पुरातन काल के मिश्र के विद्वान अंकों में निहित दैविक शक्ति से पूर्ण रूप से परिचित थे और समय और मानव जीवन के

सम्बन्ध में उनके व्यावहारिक उपयोग में दक्ष थे। प्राचीन काल के भारतीय विद्वानों की प्रशंसा करते हुए जोरदार शब्दों में कीरो ने लिखा है कि वे हिन्दू-महर्षि ही थे जिन्होंने सबसे प्रथम यह गणना की थी कि वह घटना जिसमें समयचक्र की अग्रगति में जब दिन-रात बराबर होते हैं (Precession of Equinoxes) प्रत्येक 25,827 वर्ष बाद घटित होती है। (जब सूर्य विषपत रेखा से गुजरता है उस दिन रात-दिन बराबर समय के होते हैं। ऐसा 21 मार्च और 21 सितम्बर को होता है।) वैज्ञानिकों ने सैकड़ों वर्ष इस सम्बन्ध में आधुनिक वैज्ञानिक साधनों से अन्वेषण किया और इसकी पुष्टि की कि भारतीय ऋषि-महर्षियों की गणना बिलकुल ठीक थी।

इसी प्रकार हमारे ऋषियों-महर्षियों ने यह निश्चित रूप से बता दिया था कि विभिन्न ग्रह भचक्र का भ्रमण करने में कितना समय लगाते हैं। कीरो का कहना है : जब प्राचीन काल से ग्रहों के सम्बन्ध में सब ज्ञान उपलब्ध था तो अवश्य चेल्डियन्स (Chaldeans) मिश्र के तथा भारत के विद्वान अनभिज्ञ नहीं थे कि संगीत के सात स्वरों के समान 1 से 9 अंक सभी अंकों और गणनाओं के मूल आधार हैं।

कीरो के मतानुसार सात का अंक अज्ञात काल से आध्यात्मिक दृष्टि से रहस्यपूर्ण अंक माना गया है। उसी प्रकार 9 अंक उस क्रम का अन्त है जिस पर समस्त अनात्मक (Materialistic) गणनायें निश्चित की गई हैं। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि 9 के अंक के बाद प्रथम 9 अंकों की पुनरावृत्ति होती है। उदाहरण के लिये अंक 10 को लीजिये। '0' कोई अंक नहीं है, इसलिये अंक 10 केवल 1 अंक को दुहराता है। इसी प्रकार अंक 11 (1+1) अंक 2 को, अंक 12 (1+2) अंक 3 को, अंक 13 (1+3) अंक 4 को, अंक 14 (1+4) अंक 5 को, अक 15 (1+5) 6 को, अंक 16 (1+6) 7 को, अंक 17 (1+7) अंक 8 को और अंक 18 (1+8) अंक 9 को दोहराते हैं। आगे चलकर आप देखेंगे कि अंक 19 (1+9) फिर अंक 10 बनकर अंक 1 की और अंक 20 (2+0) अंक 2 की पुनरावृत्ति हैं। इस प्रकार अनन्तता (Infinity) तक यही क्रम चलता रहता है। यों तो मूल अंक 1 से 9 तक ही हैं; परन्तु उनके बाद बनने वाले संयुक्त अंकों की भी अपनी निगूढ़ प्रतीकात्मकता है (Occult

Symbolism) है। इसका विवरण आपको इस पुस्तक में आगे चल कर प्राप्त होगा।

पुरातन काल में सात ग्रहों को ही मान्यता प्राप्त थी। इसका ज्वलन्त उदाहरण यह है कि सात ग्रहों के अनुसार सात वार निर्धारित किये गये हैं और प्रत्येक वार का अधिष्ठाता एक ग्रह है। 'सन्डे' का सूर्य, 'मन्डे' का चन्द्रमा, 'ट्यूजडे' का मंगल, 'वैडनेजडे' का बुध, 'थर्स डे' का बृहस्पति, 'फाइडे' का शुक्र और 'सेटेर्डे' का शनि। हिन्दुओं में सातों वार ग्रहों के नाम पर रखे गये हैं—रविवार, सोमवार या चन्द्रवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पति वार शुक्रवार और शनिवार। इस सम्बन्ध में एक बात और उल्लेखनीय है। भारतीय ज्योतिष में यद्यपि राहु केतु सहित नौ ग्रह और बारह राशियां मानी गयी हैं। परन्तु राहु और केतु को किसी भी राशि का स्वामित्व नहीं दिया गया है। राशियों का स्वामित्व केवल सात ही ग्रहों को प्राप्त हैं।

(राहु और केतु मूलतः छायाग्रह हैं। राहु शनिवत् तथा केतु मंगल की तरह माने जाते हैं—संपादक)

जैसे भचक्र (Zodiac) में 12 राशियों में प्रकृति के नियमों या किसी दैविक शक्ति के निश्चित नियमों के अनुसार भ्रमण करते रहते हैं, उसी प्रकार सब धर्मों और सारे जीवन का रहस्य प्रकृति के नियमों पर आधारित है। दैविक शक्ति तथा दैविक प्रेरणावश ही सब कार्य होते हैं। इसीलिए कहा जाता है कि एक जर्रा भी भगवान की इच्छा के बिना नहीं हिल सकता।

कीरो का मत है कि जिस दैविक शक्ति का हम ऊपर उल्लेख करते रहे हैं, उसकी वास्तविकता इस आधुनिक और व्यावहारिक युग में हम अपने दैनिक जीवन में उन नियमों को लागू करके ही प्रमाणित कर सकते हैं। कीरो का दावा है कि उन्होंने वर्षों परिश्रम करके और व्यावहारिक रूप से परीक्षा करके अंक विज्ञान के वे सिद्धान्त निश्चित किये हैं जिनका पूर्ण विवरण इस पुस्तक में पाठकों को प्राप्त होगा। उन्हें इस बात का विश्वास है कि वह व्यक्ति जिसे किसी निगूढ़ विज्ञान (Occult science) का ज्ञान नहीं है इस पुस्तक में दिये हुये अंक विज्ञान के सिद्धान्तों को समझ सकता

है और अपने दैनिक जीवन की साधारण से साधारण समस्याओं के लिये उनको लागू करके लाभ उठा सकता है और उनकी सत्यता की पुष्टि कर सकता है।

यदि कोई व्यवसायी इन सिद्धान्तों का प्रयोग कुछ महीनों तक करे तो वह मानने को विवश हो जायेगा कि उसके व्यवसाय सम्बन्धी महत्वपूर्ण कार्य उसके अंक विज्ञान के नियमों द्वारा निर्धारित 'विशेष दिन' में ही फलीभूत होते हैं। उसको देखकर आश्चर्य होगा कि अपने 'सौभाग्यपूर्ण अंक' के अनुसार कार्य करने से उसकी योजनायें और उसके व्यवसाय सम्बन्धी कार्यों में एक अत्यन्त अनुकूल वातावरण उपस्थित हो गया है। वह यह भी देखेगा कि प्रति वर्ष उन अवधियों में (सौर्य मासों में) जो उसके अपने अंक के अंतर्गत आती हैं, कार्यक्षमता और सफलता की सम्भावना कितनी अधिक बढ़ जाती है। उसको यह ज्ञात होने लगेगा कि सप्ताह के कष्टदायक या दुर्भाग्यपूर्ण दिन वह होंगे जिनके अंक उसके 'अपने अंक' से सौहार्द्र भाव या सहानुभूति नहीं रखते हैं।

उसको स्वास्थ्य के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार के प्रभाव देखने में आयेंगे। वह अनुभव करेगा कि वर्ष के कुछ मास या सप्ताह ऐसे होंगे जब नियमित रूप से उसके स्वास्थ्य में गिरावट के चिन्ह दृष्टिगोचर होंगे।

अंक विज्ञान की सहायता से जीवन को बहुत सी उलझनों तथा निराशाओं से मुक्त रखा जा सकता है तथा दुर्भाग्यपूर्ण अवसरों और कठिनाइयों से जीवन की रक्षा की जा सकती है। यदि कोई व्यक्ति इस पुस्तक में दिये हुये अंक विज्ञान के सिद्धान्तों के अनुसार चलेगा तो वह अपने समस्त कार्य—नियुक्तियां, नौकरी या परीक्षा के लिये अरजी देना, व्यवसाय सम्बन्धी ठेके (Contract) के कागजों पर हस्ताक्षर करना, गृह-निर्माण आरम्भ करना आदि अपने लिये उपयुक्त दिनों में ही करेगा। ऐसा करने से यह प्रमाणित हो जायेगा कि उपयुक्त दिनों के चुनने से उसका कार्य कैसे विना बाधा या कठिनाई के सम्पन्न हो जाता है।

अन्त में कीरो के निम्नलिखित शब्दों से हम इस प्राक्कथन को समाप्त करते हैं :—

"जो अपने जीवन में बिल्कुल असफल रहे हैं, यह अंक विज्ञान का ज्ञान उनको सफलता प्राप्त करायेगा। जो सफल हैं उन्हें सफलता के और उच्च शिखरों पर पहुंचायेगा। जो व्यक्ति इसमें दिलचस्पी लेगा, इसका समुचित अध्ययन करके, ठीक तरह से अपनायेगा, उसका जीवन सरस बन जायेगा और उसको अपने जीवन के सम्बन्ध में आशावादी धारणायें बन जायेंगी।

पचास से अधिक वर्षों से इस विषय पर गूढ़ अध्ययन करके तथा सहस्रों अनुभव और प्रयोगों के पश्चात, जो कुछ मैंने अंक विज्ञान के सम्बन्ध में लिखा है, उसकी सत्यता पर मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है। मैं आपसे (पाठकों से) यही कहूंगा कि जो नियम या सिद्धान्त मैंने निश्चित किये हैं उनका समझदारी और सच्चाई के साथ अनुसरण किया जायेगा तो आपके जीवन के शब्दकोष से 'संयोग' जैसे शब्द लुप्त हो जायेंगे— क्योंकि उन पर विश्वास करना अपने विधाता (परम परमेश्वर) का अपमान करना है।"

1

# महीनों के ग्रहांक

यद्यपि आगे आने वाले प्रकरणों में यह बताया जायेगा कि एकल और संयुक्त अंकों का मानव जीवन के सम्बन्ध में क्या विशेष अर्थ होगा, इस समय हम यह जानकारी दे रहे हैं कि वर्ष के बारह मासों के लिये विशिष्ट अंक क्यों निर्धारित किये गये हैं।

वास्तविक सौर्य मास उस दिन आरम्भ होता है जब बसन्त ऋतु में (चैत्रमास के) रात और दिन बराबर होते हैं। ऐसा प्रति वर्ष 21 से २३ मार्च को होता है। उसके बाद सूर्य भचक्र के प्रत्येक राशि जो 30 अंश की होती है क्रमानुसार पृथ्वी के चारों ओर भ्रमण करता है और उसकी यह यात्रा $365\frac{1}{4}$ से कुछ कम समय में पूर्ण होती है। इसीलिये एक वर्ष 365 दिनों का माना जाता रहता है।

पृथ्वी अपनी धुरी पर प्रत्येक 24 घंटों में एक चक्कर पूर्ण करती है। पृथ्वी की इस क्रिया से पूरी 12 राशियां 24 घंटों में एक बार पृथ्वी के प्रत्येक भाग से गुजर जाती है। प्रकृति का यह क्रम बिल्कुल घड़ी की चाल के समान चलता है।

भचक्र की प्रथम राशि—मेष राशि का अवधिकाल 21 मार्च से 19 अप्रैल तक है। वही अंक 9 का अवधिकाल माना जाता है। उसका अधिष्ठाता ग्रह अपने अकारात्मक (positive) रूप में मंगल है। (इस अवधि काल में सायन सूर्य मेष राशि में स्थित होता है।)

20 अप्रैल से 20 मई तक अंक 6 और वृषभ राशि का अवधिकाल माना जाता है। इस राशि और अवधिकाल का अपने सकारात्मक रूप में अधिष्ठाता ग्रह शुक्र है। (इस अवधिकाल में सायन सूर्य वृषभ राशि में स्थित होता है।)

21 मई से 20 जून तक 5 अंक और मिथुन राशि का अवधिकाल माना जाता है। इस राशि और अवधिकाल का अपने अकरात्मक रूप में अधिष्ठाता ग्रह बुध है। (इस अवधिकाल में सायन सूर्य मिथुन राशि में स्थित होता है।)

21 जून से 20 जुलाई तक कर्क राशि का अवधिकाल माना जाता है। इस राशि और अवधिकाल का अधिष्ठाता ग्रह चन्द्रमा है। उसको 2 और 7 अंक निर्धारित किये गये हैं। (इस अवधिकाल में सायन सूर्य कर्क राशि में स्थित होता है।)

21 जुलाई से 20 अगस्त तक 1 और 4 अंक का तथा सिंह राशि का अवधिकाल है। इस राशि और अवधिकाल का अधिष्ठाता ग्रह सूर्य है। (इस अवधिकाल के सायन सूर्य सिंह राशि में स्थित होता है।)

21 अगस्त से 20 सितम्बर तक अंक 5 का दूसरा अवधिकाल और कन्या राशि से सम्बन्धित है। इस अवधिकाल और राशि का अपने नकारात्मक (negative) रूप में अधिष्ठाता ग्रह बुध है। (इस अवधिकाल में सायन सूर्य कन्या राशि में स्थित होता है।)

21 सितम्बर से 20 अक्टूबर तक अंक 6 और तुलाराशि का अवधि-काल है। इस अवधिकाल और राशि का अपने नकारात्मक रूप में अधिष्ठाता ग्रह शुक्र है। (इस अवधिकाल में सायन सूर्य तुलाराशि में स्थित होता है।)

21 अक्टूबर से 20 नवम्बर तक अंक 9 का दूसरा अवधिकाल है। वह वृश्चिक राशि से सम्बन्धित है। इस अवधिकाल और राशि का, अपने नकारात्मक रूप में अधिष्ठाता ग्रह मंगल है। (इस अवधिकाल में सायन सूर्य वृश्चिक राशि में स्थित होता है।)

21 नवम्बर से 20 दिसम्बर तक अंक 3 और धनु राशि का अवधि-काल होता है। इस राशि का अवधिकाल और अपने अकरात्मक रूप में, अधिष्ठाता ग्रह बृहस्पति है। (इस अवधिकाल में सूर्य धनुराशि में स्थित होता है।)

21 दिसम्बर से 20 जनवरी तक अंक 8 और मकर राशि का

अवधिकाल होता है। इस अवधिकाल और राशि का, अपने अकरात्मक रूप में, अधिष्ठाता ग्रह शनि होता है। (इस अवधिकाल में सायन सूर्य मकर राशि में स्थित होता है।)

21 जनवरी से 18 फरवरी तक अंक 8 और कुम्भ राशि का अवधिकाल होता है। इस अवधिकाल और राशि का स्वामी अपने नकारात्मक रूप में शनि होता है। (इस अवधिकाल में सायन सूर्य कुम्भ राशि में होता है।)

19 फरवरी से 20 मार्च तक अंक 3 का और मीन राशि का अवधिकाल होता है। इस अवधिकाल और राशि का नकारात्मक रूप में अधिष्ठाता ग्रह वृहस्पति होता है।

यहां पर यह बात उल्लेखनीय है कि जब सूर्य भचक्र में एक राशि से दूसरे में गुजरता है तो किसी राशि में प्रवेश करते समय और उसको छोड़ते समय, सात दिन ऐसे होते हैं जिनमें उस सौर्यमास के अंक का प्रभाव उतना सशक्त नहीं होता जितने उसके राशि में अन्य भाग में भ्रमण करने के समय होता है। वास्तव में उसमें कुछ हद तक इस राशि के गुण मिश्रित हो जाते हैं जिसको वह छोड़ रहा हो और जिसमें वह प्रवेश कर रहा हो।

यह भी उल्लेखनीय है भचक्र के अवधिकाल के अनुसार उनके अधिष्ठाता ग्रहों में सकरात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के गुण होते हैं। अकरात्मक होने पर गुण भौतिक और शक्तियुक्त होते हैं और नकारात्मक होने पर मानसिक गुणों की प्रधानता होती है।

उदाहरण के लिये मेष राशि में 9 अकरात्मक अंक है। उसका माना हुआ प्रतिरूप (Symbol) है लोहे का कवच (बख्तर) पहने हुये पुरुष, जिसका मुखौटा खुला हुआ है और हाथ में नंगी तलवार है।

वृश्चिक राशि में 9 नकारात्मक अंक हैं। उसका जो प्रतिरूप अंकित किया है उसमें के पुरुष लोहे का कवच धारण किये है परन्तु उसका मुखौटा बन्द है और तलवार म्यान में है।

**सप्ताह के दिनों के लिये निर्धारित अंक इस प्रकार हैं :**

| | |
|---|---|
| रविवार | 1—4 |
| सोमवार | 2—7 |
| मंगलवार | 9 |
| बुधवार | 5 |
| वृहस्पतिवार | 3 |
| शुक्रवार | 6 |
| शनिवार | 8 |

**ग्रहों के अंक :**

| | |
|---|---|
| सूर्य | 1 |
| चन्द्रमा | 2 |
| वृहस्पति | 3 |
| यूरेनस (हर्शेल) | 4 |
| बुध | 5 |
| शुक्र | 6 |
| नेप्चून | 7 |
| शनि | 8 |
| मंगल | 9 |

सूर्य और चन्द्रमा ही केवल ऐसे ग्रह हैं जिनके लिए दो अंक निर्धारित किये गये हैं। क्योंकि सूर्य और यूरेनस में परस्पर सम्बन्ध है इसलिये सूर्य के अङ्क 1—4 लिखे जाते हैं।

इसी प्रकार गुणों में चन्द्रमा का नेपचून से सम्बन्ध होने के कारण उसके अंक 2—7 लिखे जाते हैं।

ध्यान देने योग्य एक विचित्र बात अनुभव में देखने में आई है। वह है अंक 1—4 और 2—7 का एक दूसरे के प्रति आकर्षण और सहानुभूति। यह देखा गया है कि वे व्यक्ति जिनका जन्म-अंक—1—4 के अन्तर्गत

अर्थात जिनका जन्म 1, 4 10, 13, 19, 22, 28 और 31 तारीखों में होता है उन लोगों से अत्यन्त मैत्रीपूर्ण और सहानुभूति पूर्ण सम्बन्ध रखने में समर्थ होते हैं जिनका जन्म अंक 2–7 के अंतर्गत अर्थात 2, 7, 11, 16, 20, 25 और 29 तारीखों में होता है। इन दो समूहों के लोगों में और भी अधिक घनिष्ठता होगी यदि उनका जन्म 20 जून और जुलाई 21—27 के बीच में (चन्द्रमा से प्रभावित अवधिकाल में) या 21 जुलाई और 20—27 अगस्त के बीच में (सूर्य से प्रभावित अवधिकाल में) हुआ हो। (इन अवधिकाल में सात दिन संधि प्रभाव के सम्मिलित कर लिये गये हैं।) एकल अंक 1 से 9 तक—वे पुरुष और स्त्रियों पर किस प्रकार प्रभाव डालते हैं (इन अंकों से प्रभावित व्यक्तियों के स्वभाव आचरण दृष्टव्य है।)

## 2

## एकल या मूल अंक 1 से 9 तक
## उनका पुरुष और स्त्रियों पर प्रभाव

इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि सौर मण्डल में केवल नौ ग्रह हैं। पाश्चात्य ज्योतिष के अनुसार ये नौ ग्रह हैं, सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध वृहस्पति, शुक्र, शनि, यूरेनस और नेप्चून। पाश्चात्य ज्योतिष में एक दसवां ग्रह भी अब मान्यता प्राप्त कर चुका है। उसका नाम है प्लूटो। परन्तु कीरो ने अपने अंक विज्ञान के सिद्धान्तों को ऊपर दिये हुए नौ ग्रहों तक ही सीमित रक्खा है। इन नौ ग्रहों के 1 से 9 तक अंक हैं। 9 अंक के बाद जो अंक आते हैं वे इन्हीं एकल अंकों की पुनरावृत्ति करते हैं। जैसे 10 जिसमें एक के साथ 'शून्य' लगा दिया गया है, 11 जो 1 और 1 को मिलाकर बनता है और 2 बन जाता है, 12 जो 1+2= 3 है। आगे भी इसी तरह क्रम बनता रहता है। कोई भी अंक चाहे

जितना बड़ा हो एकल अंक के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। एकल अंक ही मूल अंक होता है जो उन अंकों की आत्मा होता है।

मूल अंक निकालने की विधि नीचे दी जाती है :—

10=1+0=1
11=1+1=2
12=1+2=3
13=1+3=4
14=1+4=5
15=1+5=6
16=1+6=7
17=1+7=8
18=1+8=9
19=1+9=10=1+0
=1

20=2+0=2
21=2+1=3
22=2+2=4
23=2+3=5
24=2+4=6
25=2+5=7
26=2—६=8
27=2+7=9
28=2+8=10=1+0
=1

यदि हमें किसी बड़ी संख्या जैसे 56113 का मूल अंक निकालना हो तो भी उपर्युक्त विधि अपनायी जायेगी—5+6+1+1+3 = 16=1+6=7।

अंक विज्ञान के अध्ययन में प्रथम पद में हमें केवल ९ मूल अंकों पर विचार करना है। हमें इन 9 अंकों के निगूढ़ अर्थ का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना होगा जब वे पुरुषों और स्त्रियों के जन्म तारीख में आयेंगे। इसी के द्वारा हमें मानव स्वभाव के रहस्यों को जानने की कुंजी प्राप्त हो जायेगी।

नौ अंक जिनका हमें अध्ययन करना है वे हैं 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8 और 9। यही अंक विभिन्न ग्रहों के लिये निर्धारित किये गये हैं जो सभ्यता के पुरातन काल से मानव जाति के कार्यकलापों पर नियंत्रण रखते हैं और प्रभाव डालते हैं और जिनको निगूढ़ विद्याओं में विश्वास रखने वाले चैल्डियन्स, हिन्दू, मिश्री, हेब्रयू—सब ही ने मान्यता दी है।

इस विचारधारा का भेद है—रहस्यपूर्ण प्रदोलन (Vibration) का नियम। जन्म की तारीख का एक मूल अंक होता है। वह उस ग्रह से

सम्बन्धित होता है जिसका वह मूल अंक होता है। उस अंक में एक प्रदोलन (Vibration) होता है जो जीवन भर तक क्रियाशील रहता है। वह प्रदोलन नामांक से सामंजस्य कर भी सकता है और नहीं भी कर सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि उस अंक का प्रदोलन उन व्यक्तियों के प्रदोलन से सामंजस्य न करता हो जिनसे हम अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सम्बन्ध स्थापित करते हों। इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी हम उपयुक्त स्थान पर देंगे।

सबसे प्रथम यह विचार करेंगे कि प्रत्येक अंक का उस ग्रह से क्या सम्बन्ध है जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है।

## 3
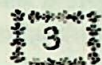
## अंक 1

अंक 1 का प्रधिष्ठाता ग्रह सूर्य है। वह सूर्य का प्रतिनिधित्व करता है। यह उस क्रम का आरम्भ है जिससे अन्य नौ अंकों की सृष्टि हुई है। सब अंकों का आधार है एवं समस्त प्राणशक्ति का आधार 1 है। यह अंक सम्पूर्णता से सृष्टात्मकता, वैयक्तिकता तथा अकरात्मकता का प्रतीक है। जिसका जन्मांक 1 है या उसी श्रेणी का (जैसे 10, 19, २८) कोई अंक है तो उस व्यक्ति में उपर्युक्त गुण पूर्णरूप से पाये जायेंगे। इन गुणों के कारण अपने आप को सब कुछ समझने वाला, अपने कार्यक्षेत्र में क्रियात्मक, सृष्टात्मक, नये आविष्कार करने वाला होगा और अपनी विचार धारा में निश्चित रूप से स्थिर स्वभाव का होगा। उसके स्वभाव में हठ और आत्माभिमान पर्याप्तमात्रा में होगा और जिस कार्य को वह हाथ में लेगा उसको पूर्ण निश्चय के साथ पूर्ण करने में क्रियाशील होगा। 1 अंक वाले व्यक्तियों पर सूर्य का प्रभाव और भी अधिक होगा यदि उनका जन्म 21 मार्च और 28 अप्रैल के बीच में हुआ हो क्योंकि इस अवधिकाल में सूर्य पाश्चात्य ज्योतिष के अनुसार अपनी उच्च राशि मेष में स्थित होता है और अत्यन्त शक्तिशाली होता है।

1 अंक से प्रभावित व्यक्ति उच्चाभिलाषी होते हैं, उन्हें अपने ऊपर अंकुश पसन्द नहीं होता और वे जिस कार्य क्षेत्र में भी प्रवेश करें वहां उच्च स्थान प्राप्त करते हैं। वह स्वयं अपनी संस्था के संचालक या अध्यक्ष होना चाहते हैं। वे जिस पद पर भी आसीन हों उसका प्रभुत्व रखना जानते हैं और अपने अधीन कर्मचारियों से आदर प्राप्त करते हैं।

अंक 1 के लोगों को चाहिये कि वे अपनी महत्वपूर्ण योजनायें और कार्य उन दिनों आरम्भ करें या कार्यान्वित करें जिनका प्रदोलन उनके अंक के अनुकूल होता है। अर्थात किसी भी महीने की 1, 10 या 28 तारीख को और विशेषकर, जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है—21 जुलाई से 21 अगस्त तक के और 21 मार्च से 28 अप्रैल के अवधिकाल तक। अंक 1 के व्यक्ति अपनी श्रेणी के अंक वालों से प्रभावित होते हैं और उसके साथ-साथ 2, 4, 7 अंकों वाले व्यक्तियों (जिनका जन्म 4, 7, 11, 13, 16, 20, 25, 29 और 31 तारीखों को हुआ हो) से भी स्नेहपूर्ण और लाभदायक सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं विशेषकर उन व्यक्तियों का उन अवधिकालों में हुआ जो हम पिछले प्रकरण में बता चुके हैं, जैसे अंक 2 और अंक 7 के लिये विशेष बली अवधिकाल है 21 जून से 20 जुलाई तक।

1 अंक का अंक 2, 4, 7 से सौहार्दभाव है। इस कारण 1, 10, 19, 28 तारीखों के अतिरिक्त 2, 11 (1+1=2), 20 (2+0 =2) तथा 29 (2+9=11=1+1=2) तारीख भी इनके लिये अच्छी जायेगी। 4, 13 (1+3=4), 22 (2+2=4) तथा 31 (3+1=4) तथा 7, 16 (1+6=7) और 25 (2+5=7) तारीखें भी इनके लिये शुभ होंगी।

उपर्युक्त साधारण नियम हैं। व्यावहारिक रूप से उनकी परीक्षा के बाद ही कोई व्यक्ति अपने लिए शुभ दिनों को चुन सकता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के वर्षों में यह विचार करना चाहिये कि 1, 2, 4, 7 अंक वाले वर्ष कैसे गये। उदाहरण के लिये यदि कोई व्यक्ति अपने गत जीवन के अनुभव से यह देखे कि 1, 10, 19, 28, 37 वर्ष तो अच्छे गये परन्तु 7, 16, 25, 34, या 43वां वर्ष ठीक नहीं व्यतीत हुआ और

महीने की 7, 16, या 25 वीं तारीख उसके लिये शुभ नहीं प्रमाणित होती तो भविष्य में उसे 7, 16 या 25 वीं तारीख किसी महत्वपूर्ण कार्य के लिये नहीं चुननी चाहिये।

1 अंक वाले व्यक्ति के लिये सप्ताह में रविवार और सोमवार सबसे अधिक सौभाग्यपूर्ण दिन होते हैं, विशेषकर जब उसके अपने अंकों वाली तारीखें उन्हीं दिनों पड़ती हों। प्रथम महत्व की तारीखें हैं 1, 10, 19 या 28 और उसके बाद महत्व की तारीखें होंगी 2, 4, 7 अंक वाली अर्थात 2, 4, 7, 11, 13, 16, 20, 22, 25, 29 या 31।

गहरा या हल्का रंग या पीला अथवा सुनहरा रंग, 1 अंक वाले व्यक्तियों के लिये विशेष रूप से अनुकूल होता है।

1 अंक वाले व्यक्यिों के लिये भाग्यवर्धक रत्न होते हैं टोपाज, अम्बर, पीले रंग का हीरा और पीले रंग के उपरत्न।

यदि सम्भव हो तो वे अम्बर को इस प्रकार से धारण करें कि वह उनकी त्वचा को स्पर्श करता रहे।

## अंक 1 से प्रभावित प्रसिद्ध व्यक्ति

| | | |
|---|---|---|
| सिकन्दर महान | जन्म 1 जुलाई | मूल अंक 1 |
| ड्यूक आफ वेलिंगटन | ,, 28 जून | ,, 1 |
| प्रेसीडेन्ट गारफील्ड (यू० एस० ए०) | ,, 1 मई | ,, 1 |
| टीपू सुलतान | ,, 1 दिसम्बर | ,, 1 |
| ऐनी बेसेन्ट | ,, 1 अक्टूबर | ,, 1 |
| अमरीका के प्रेसीडेन्ट विलसन | ,, 28 दिसम्बर | ,, 1 |
| ,, प्रेसीडेन्ट मुनरो | ,, 28 अप्रैल | ,, 1 |
| ,, प्रेसीडेन्ट हूवर | ,, 10 अगस्त | ,, 1 |
| बिसमार्क | ,, 1 अप्रैल | ,, 1 |
| कीरो | ,, 1 नवम्बर | ,, 1 |
| अमरीका के प्रेसीडेन्ट ऐडम्स | ,, 19 अक्टूबर | ,, 1 |
| बैंनिटो मुसोलिनी | ,, 29 जुलाई | ,, 1 |
| शिवाजी | ,, 19 जुलाई | ,, 1 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| वीर सावरकर | ,, 28 मई | ,, | 1 |
| इन्दिरा गांधी | ,, 19 नवम्बर | ,, | 1 |
| मिरजा गालिब (कवि) | ,, 19 दिसम्बर | ,, | 1 |
| गोबिन्द वल्लभ पन्त | ,, 10 सितम्बर | ,, | 1 |
| सुनील गवास्कर (क्रीकेट के खिलाड़ी) | ,, 10 जुलाई | ,, | 1 |

## अंक 2

अंक 2 का अधिष्ठाता ग्रह चन्द्रमा है। उसमें सूर्य के स्त्रीजनक गुण वर्तमान होते हैं और इस कारण यद्यपि अंक 1 और अंक 2 से प्रभावित व्यक्तियों के स्वभाव एक दूसरे से भिन्न होते हैं, तथापि इन दो अंकों के प्रदोलनों में सामंजस्य होता है और उनमें परस्पर अच्छी निभती है।

अंक 2 से प्रभावित व्यक्ति स्वभाव से नम्र होते हैं। वे कल्पनाशील, कलाप्रिय और भावुक होते हैं और उनमें रोमानी स्वभाव पर्याप्त मात्रा में होता है। अंक 1 से प्रभावित व्यक्तियों के समान वे नये आविष्कार करने वाले होते हैं परन्तु अपनी कल्पनाओं, विचारों या योजनाओं को कार्यान्वित करने में उतने सामर्थ्यवान नहीं होते। उनके गुण अधिकतम मौलिक स्तर पर नहीं वल्कि मानसिक स्तर पर होते हैं। शारीरिक रूप में भी वे अंक 1 के व्यक्तियों से कम पुष्ट होते हैं।

अंक 2 से प्रभावित व्यक्तियों को इस वात के लिये प्रयत्नशील होना उचित है कि वे अपने मस्तिष्क की वेचैनी और उलझन को कम करके, पक्की योजना वनाकर उसको सपरिश्रम कार्यान्वित करने का प्रयत्न करें। धैर्य और अध्यवसाय की कमी के कारण जिस योजना को वनाते हैं उसे पूरा नहीं कर पाते अपने स्वभाव की इस कमजोरी के कारण उनको सफलता प्राप्त करने में वाधाओं का सामना करना पड़ता है। उनमें आत्मविश्वास की कमी होती है और थोड़ी सी निराशा से हतोत्साह हो जाते हैं।

अंक 2 के व्यक्ति वे होते हैं जिनका जन्म किसी भी महीने की 2, 11, 20 या 29 तारीख को होता है परन्तु उनके गुण और स्वभाव अधिक स्पष्टता से देखे जा सकते हैं। यदि उनका जन्म 20 जून और 29 जुलाई के बीच होता है। यह अवधिकाल चन्द्रमा से प्रभावित होता है। इस अवधिकाल को कीरो ने 'हाउस आफ मून' कहा है।

अंक 2 और अंक 1 के व्यक्तियों के प्रदोलनों (Vibration) में सामंजस्यता होती है।

वे व्यक्ति जिनका जन्म अंक 2 वालों में अंक 9 वाले व्यक्तियों के साथ (अर्थात जिनका जन्म 7, 16 या 25 तारीख को हुआ है) प्रदोलन में सामंजस्यता कम मात्रा में होती है।

अंक 2 वाले व्यक्तियों को अपनी मुख्य योजनायें और विचार उन दिनों कार्यान्वित करने चाहिये जिनके अंक 2 के प्रदोलन से सामंजस्यता रखते हों जैसाकि 2, 11, 20 या 29 तारीख को और विशेषकर 20 जून से 29 जुलाई तक के अवधिकाल में।

2 अंक वालों के लिये रविवार, सोमवार और शुक्रवार शुभ होते हैं विशेषकर जब ये दिन 2, 11, 20 या 29 या 1, 4, 7,10, 13, 16, 19, 25, 28 या 31 तारीख को पड़ें।

इस अंक वालों के लिये सफेद, गहरे या हलके रंग विशेष शुभ हैं। काले, लाल या गहरे रंग इनके लिये अनुकुल नहीं है।

## अंक 2 से प्रभावित प्रसिद्ध व्यक्ति

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मेरी एन्ट्योनेट (फ्रांस की महारानी) | जन्म | 20 नवम्बर | मूल अंक | 2 |
| ग्लैड स्टोन | ,, | 29 दिसम्बर | ,, | 2 |
| नेपोलियन III | ,, | 29 अप्रैल | ,, | 2 |
| एडीसन (आविष्कारक) | ,, | 11 फरवरी | ,, | 2 |
| लार्ड कर्जन | ,, | 11 जनवरी | ,, | 2 |
| टामस हार्डी (उपन्यासकार) | ,, | 2 जून | ,, | 2 |
| अमरीका के प्रेसीडेन्ट हार्डिंग | ,, | 2 नवम्बर | ,, | 2 |
| पोप XIII | ,, | 2 मार्च | ,, | 2 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| पोप X | ,, 2 जून | ,, | 2 |
| महात्मा गांधी | ,, 2 अक्टूबर | ,, | 2 |
| भूतपूर्व प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री | ,, 2 अक्टूबर | ,, | 2 |
| हिटलर | ,, 20 अप्रैल | ,, | 2 |
| अमिताभ बच्चन (अभिनेता) | ,, 11 अक्टूबर | ,, | 2 |

## 5

## अंक 3

अंक 3 के अधिष्ठाता ग्रह देवगुरु वृहस्पति हैं जो कि ज्योतिष और अंक विज्ञान दोनों में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। यह अंक उस शक्ति धारा का आरम्भ है जो 3 से 9 अंकों तक प्रवाहित होती है। 3, 6, 9 और जितने भी अंक परस्पर इन अंकों के योग से बनते हैं जैसे 6, 12, 18 या 12, 24, 36 इनको यदि एक पंक्ति में दायें बायें, ऊपर नीचे आड़े तिरछे चाहे जिस तरह भी रख दिया जाये तो उनका योगफल की जो संख्या होगी, उसका मूल अंक 9 होगा।

3 जन्मांक वाले वे व्यक्ति होते हैं जिनका जन्म किसी भी महीने की 3, 12, 21 या 30 तारीख को हुआ हो। अंक में और भी अधिक सार्थकता या यथार्थता होती है यदि इस अंक वाले व्यक्तियों का जन्म अंक तीन के अवधिकाल में अर्थात् 19 फरवरी से 20—27 मार्च के या 21 नवम्बर से 20—27 दिसम्बर के बीच में हुआ हो।

3 अंक वाले व्यक्ति 1 अंक वाले व्यक्तियों के समान निश्चित रूप से महत्वाकांक्षी होते हैं और किसी अधीनस्थ पद में वे सन्तुष्ट नहीं रहते। उनका ध्येय संसार में ऊंचा उठने का होता है जिससे वे दूसरों के ऊपर प्रभुत्व रख सकें। वे अनुशासन प्रिय होते हैं—उसमें कठोर भी होते हैं और जो निर्देश देते हैं उसका पालन करवा कर रहते हैं।

व्यापार, सरकारी नौकरी या किसी भी क्षेत्र में वे सर्वोच्च स्थान पर पहुंच जाते हैं। स्थल सेना, जल सेना या सरकारी संस्थानों में वे प्रायः

उच्च पदों में आसीन होते हैं और अपने दायित्व को पूर्ण रूप से निभाने में सफल होते हैं।

उनकी कमजोरी यह होती है कि उनमें तानाशाह बन जाने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है और अपने विचारों को कानून बनाना चाहते हैं। इसके कारण उनके बहुत शत्रु बन जाते हैं।

अंक 3 से प्रभावित व्यक्ति अत्यन्त आत्माभिमानी होते हैं। वे किसी का अहसान लेना पसन्द नहीं करते। वे स्वतन्त्र स्वभाव के होते हैं और अपने ऊपर किसी प्रकार का नियन्त्रण उन्हें सहन नहीं होता।

अंक 3 के व्यक्तियों को अपनी योजनाओं और नवीन कार्यों को उन दिनों में कार्यान्वित करना चाहिये जिनका प्रदोलन उनके अंक से सामञ्जस्य रखता हो जैसे किसी महीने की 3, 13, 21 या 30 तारीख को और विशेयकर इन्हीं तारीखों में जब वे अंक 3 के अवधिकाल में अर्थात 11 फरवरी से 20-27 मार्च और 21 नवम्बर से 20-27 दिसम्बर के बीच में पड़ती हों।

3 अंक के व्यक्ति के लिये अधिक शुभ दिन बृहस्पतिवार, शुक्रवार और मंगलवार होते हैं जिसमें बृहस्पति को प्रमुख स्थान प्राप्त है। ये दिन विशेषरूप से शुभ होते हैं यदि उस दिन 3, 12, 21 या 30 तारीख हो। 6, 9, 15, 18, 24 और 27 तारीखें भी इस सम्बन्ध में शुभ होती हैं।

3 अंक वालों में परस्पर आकर्षण होता है उनका उनके प्रति भी आकर्षण होता है जो 3 और 9 अंकों से प्रभावित होते हैं अर्थात वे जिनका जन्म निम्नलिखित तारीखों में होता है—

3, 12, 21, 30
6, 15, 24
9, 18, 27

इसका एक बहुत सुन्दर उदाहरण प्रसिद्ध विद्वान् ज्योतिषी पण्डित गोपेशकुमार ओझा ने अपनी पुस्तक 'अंक विद्या' में दिया है। उन्होंने लिखा है कि प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट की जन्म तारीख 30 जनवरी थी। चर्चिल की 30 नवम्बर और स्तालिन की 21 दिसम्बर। इसी कारण सम्भवत:

दूसरे महायुद्ध के समय भिन्न-भिन्न राजनीति के पोषक होने पर भी '3' मूल अंक वाले होने के कारण अपने-अपने देश से आकर योरोप में एक स्थान पर गुप्त मंत्रणा के लिये एकत्र हो सके और शत्रु को अपनी सम्मिलित योजना के कारण परास्त कर सके।

3 अंक वाले व्यक्तियों को कासनी (mauve) या जामुनी रंग शुभ है। नीला, लाल और गुलाबी रंग भी उनके लिये अनुकूल है।

उनका भाग्यवर्धक रत्न है एमीथिस्ट (जमुनिया)। इस रत्न को उन्हें सदा इस प्रकार धारण करना चाहिये जिससे वह उनकी त्वचा को स्पर्श करता रहे।

## अंक 3 से प्रभावित प्रसिद्ध व्यक्ति

| | | |
|---|---|---|
| किंग जार्ज पंचम | जन्म 3 जून | मूल अंक 3 |
| लार्ड रसेल | जन्म 12 अगस्त | ,, ,, 3 |
| अमरीका के प्रेसीडेन्ट | | |
| अब्राहम लिंकन | ,, 12 फरवरी | ,, ,, 3 |
| विन्सटन चर्चिल | ,, 30 नवम्बर | ,, ,, 3 |
| रुडयार्ड किपलिंग | ,, 30 दिसम्बर | ,, ,, 3 |
| हेनरीफोर्ड | ,, 30 जुलाई | ,, ,, 3 |
| डारविन | ,, 12 जुलाई | ,, ,, 3 |
| एच० जी० वैल्स | ,, 21 सितम्बर | ,, ,, 3 |
| मार्क ट्वेन | ,, 30 नवम्बर | ,, ,, 3 |
| रेमजे मैकडान्ल्ड (ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधान मंत्री) | ,, 12 अक्टूबर | ,, ,, 3 |
| अमरीका के प्रेसीडेन्ट | | |
| रुजवेल्ट | ,, 30 जनवरी | ,, ,, 3 |
| जोसेफ स्तालिन | ,, 21 दिसम्बर | ,, ,, 3 |
| भारत के सर्वप्रथम राष्ट्रपति | | |
| राजेन्द्रप्रसाद | ,, 3 दिसम्बर | ,, ,, 3 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| स्वामी विवेकानन्द | ,, | 12 जनवरी | ,, ,, | 3 |
| जगदीशचंद्र बोस(वैज्ञानिक) | ,, | 30 नवम्बर | ,, ,, | 4 |
| नैपाल के महाराजाधिराज त्रिभुवन | ,, | 30 जून | ,, ,, | 3 |
| सरदार वल्लभभाई पटेल | ,, | 30 अक्टूबर | ,, ,, | 3 |

## 6
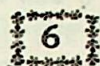
## अंक 4

अंक 4 का अधिष्ठाता ग्रह यूरेनस या हर्षल है। पाश्चात्य ज्योतिषियों की यह मान्यता है कि यूरेनस सूर्य और अंक 1 से सम्बन्धित है।

अंक 4 से प्रभावित व्यक्तियों का अपना निराला ही स्वभाव होता है। वे प्रत्येक बात को उल्टे या विपरीत दृष्टिकोण से देखते हैं। वे प्रायः संघर्ष करते हैं। जो अन्य लोगों की राय या विचारधारा हो, 4 अंक वाला व्यक्ति उसके विरुद्ध विचार प्रदर्शन करेगा। इसके कारण उसके बहुत से विरोधी और शत्रु हो जाते हैं। वे निर्धारित नियमों का उलंघन करते हैं और यदि उनका बस चले तो सब कुछ उलट पलट देते हैं। वे प्रायः वैधानिक सत्ता का विरोध करते हैं और अपने निजी तथा सामाजिक जीवन में अपने बनाये नियमों का पालन करते हैं। सामाजिक सुधारों में उनकी दिलचस्पी होती है। वे अपने विचारों तथा दृष्टिकोण में अत्यन्त निश्चयत्माक और अपरम्परावादी होते हैं।

4 अंक वाले वे व्यक्ति होते हैं जिनका जन्म किसी भी महीने की 4, 13, 22 या 31 तारीख में हुआ हो। उनका व्यक्तित्व और भी अधिक विकसित दिखाई देगा यदि उनका जन्म सूर्य और चन्द्रमा के अवधिकाल में हुआ हो अर्थात् 21 जून से 20-27 जुलाई के बीच में (चन्द्रमा का अवधि काल) और 21 जुलाई से 31 अगस्त के बीच में हुआ हो।

4 अंक वाले व्यक्ति दूसरों से सरलता से मैत्री नहीं स्थापित करते। वे उन व्यक्तियों के प्रति अधिक आकर्षित होते है जिनका जन्म 1, 2, 7 और 8 के अंतर्गत हुआ हो।

4 अंक वाले व्यक्ति सांसारिक मामलों में कम सफल होते हैं और धन एकत्रित करने में उन्हें विशेष दिलचस्पी नहीं होती। यदि वे धन एकत्रित भी कर लें या किसी से उन्हें धन प्राप्त भी हो जाये तो जिस तरह वे उसका उपयोग करते हैं उससे लोग चकित हो जाते हैं।

4 अंक वाले व्यक्तियों को चाहिये कि वे अपने महत्त्वपूर्ण कार्य किसी भी महीने की 4, 13, 22 और 31 तारीख में करें विशेषकर जब यह तारीखें 21 जून से 31 अगस्त के अवधिकाल में पड़ें।

4 अंक वाले व्यक्तियों के लिए शुभ फलदायक दिन शनिवार, रविवार और सोमवार होते हैं। यदि ये दिन 4, 13, 22 या 31 तारीखों में पड़ें तो और भी अधिक शुभ होंगे। यदि ये दिन 7, 10, 11, 16, 19, 20, 25, 28 या 29 तारीखों में पड़ें तो भी काफी शुभ होंगे।

4 अंक वाले व्यक्तियों में ये कमजोरियां होती हैं कि वे अत्यन्त आवेशात्मक होते हैं और बहुत शीघ्र ही दूसरों की बात का बुरा मान लेते हैं। वे अपने को प्रायः इससे अलग पाते हैं और यदि उन्हें अपने कार्य में सफलता नहीं प्राप्त होती तो वे बहुत निराश हो जाते हैं।

'धूप छांह' का रंग, नीला तथा भूरा रंग इन्हें विशेष अनुकूल होगा।

इनके लिये भाग्यवर्धक रत्न गहरा या हल्के रंग का नीलम होता है जिसको उन्हें इस प्रकार धारण करना चाहिये कि वह उनकी त्वचा को स्पर्श करता रहे।

## अंक 4 से प्रभावित प्रसिद्ध व्यक्ति

| | | |
|---|---|---|
| जार्ज वाशिगंठन | जन्म 22 फरवरी | मूल अंक 4 |
| लार्ड बायरन | जन्म 22 जनवरी | ,, 4 |
| जार्ज ईलियट | ,, 22 नवम्बर | ,, 4 |
| सर आर्थर कोननडायल | ,, 22 मई | ,, 4 |
| जैनरल फ्रैन्को | ,, 4 दिसम्बर | ,, 4 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| सर आईजेक पिटमैन | ,, 4 जनवरी | ,, | 4 |
| सरोजनी नायडू | ,, 13 जुलाई | ,, | 4 |

## 7

## अंक 5

अंक 5 का अधिष्ठाता ग्रह बुध है। अंक 5 वाले वे व्यक्ति होते हैं जिनका जन्म किसी भी महीने की 5, 14 या 23 तारीख में हुआ हो। यदि 5 अंक के अवधिकाल में अर्थात् 21 मई से जून 20-27 या 21 अगस्त से सितम्बर 20-27 के बीच में हुआ हो तो उनके इस अंक में गुण विशेष रूप से दृष्टि गोचर होंगे।

5 अंक के व्यक्ति किसी से भी शीघ्र मैत्री भाव स्थापित कर लेते हैं। इस कारण किसी भी अंक से प्रभावित व्यक्ति इनका मित्र हो सकता है। परन्तु यदि किसी व्यक्ति की जन्म तारीख का मूल अंक 5 हो अर्थात् उनका स्वयं का अंक हो तो उसके साथ उनका घनिष्ठ मैत्री सम्बन्ध हो जाता है।

5 अंक से प्रभावित व्यक्ति आवेशात्मक होते हैं और अपने सब कामों में जल्दबाजी दिखाते हैं। वह सट्टे जैसे शीघ्र धन प्राप्ति वाले कार्यों के प्रति विशेष रूप से आकृष्ट होते हैं। वह नये आविष्कारों से धन कमाते हैं और अपने व्यापारादि में रिस्क लेने (खतरा उठाने) में संकोच नहीं करते। उनका स्वभाव ऐसा होता है कि किसी चिन्ता या शोक का अधिक दिन प्रभाव नहीं होता। यदि वे स्वभाव या आचरण में अच्छे होते हैं तो वे वैसे ही बने रहते हैं यदि उनका स्वभाव और आचरण खराब है तो कोई उसे सुधार नहीं सकता।

5 अंक वाले व्यक्तियों को अपनी योजनायें और महत्वपूर्ण कार्य 5, 14 या 23 तारीखों में करने चाहिये। उनके लिये अत्यन्त शुभ होगा यदि ये तारीखें अंक 5 की अवधि काल में अर्थात 21 मई से 20-27 जून के बीच में या 21 अगस्त से 20-27 सितम्बर के बीच में पड़ें।

उनके लिये सप्ताह के सौभाग्य पूर्ण दिन बुधवार और शुक्रवार होते हैं। वे विशेष शुभ फलदायक होते हैं यदि उनके अपने अंक की तारीखें भी उन्हीं दिनों पड़ें।

5 अंक वाले व्यक्तियों की सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि वे अपनी स्नायविक शक्ति को इतनी अधिक व्यय कर देते हैं जिसके कारण उन्हें प्राय: स्नायुमंडल की कमजोरी (nervous breakdown) का शिकार बनना पड़ता है। और जब उनके ऊपर मानसिक दबाव अधिक पड़ता है तो वे चिड़चिड़े और क्रुद्ध स्वभाव के हो जाते हैं।

हलके सलेटी, सफेद और चमकीले रंग 5 अंक वालों पर शुभ प्रभाव डालते हैं। गहरे रंग के वस्त्र उनको बहुत कम धारण करने चाहिये।

उनके लिये भाग्यवर्धक रत्न है हीरा। प्लेटिनम और चांदी भी उनके लिये शुभ है। प्लेटिनम में जड़ा हीरा उनको इस प्रकार धारण करना चाहिये कि वह उनकी त्वचा को स्पर्श करता रहे।

## अंक 5 से प्रभावित प्रसिद्ध व्यक्ति

| | | |
|---|---|---|
| जार्ज VI | जन्म 14, दिसम्बर | मूल अंक 5 |
| ड्यूक आफ विन्डसर | „ 23 जून | „ 5 |
| शेक्सपियर | „ 23 अप्रैल | „ 5 |
| जोसफीन (फ्रांस की महारानी) | „ 23 जून | „ 5 |
| कार्ल मार्क्स | „ 5 मई | „ 5 |
| एलबर्ट आइन्सटीन | „ 14 मार्च | „ 5 |
| अमरीका के प्रेसीडेन्ट आईजनहावर | „ 14 अक्टूबर | „ 5 |
| स्वामी रामकृष्ण परमहंस | „ 5 फरवरी | „ 5 |
| पं० जवाहरलाल नेहरू | „ 14 नवम्बर | „ 5 |
| संजय गांधी | „ 14 दिसम्बर | „ 5 |
| चित्तरंजनदास | „ 5 नवम्बर | „ 5 |

8

## अंक 6

अंक 6 का अधिष्ठाता ग्रह शुक्र है। 6 जन्मांक वाले वे व्यक्ति होते हैं जिनका जन्म किसी भी महीने की 6, 15, या 24, तारीख को हुआ हो। ये लोग इस अंक से विशेष रूप से प्रभावित होते हैं यदि उनका जन्म 6 अंक के अवधिकाल में अर्थात 20 अप्रैल से 20-27 मई तथा 21 सितम्बर से 20-27 अक्टूबर के बीच में हुआ हो।

6 अंक वालों में एक विचित्र प्रकार की आकर्षण शक्ति होती है जिससे लोग उनके प्रति आकर्षित हुये बिना नहीं रह सकते। वे लोगों के प्रिय पात्र होते हैं और उनके अधीनस्थ लोग उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा रखते हैं।

वे अपनी योजनाओं को पूर्ण करने में दृढ़ निश्चित होते हैं और इस दृष्टि से उनको अत्यन्त हठी माना जा सकता है। जब वे अपना पथ निश्चित कर लेते हैं तो किसी को रास्ते में नहीं आने देते। जब वे किसी से प्रेम करते हैं तो उसके गुलाम बन जाते हैं।

यद्यपि अंक 6 के व्यक्ति शुक्र से प्रभावित माने जाते हैं उनका प्रेम इन्द्रियजनक नहीं वरन मां की ममता के समान होता है। वे सौन्दर्योपासक होते हैं। आतिथ्य आदि में विशेष सत्कार करते हैं तथा ललित कलाओं के प्रेमी होते हैं और उन्हें प्रोत्साहन देते हैं। कलापूर्ण मकान, भड़कीले रंग, चित्रकला, मूर्तिकला और संगीत उन्हें अत्यन्त प्रिय और रुचिकर लगते हैं। ईर्ष्या और झगड़ा वे सहन नहीं कर सकते।

जब वे क्रुद्ध हो जाते हैं तो वे किसी विपरीत शक्ति से भयभीत नहीं होते और अपना कर्त्तव्य निभाने के लिये वे लड़ने-मरने को तैयार हो जाते हैं।

मित्र बनाने की उनमें विशेष क्षमता होती है। दूसरों से मैत्री भाव बनाने का स्वभाव 6 अंक वालों में पाया जाता है, उतना 5 अंक को छोड़ कर अन्य किसी अंक से प्रभावित व्यक्तियों में नहीं होता। उनका विशेष

आकर्षण उन व्यक्तियों के प्रति होता है जिनके मूल अंक 3, 6 या 9 होते हैं।

उनके लिये सप्ताह के सबसे अधिक महत्वपूर्ण दिन मंगलवार, बृहस्पतिवार और शुक्रवार होते हैं विशेषकर जब ये दिन 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 27 या 30 तारीख में पड़ें।

अंक 6 वाले व्यक्तियों को अपनी योजनायें और नवीन कार्य उन तारीखों को करना चाहिये जो उनके अपने अंक के अंतर्गत आती हैं जैसे किसी भी महीने की 6, 15 और 24 तारीखें विशेषकर जब ये तारीखें अंक 6 के अवधिकाल अर्थात 20 अप्रैल और 20-27 मई या 21 सितम्बर से 20-27 अक्टूबर के बीच में पड़ें।

6 अंक वालों के लिये अनुकूल रंग है हल्का या गहरा नीला, या गुलाबी और लाल रंग। उनके लिये काले रंग की वस्तु या वस्तुयें शुभ नहीं होती।

फीरोजा 6 अंक वालों के लिये भाग्यवर्धक रत्न है और इस अंक के व्यक्तियों को चाहिये कि इस रत्न को वे इस प्रकार धारण करें कि वह उनकी त्वचा को स्पर्श करता रहे। पन्ना भी उनके लिये शुभफलदायक रत्न है।

## अंक 6 से प्रभावित प्रसिद्ध व्यक्ति

| | | |
|---|---|---|
| महारानी विक्टोरिया | जन्म 24 मई | मूल अंक 6 |
| नैपोलियन I | ,, 15 अगस्त | ,, 6 |
| जार्ज III | ,, 24 मई | ,, 6 |
| जोन आफ आर्क | ,, 6 जनवरी | ,, 6 |
| सर वाल्टर स्काट | ,, 6 दिसम्बर | ,, 6 |
| लार्ड टेनीसन (कवि) | ,, 6 अगस्त | ,, 6 |
| वारेन हेस्टिंग्स | ,, 6 दिसम्बर | ,, 6 |
| मैक्समूलर | ,, 6 दिसम्बर | ,, 6 |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| श्री अरविन्द | ,, | 15 अगस्त | ,, | 6 |
| अमरीका के प्रेसीडेन्ट रीगन | ,, | 6 दिसम्बर | ,, | 6 |
| निजाम हैदराबाद | ,, | 6 अप्रैल | ,, | 6 |

## अंक 7

अंक 7 का अधिष्ठाता ग्रह नेपच्यून माना जाता है। इस अंक से वे व्यक्ति प्रभावित होते हैं जिनका जन्म किसी भी महीने की 7, 16 या 25 तारीखों में हुआ हो यदि उनका जन्म 21 जून से 20-27 जुलाई (चन्द्रमा का अवधिकाल) के बीच में हुआ हो तो उन व्यक्तियों पर इस अंक का विशेश प्रभाव पड़ता है।

चन्द्रमा के समान नैपचून भी जल प्रधान ग्रह है। चन्द्रमा का अंक 2 है इसीलिये 7 अंक वाले व्यक्तियों के लिये दूसरे महत्व का अंक 2 माना जाता है। इसीलिये इन दो अंकों वाले व्यक्तियों में परस्पर एक दूसरे के प्रति आकर्षण और सहानुभूति होती है। इसी कारण 7 मूल अंक वाले व्यक्तियों की 7, 16, तथा 25 तारीख को जन्म लेने वाले व्यक्तियों के अतिरिक्त 2, 11, 20 या 29 तारीख को जन्म लेने वाले व्यक्तियों के साथ मित्रता या सौहार्द्र भाव होता है। यह प्रभाव विशेष तब होता है जब उनका जन्म 21 जून से 27 जुलाई के बीच में हुआ हो।

7 अंक से प्रभावित व्यक्ति अत्यन्त स्वतंत्र स्वभाव के होते हैं। उनमें मौलिकता होती है और व्यक्तित्व भी उनका अन्य अंकों के लोगों से पृथक होता है।

वे बेचैन स्वभाव के होते हैं और परिवर्तन और यात्रा उन्हें प्रिय है। यदि उनके पास प्रचुर साधन हों तो वे विदेशों की यात्रा तथा दूर-दूर के देशों के विषय में जानकारी प्राप्त करने में पूर्ण दिलचस्पी दिखाते हैं।

यात्रा सम्बन्धी पुस्तकों को पढ़ने का उन्हें बहुत शौक होता है और संसार में क्या घटित हो रहा है उसकी वे जानकारी रखते हैं।

7 अंक वाले व्यक्ति प्राय: बहुत सफल लेखक, चित्रकार और कवि बनते हैं हर जिस कार्य क्षेत्र में भी वे रुचि लें उनमें दर्शन (philosophy) का दृष्टिकोण अवश्य आ जाता है।

सांसारिक बातों में विशेष रुचि नहीं लेते। वे अपने मौलिक विचार या व्यवसायिक प्रणालियों से प्राय: धनवान बन जाते हैं परन्तु वे उसे दान लेने वाली संस्थाओं को या अन्य प्रकार से दान देने में समाप्त कर देते हैं—परन्तु 7 अंक वाली स्त्रियों के विवाह धनी घरानों में होते हैं। 7 अंक वाले व्यक्तियों के धार्मिक विचार भी असाधारण होते हैं। धार्मिक मामलों में वे रुढ़िवादी नहीं होते। प्रचलित परम्परा से भिन्न अपना धार्मिक मत रखते हैं और उसका प्रचार करते हैं। इन व्यक्तियों में अतीन्द्रिय ज्ञान (दूसरों के मन की बात को समझ जाना) विशेष मात्रा में होता है तथा इन्हें स्वप्न भी विचित्र से आते हैं। गुप्त विद्याओं के प्रति उनमें विशेष आकर्षण होता है। उनमें एक ऐसी विचित्र आकर्षण शक्ति होती है जिससे दूसरों पर अत्यन्त प्रभाव पड़ता है।

7 अंक वालों को अपनी विशेष योजनायें और कार्य किसी भी महीने की 7, 16 या 25 तारीख को कार्यान्वित करने चाहिये। विशेषकर जब ये तारीख 7 अंक के अवधिकाल में अर्थात 21 जून से 20-27 जुलाई के बीच में पड़ें।

7 अक वाले व्यक्तियों के लिए 2 अंक के व्यक्तियों के समान रवि-वार और सोमवार को शुभ दिन होते हैं विशेषकर जब वे 1, 2, 4, 10, 11, 13, 19, 20, 22, 28, 29 या 31 तारीखों को पड़ें।

7 अंक वालों के लिये हरा, हल्का पीला और सफेद रंग शुभ होते हैं।

उनके लिये भाग्यवर्धक रत्न हैं, मोती, चन्द्रकान्तमणि और लहसुनिया (Cat's eye) यदि सम्भव हो तो वे चन्द्रकान्त मणि (Moon Stone) को इस प्रकार धारण करें कि वह सदा उनकी त्वचा को स्पर्श करता रहे।

## अंक 7 से प्रभावित प्रसिद्ध व्यक्ति

| | | |
|---|---|---|
| महारानी ऐलिजाबेथ | जन्म 7 सितम्बर | मूल अंक 7 |
| चार्ल्स डिकेन्स (लेखक) | ,, 7 फरवरी | ,, 7 |
| आस्कर वाइल्ड (लेखक) | ,, 16 अक्टूबर | ,, 7 |
| सर आईजक न्यूटन | ,, 25 दिसम्बर | ,, 7 |
| विलियम वर्ड्सवर्थ (कवि) | ,, 7 अप्रैल | ,, 7 |
| रवीन्द्रनाथ टैगोर | ,, 7 मई | ,, 7 |
| पावलो पिकासो (चित्रकार) | ,, 25 अक्टूबर | ,, 7 |
| मोहम्मद अली जिन्ना | ,, 25 दिसम्बर | ,, 7 |
| मदन मोहन मालवीय | ,, 25 दिसम्बर | ,, 7 |

## अंक 8

अंक 8 का अधिष्ठाता ग्रह शनि है। इस अंक का प्रभाव उन व्यक्तियों पर पड़ता है जिनका जन्म किसी भी महीने की 8, 17 या 26 तारीख को होता है। इनका प्रभाव और भी अधिक होता है यदि ये तारीख शनि के प्रकरात्मक अवधिकाल 21 दिसम्बर और 26 जनवरी या नकारात्मक अवधिकाल 26 जनवरी से फरवरी 19-26, के बीच में पड़ें।

8 अंक के व्यक्ति अपने जीवन काल में दूसरों के द्वारा भ्रान्तिपूर्ण भावनाओं और गलतफहमियों के शिकार होते हैं।

शायद इसी कारण वे अपने मन में अकेलापन अनुभव करते हैं।

इस अंक वाले स्वभाव से हर बात की गहराई में जाने वाले और भाव प्रवण (intense) होते हैं। उनका व्यक्तित्व बहुत शक्तिशाली होता है और अपने जीवन काल में वे कोई महत्वपूर्ण भूमिका अवश्य अदा करते हैं जिससे दूसरों के भाग्य पर प्रभाव पड़ता है।

वे कट्टर धार्मिक पन्थी होते हैं। और अपने मत और विचारों में

विरोध की परवाह न करते हुये सीमा को लांघ जाते हैं जिसके कारण उनके अनेकों शत्रु बन जाते हैं।

सताये हुये लोगों के लिये उनके हृदय में गहरी सहानुभूति के विचार होते हैं परन्तु वे अपनी भावनाओं का प्रदर्शन नहीं करते। वे अपने वास्तविक विचारों को प्रकट नहीं करते चाहे लोग उनके प्रति विपरीत ही धारणा क्यों न बनायें।

8 अंक के व्यक्ति या तो अपूर्व सफलता प्राप्त करते हैं या अपूर्व असफलता। यदि वे महत्वकांक्षी होते हैं तो वे जन जीवन या सरकारी संस्थाओं में दायित्व के पदों पर दृष्टि रखते हैं और प्रायः वे परिश्रम और त्याग के बल पर उच्च स्थानों पर पदासीन हो जाते हैं।

सांसारिक या मौलिक दृष्टि से 8 अंक सौभाग्य पूर्ण अंक नहीं माना जाता। इस अंक वाले व्यक्तियों को जीवन में कठिनाइयों और संघर्षों, का सामना करना पड़ता है। उन्हें बड़े-बड़े दुःख और हानियां उठानी पड़ती हैं और अपमानित भी होते हैं।

8 अंक वाले व्यक्तियों को चाहिये वे अपनी योजनायें और महत्व पूर्ण कार्य किसी भी महीने की 8, 17 या 26 तारीखों को कार्यान्वित करें विशेषकर जब वे तारीखें 8 अंक के अवधिकाल में अर्थात 21 दिसम्बर से 20-27 जनवरी, और उस तारीख से 19-27 फरवरी तक के बीच में पड़ें। यदि यह तारीखें शनिवार, रविवार या सोमवार (जो उनके लिये शुभ दिन हैं) को पड़े तो शुभ फलदायक है। 8 अंक के व्यक्तियों के लिये 4, 13, 22 और 31 तारीखें भी शुभ मानी जाती हैं।

क्योंकि 8 अंक शनि का अंक है, इसलिये शनिवार इस अंक से प्रभावित व्यक्तियों के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण दिन माना जाता है। परन्तु 8 अंक 4...4 होता है इसलिये इस अंक वाले 4 अंक का प्रभाव भी माना जाता है। यही कारण है कि 8 अंक वालों के लिये रविवार और सोमवार भी शुभ माने गये हैं।

8 अंक वालों के लिये गहरे स्लेटी रंग, काले और नीले गहरे रंग अनुकूल माने गये हैं।

एमिशिस्ट, गहरे रंग का नीलम, काले रंग का मोती या हीरा, 8 अंक वालों के लिये सौभाग्य वर्धक रत्न हैं और इनमें से कोई रत्न उनको इस प्रकार से धारण करना चाहिये कि वह त्वचा को स्पर्श करता रहे।

अंक 8 एक अत्यन्त रहस्यगर्भित अंक है जिसको पूर्ण रूप से समझना कठिन है। वे दो प्रकार के संसारों का प्रतिनिधित्व करता है, अध्यात्मिक और भौतिक। यह दो वृत्तों के समान है जो एक दूसरे को स्पर्श करते हों।

यह दो वराबर अंकों से वना है—4 और 4।

पुरातन काल से इस अंक को भवितिव्यता या होनी। (अर्थात् जो होना है होकर रहेगा) का प्रतीक माना गया है। इस अंक का अधिष्ठाता ग्रह शनि है जो ज्योतिष के भवितिव्यता या होनी का ग्रह माना जाता है।

अंक 8 का एक पहलू उथलपुथल, क्रान्ति, अराजकता, दुराग्रह और सनकी पन दर्शाता है। दूसरा पहलू दार्शनिकता का, निगूढ़ विद्याओं के प्रति झुकाव का, धर्म के प्रतिश्रद्धा का, किसी भी उद्देश्य की पूर्ति के जोश के साथ सलंग्न हो जाने का और भवितिव्यता या होनी के प्रति विश्वास होने का प्रतीक है।

8 अंक से प्रभावित सब ही व्यक्ति अपने आपको दूसरों से भिन्न समझते हैं। अपने मन में वे अकेलापन अनुभव करते हैं। वे गलतफहमियों का शिकार होते हैं। और अपने जीवनकाल में वे जो कुछ करते हैं उसका पुरस्कार उन्हें प्राप्त नहीं होता है। उनकी मृत्यु के वाद उनका गुणगान होता है, यदि वे लेखक हों तो उनकी रचनाओं को मान्यता दी जाती है और उनकी प्रशंसा के नारे लगाये जाते हैं।

यदि किसी व्यक्ति पर 8 अंक का पूर्ण अधिपत्य है और उसके जीवन में घटित होने वाले घटनाक्रम में वार-वार 8 अंक दिखाई दे या 8 अंक के वजाय अंक 4 वार-वार दृष्टिगोचर हो तो समझ लेना चाहिये कि वे घटनायें दुःखद होंगी और भवितिव्यता या होनी ने उसके जीवन को पूर्णतया प्रभावित कर रखा है।

इस सम्बन्ध में कीरो ने क्रिपेन नाम के एक व्यक्ति का उदाहरण दिया जिसके जीवन पर 8 और 4 अंकों ने सम्मिलित होकर ऐसा दुःप्रभाव डाला कि अन्त में उसको फांसी के तख्ते पर झूलना पड़ा।

क्रिपेन का जन्म हुआ था 26 जनवरी 1862 को—

जन्मांक 8, वर्षाङ्क 8 (1+8+6+2=17—8)

जिस दिन रात के भोजन के बाद उसकी पत्नी जीवित नहीं दिखाई दी वह 31 जनवरी की तारीख थी—अंक 4

जब उस पर हत्या का आरोप लगा और पुलिस ने उसका बयान लिया उस दिन तारीख थी 8 जुलाई—अंक 8।

जब उसकी पत्नी का मृत शरीर पाया गया उस दिन तारीख 13 जुलाई थी—अंक 4।

Robinson नाम धारण करके उसने भागने की चेष्टा की। इस नाम के आठ अक्षर थे—अंक 8।

वह montrose नाम के जहाज पर 22 जुलाई को पहचाना गया—अंक 4।

montrose में 8 अक्षर हैं—अंक 8।

जिस जहाज में वह पकड़ कर वापस लाया गया उसका नाम था megantic। इसमें भी 8 अक्षर हैं—अंक 8।

गिरफ्तारी के बाद जब वह कनाडा लाया गया था उस दिन की तारीख 31 जुलाई थी—अंक 4।

उसका मुकद्दमा शनिवार (अंक 8) 22 अक्टूबर (अंक 4) को समाप्त हुआ।

उसको फांसी की सजा हुई और फांसी की तारीख निश्चित हुई 8 नवम्बर—अंक 8। यह भी करिश्मा अंक 8 का था।

उसकी अपील खारिज होने का दिन था शनिवार और तारीख थी 5 नवम्बर। 8 और 5 को जोड़ा तो 13 की संख्या और मूल अंक हुआ 4।

अंत में जब 4 और 8 अंक एक साथ आये तो उसके जीवन का विघातक वर्ष आ गया।

जब उसको फांसी हुई वह 48 वर्ष का था।

## अंक 8 से प्रभावित प्रसिद्ध व्यक्ति

| | | | |
|---|---|---|---|
| महारानी मेरी | जन्म 26 मई | मूल अंक | 8 |
| स्पेन के सम्राट एलफान्जो XIII | ,, 17 मई | ,, | 8 |
| जोसेफ चेम्बरलेन | ,, 8 जुलाई | ,, | 8 |
| लायड जार्ज | ,, 17 जनवरी | ,, | 8 |
| जे० डी० राकफैलर | ,, 8 मई | ,, | 8 |
| जार्ज वर्नाड शा | ,, 26 जुलाई | ,, | 8 |
| प्रेसीडेन्ट ट्रूमेन | ,, 8 मई | ,, | 8 |
| भारत के भूतपूर्व चीफ जस्टिस और वाइस प्रेसीडेंन्ट हिदायत उल्ला | ,, 17 दिसम्बर | ,, | 8 |
| डा० बी० वी० रमन (ज्योतिषी एवं विद्वान) | ,, 8 अगस्त | ,, | 8 |
| गुरु नानक | ,, 8 नवम्बर | ,, | 8 |
| प्रेसीडेन्ट ज़ाकिर हुसैन | ,, 8 फरवरी | ,, | 8 |

## 11

## अंक 9

अंक 9 का अधिष्ठाता ग्रह मंगल है। यह अक उन व्यक्तियों को प्रभावित करता है जिसका जन्म किसी महीने की 9, 18 या 27 तारीख को हुआ हो विशेषकर जब उनकी जन्म तारीख मंगल के अवधिकाल में अर्थात 21 मार्च से 19-26 अप्रैल (सकारात्मक अवधिकाल) और 21 अक्टूबर से 20-27 नवम्बर (नकारात्मक अवधिकाल) के बीच में पड़े।

9 अंक वाले जो कुछ प्राप्त करते हैं इसके लिये उनको संघर्ष करना

पड़ता है। अपने जीवन के पूर्वार्द्ध में उन्हें प्रायः कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है परन्तु अपने आत्म-विश्वास और दृढ़ निश्चय द्वारा अन्ततः सफलता प्राप्त करते हैं।

वे आवेशात्मक, जल्दबाज और स्वतंत्र स्वभाव के होते हैं। उनको अपने ऊपर किसी का प्रभुत्व पसन्द नहीं होता।

यदि 9 अंक उनके जीवन में घटनाओं और उनकी तारीखों में विशेष रूप से दृष्टिगोचर हो तो यह समझना चाहिये कि उनका जीवन काफी संघर्षपूर्ण रहेगा और उनके बहुत विपक्षी और शत्रु होंगे। वे प्रायः युद्ध में या जीवन में संघर्ष करते हुए चोट खाते हैं या अपने प्राण खो बैठते हैं। वे अत्यन्त साहसी होते हैं और अच्छे योद्धा या नेता बनते हैं।

9 अंक वालों को अपने परिवारिक जीवन में कलह और झगड़े करने का दुर्भाग्य प्राप्त होता है। ये झगड़े उनके या उनकी पत्नी के परिवार वालों से होते हैं। ये लोग असहिष्णु होते हैं और अपने विरुद्ध आलोचना को सहन नहीं कर सकते। अपनी योजनाओं में किसी का हस्तक्षेप उन्हें पसन्द नहीं होता। वे तो बस यही चाहते हैं कि घर का बड़ा उन्हें ही समझा जाये।

इन लोगों में प्रबन्ध की क्षमता अच्छी होती है। अपने प्रेम पात्र के लिये वे सर्वस्व निछावर करने को उद्यत रहते हैं। यदि कोई स्त्री उन्हें अपने प्रेम जाल में फांसे तो उन्हें खूब बेवकूफ बना सकती है।

किसी भी संस्थान में वे प्रमुख बनकर काम करना चाहते हैं और पूरा अधिकार अपने हाथ में रखने के इच्छुक होते हैं। यदि ऐसा न हो तो वे हतोत्साह हो जाते हैं और सब बना बनाया बिगड़ भी जाये तो परवाह नहीं करते।

3, 6, और 9 अंकों के प्रदोलन में सामंजस्य होती है। इसलिये 9 अंक वाले व्यक्तियों की उन लोगों से अच्छी निभती है जिनका जन्म किसी भी महीने की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 या 30 तारीखों को हुआ हो।

9 अंक में एक विशेष बात यह है कि 1 से लेकर 8 अंकों में से किसी सेवह गुणा किया जाये तो मूल अंक 9 ही आयेगा। जैसे $2 \times 9 = 18 =$

9, 3×9=27=9, 4×9=36=9, 5×9=45=9, 6×9 =54 7×9=63=9, =72=9, और 8×9=72।

9 अंक वालों को चाहिये कि वे अपनी योजनायें और महत्वपूर्ण कार्य किसी भी महीने की 9, 18 या 27 तारीखों को करें विशेषकर 9 अंक के अवधि काल में अर्थात 21 मार्च और अप्रैल 19-26 या 21 अक्टूबर से 20-27 नवम्बर तक के बीच में। यदि ये तारीखें मंगलवार, बृहस्पतिवार और शुक्रवार को (जो 9 अंक के दिन हैं) पड़ें तो विशेष शुभ होंगी। उनके लिये अपने कार्य के लिये, 3, 6, 12, 15, 21 24 या 30 तारीखें भी अनुकूल होंगी।

उनके लिये गुलाबी और लाल रंग शुभ रंग हैं।

उनके लिये भाग्यवर्धक रत्न हैं माणिक (रूबी), गारनेट और ब्लडस्टोन। और इनमें से कोई रत्न (Gem) वे इस प्रकार धारण करें कि वह उनकी त्वचा को स्पर्श करता हो।

9 अंक एक सौभाग्यपूर्ण अंक माना जा सकता है यदि उससे प्रभावित स्त्री या पुरुष शान्ति पूर्ण या सदा एक सा जीवन व्यतीत करने के इच्छुक न हों और अपने स्वभाव और मिज़ाज पर नियंत्रण रख कर अपने विरुद्ध शत्रु न बनाये।

## अंक 9 से प्रभावित प्रसिद्ध व्यक्ति

| | | |
|---|---|---|
| एडवर्ड VII | जन्म 9 नवम्बर | मूल अंक 9 |
| प्रेसीडेन्ट थियोडोर रुजवेल्ट | ,, 27 अक्टूबर | ,, 9 |
| जरमनी का फ्रेडरिक III | ,, 18 अक्टूबर | ,, 9 |
| जार्ज स्टीफेन्सन (रेलवे इंजिन का आविष्कारक) | ,, 9 जून | ,, 9 |
| गोपाल कृष्ण गोखले | ,, 9 मई | ,, 9 |
| जी० वी० मावलंकर | ,, 27 नवम्बर | ,, 9 |
| स्वामी श्रद्धानन्द | ,, 9 फरवरी | ,, 9 |

## 12

## संयुक्त अंक—निकालने की विधि—कुछ उदाहरण

कीरो ने पुरुष या स्त्रियों के नाम और उनके अंकों में जो निगूढ़ (occult) सम्बन्ध है, उसके विषय में गूढ़ अनुसन्धान करके ऐसी पद्धति प्रस्तुत की है जिसके द्वारा यह जाना जा सकता है कि किसी व्यक्ति का जो नाम रक्खा गया है, उसका उसके जीवन पर शुभ प्रभाव पड़ेगा या अशुभ।

यह जानने के लिये महीने का कोई विशेष दिन जिसका प्रदोलन (vibration) किसी व्यक्ति के लिये शुभफलदायक या सौभाग्यशाली होगा या नहीं, सबसे सरल नियम यह है कि नीचे दी हुयी तालिका से उस निगूढ़ अंक को ज्ञात कर लिया जाये जो उसके नाम से बनता है।

पुरातन चेल्डियन और हिब्रू Hebrew वर्णमाला में प्रत्येक अंग्रेजी अक्षरका मूल्य निर्दिष्ट किया है—दूसरे शब्दों में प्रत्येक अक्षर को एक अंक निर्धारित किया है। कीरो ने अपने अनुभव में यह सबसे अधिक सत्य फल देने वाली और उत्तम व्यवस्था पायी है। यद्यपि उसका आरम्भ काल किसी को नहीं मालूम परन्तु ऐसा विश्वास किया जाता है कि चेल्डियन्स उसको प्रकाश में लाये और उन्हीं के द्वारा हेब्रूज (Hebrews) को प्राप्त हुआ था। निर्धारण इस प्रकार है :—

| | | |
|---|---|---|
| A=1 | L=3 | X=5 |
| B=2 | M=4 | Y=1 |
| C=3 | N=5 | Z=7 |
| D=4 | O=7 | |
| E=5 | P=8 | |
| F=8 | Q=1 | |
| G=3 | R=2 | |
| H=5 | S=3 | |
| I या J=1 | T=4 | |
| K=2 | UVW=6 | |

ऊपर तालिका में अंक 9 किसी अक्षर के लिये नहीं निर्धारित किया गया है। यदि कभी किसी नाम के अंकों के योगफल की संख्या 9 हो तो उसका वही अर्थ लेना चाहिये जो प्रकरण 11 में दिया गया है।

अंग्रेजी में क्रिश्चियन (प्रथम नाम) और सरनेम (उपनाम) (Christian and Surnames) प्रचलित है। जैसे किसी अंग्रेज का नाम है Peter Brooks तो पीटर उसका 'क्रिश्चियन' नाम होगा और ब्रुक्स उसका 'सरनेम' है। इसी तरह एक भारतीय नाम है रोशनलाल चोपड़ा। इसमें 'क्रिश्चियन' नाम होगा 'रोशनलाल' और 'सरनेम' होगा चोपड़ा। इस पद्धति में सब नाम अंग्रेजी अक्षरों में लिखे जायेंगे।

अब एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है। नामांक जानने के लिये हमें पूरा नाम लिखना चाहिये या केवल 'क्रिश्चियन' या 'सरनेम'। इसका उत्तर कीरो ने यह दिया है कि यदि किसी का 'सरनेम' (उपनाम) अधिक प्रचलित है, तो गणना में उसी को लेना चाहिए।

उदाहरण देने के लिये कीरो ने कुछ प्रसिद्ध अंग्रेज हस्तियों के नाम चुने हैं। प्रथम है LLOYD GEORGE और दूसरा है BALDWIN। यह दोनों किसी समय इंगलैण्ड के प्रधान मंत्री थे और इनके यही नाम अधिक प्रचलित थे।

| | |
|---|---|
| L=3 | G=3 |
| L=3 | E=5 |
| O=7 | O=7 |
| Y=1 | R=2 |
| D=4 | G=3 |
| | E=5 |
| 18=9 | 25=7 |

B=2
A=1
L=3
D=4

W=6
I=1
N=5
22=4

LLOYD GEORGE के उदाहरण में LLOYD शब्द में अंक 9 बनता है जैसे पहले लिखा जा चुका है उन व्यक्तियों से सम्बन्धित होता है जो अपने जीवन के पूर्वार्द्ध में परिस्थितियों से कठिन संघर्ष करते हैं। और वे जब अपने देश के उच्च पद या स्थान में पहुंचते हैं तो युद्धादि के कारण बनते हैं। जैसे (लायड जार्ज के जीवन में हुआ) या वे इस प्रकार की गतिविधियों में सक्रिय भाग लेते हैं।

GEORGE शब्द का मूल अंक 7 बनता है। यह एक आकर्षण शक्ति से पूर्ण अंक है और यदि अकेला ही इस्तेमाल किया जाये तो शुभ माना जाता है। परन्तु इस पद्धति में दो नामों पर अलग-अलग विचार नहीं किया जाता। LLOYD GEORGE के नाम के दोनों मूल अंकों को अर्थात 9 और 7 को जोड़ना होगा जिससे संयुक्त अंक 16 बनेगा जिसका निगूढ़ प्रतिरूप (Symbol) है 'एक ध्वस्त किला, या 'एक टावर (बुर्ज) जिस पर बिजली का आघात हुआ हो'। संयुक्त अक्षरों का क्या प्रभाव है और उनसे फल विचार किस प्रकार किया जाता है यह आगे चल कर बताया जायेगा।

वास्तव में लायड जार्ज का पूरा नाम DAVID LLOYD GEORGE था। (D=4, A=1, V=6, I=1, D=4—योगफल 16=7)। यदि इस उदाहरण पर विचार करके DAVID को भी सम्मिलित कर लें तो एक 7 अंक और आ जायेगा। और तीनों नामों का संयुक्तांक 23 बन जायेगा। जो कि आप आगे चलकर देखेंगे कि एक शुभफलदायक अंक माना जाता है।

परन्तु जैसा कहा गया है भवितिव्यता या होनी को कौन रोक सकता है। उन महोदय का प्रचलित नाम केवल LLOYD GEORGE ही रह गया और इसका परिणाम यह हुआ कि अपने प्रधानमंत्रित्व काल में

चमत्कारी 'ध्वस्त किला' या 'एक टॉवर जिस पर बिजली का आघात हुआ' वाले प्रतीकों का प्रभाव चरितार्थ हुआ।

इंगलैण्ड के दूसरे भूतपूर्व प्रधान मंत्री जिनका उदाहरण हमने चुना है, उनको जन साधारण तथा उनके राजनैतिक समर्थक को केवल BALDWN के नाम से जानते थे। इस नाम का जैसे ऊपर गणना की गई संयुक्त अंक बनता है 22 और मूल अंक 4।

जैसा हम बता चुके हैं 4 एक शुभ अंक नहीं माना जाता। उससे प्रभावित व्यक्ति प्रायः गलत फहमियों के शिकार होते हैं। वे अपने विचारों को कार्यान्वित करने के लिये अकथ परिश्रम करते हैं परन्तु उनकी योजनायें कठिन होती हैं और उन्हें अत्यधिक विरोध का सामना करना पड़ता है।

बाल्डविन के नाम के अंग्रेजी अक्षरों से संयुक्त अंक 22 बनता है। संकेतार्थ में यह अंक किसी नेता के लिये सांसारिकता की दृष्टि से अनुकूल नहीं है संकेतार्थ है—"एक भला आदमी दूसरों की मूर्खताओं के कारण अन्धा बन गया है। उसकी पीठ पर गलतियों से भरी एक पोटली है। एक भयानक चीता उसको काट रहा है और वह अपनी रक्षा करने में असमर्थ है"।

सर्वविदित है कि बैल्डविन का प्रशासन काल राजनैतिक वाद विवादों से पूर्ण था। उन्हीं के समय में एडवर्ड VII (जो बाद में ड्यूक आफ विंडसर के नाम से प्रचलित हुये) को राजसिंहासन छोड़ना पड़ा क्योंकि वे एक तलाकशुदा महिला से जो किसी राज परिवार की नहीं थी, विवाह करने के लिये उतारू थे।

LLOYD GEORGE जिनके नाम का विवेचन हमने ऊपर किया है उसमें आप देखेंगे कि नाम के प्रथम शब्द LLOYD का संयुक्तांक 18 बनता है। इस अंक का निगूढ़ संकेतात्मक अर्थ है—"एक रश्मिपूर्ण चन्द्रमा जिसमें से रक्त की बूंदें गिर रही हैं और नीचे एक मैदान में एक भेड़िया और एक कुत्ता उन रक्त की बूंदोंको अपने खुले हुये मुंहों में लपक रहे हैं।"

दूसरी तरफ नाम के दूसरे शब्द जार्ज का संयुक्तांक 16 है। निगूढ़

संकेतात्मक रूप में इसका अर्थ लिया जाता है—"शक्ति का अंक जो अनुभव से संचित की जाती है और अन्त में झगड़े और संघर्ष के बाद लाभ होता है।"

इससे निष्कर्ष यह निकलता है कि यदि LLOYD GEORGE संसार में केवल GEORGE के नाम से जाने जाते तो पूर्ण अवधि तक वे अपने उच्च पद पर आसीन रहते।

LLOYD GEORGE का जन्म 17 जनवरी को हुआ था। इस प्रकार जन्मांक 8 था जिसके प्रदोलन का सामंजस्य दुर्भाग्य से उसके नामांक से नहीं होता। इसके अलावा अंक 8 के कारण उनके लिये उसके नामांक 16 की प्रदत्त भाग्यवाद सम्बन्धी संकेतों में वृद्धि हो जाती है।

कीरो ने कुछ और उदाहरण दिये हैं जो हम नीचे दे रहे हैं :

SIR AUSTEN CHAMBERLAIN

| | |
|---|---|
| A=1 | C=3 |
| U=6 | H=5 |
| S=3 | A=1 |
| T=4 | M=4 |
| E=5 | B=2 |
| N=5 | E=5 |
| 24=6 | R=2 |
| | L=3 |
| | A=1 |
| | I=1 |
| | N=5 |
| | 32=5 |

नाम के प्रथम शब्द का एकल अंक और संयुक्त अंक दोनों अत्यन्त सौभाग्यपूर्ण हैं विशेषकर जब उनका अलग प्रभाव आंका जाये। अंक 6 का सम्बन्ध उन लोगों से होता है जो अधिकारपूर्ण तथा उच्च पदों को, विशेषकर राजनैतिक क्षेत्र में, प्राप्त करने में सफल होते हैं। उसी प्रकार

नाम के प्रथम शब्द का संयुक्त अंक भी अनुकूल है और निगूढ़ संकेतात्मक भाषा में वह अंक "उच्च पदों या स्थानों में आसीन व्यक्तियों का सहयोग और उनकी सहायता प्राप्त कराता है और ऐसा सहयोग लाभदायक होता है।"

नाम के दूसरे शब्द CHAMBERLAIN का मूल अंक 5 भी जैसा पहले वताया जा चुका है एक सौभांग्य पूर्ण अंक है। विशेषकर उन लोगों के लिये जो परिवर्तन शील जीवन व्यतीत करते है और अपनी जीवन प्रगति में रिस्क लेने में संकोच नहीं करते। नाम का यह संयुक्त अंक भी निगूढ़ भाषा में एक जादुई अंक है और उसका सम्बन्ध है "बुद्धिमत्ता के पथ" (Paths of wisdom) से।

उनके खिताव SIR से भी (S=3, I=1, R=2, योगफल 6) सौभाग्यपूर्ण अंक 6 बनता है। यदि हम खिताव और नाम के दोनों शब्दों के एकल अंकों का योगफल करें तो हमें 17 अंक मिलेगा जिसका सिम्वल है 8 "—pointed star of venus" जो 'शान्ति और प्रेम' का प्रतीक है। यह संकेतात्मक शब्द उस व्यक्ति के लिए वहुत उपयुक्त बैंठता है, जिसने लोकार्वो में विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों की सभा में विश्व शान्ति के लिये अतिमानवीय प्रयत्न किये थे। यदि उनको केवल AUSTEN CHMBERLAIN के नाम से जाना जाता तो इन दो शब्दों से 11 अंक बनता है जो आप आगे चल कर पढ़ेंगे छिपे हुये संकट, संघर्ष और दूसरों द्वारा किये जाने वाले विश्वास घात की चेतावनी देता है।

सर आस्टेन चेम्बरलेन का जन्म 16 अक्टूवर को हुआ था। न तो जन्म के एकल अंक 7, न ही संयुक्त अंक 16 का नाम के, अंक से सामञ्जस्य है। इससे यह संकेत मिलता है कि उनकी जीवन प्रगति का अन्त सुखद नहीं होने वाला था।

| RAMSAY | MACDONALD |
|---|---|
| R=2 | M=4 |
| A=1 | A=1 |
| M=4 | C=3 |

| | |
|---|---|
| S=3 | D=4 |
| A=1 | O=7 |
| Y=1 | N=5 |
| 12=3 | A=1 |
| | L=3 |
| | D=4 |
| | 32=5 |

रेमसे मेक्डानल्ड इंगलैण्ड की लेबर पार्टी के प्रथम प्रधान मंत्री थे। आप देखेंगे RAMSAY से एकल अंक 3 और संयुक्त 12 बनता है। एकल अंक आदमी का वह रूप दर्शाता है जो लोगों को ऊपर से दिखाई देता है संयुक्त अंक संबन्धित व्यक्ति की जीवन प्रगति की पृष्ठभूमि में छिपी शक्तियों का प्रतीक है।

इस उदाहरण में अंक 3 शक्तिशाली अंक है और वह प्राय: उन महत्वकांक्षी व्यक्तियों से सम्बन्धित होता है जो अधिकार पूर्ण उच्च स्थान प्राप्त करते हैं और जो सरकारी संस्थानो में विशेष रूप से सफल होते हैं।

संयुक्तांक 12 का निगूढ़ संकेतात्मक प्रतिरूप (Symbol) हैं 'उत्पीड़ित व्यक्ति या बलिदान।'

MACDONALD नाम के अक्षर से एकल अंक 5 बनता है जो एक उत्कृष्ट अंक है। इस नाम का संयुक्तांक 32 भी (जिसका विवेचन SIR AUSTEN CHAMBERLAIN के सम्बन्ध में हो चुका है) एक शुभ अंक है जिसका संकेतात्मक प्रतिरूप है 'बुद्धिमत्ता के पथ।"

परन्तु RAMSAY MACDONALD नाम के दो एकल अंक का जोड़ 8 अंक को उत्पादित करता है। जैसे पहले लिखा जा चुका है 8 अंक के दो पहलू होते हैं। भौतिक और आध्यात्मिक। एक पहलू दार्शनिक विचारों, कार्य साधना में लिप्त होना और जो उद्देश्य या ध्येय सम्मुख रक्खा है उस पर पूरे जोश के साथ केन्द्रित हो जाना आदि को दर्शाता है। और दूसरा पहलू विप्लव, क्रान्ति और उथल-पुथल का प्रतीक है।

उपर्युक्त अंकों के संयोजन (जिससे अंक 8 बनता है) को यदि RAMSAY

MACDONALD के क्रिश्चियन नाम से, जिसका संकेतात्मक प्रतिरूप है 'उत्पीड़ित व्यक्ति या बलिदान', मिलाया जाये तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि उनमें जो कुछ भी उत्कृष्ट गुण हों उन्हें अपनी राजनैतिक पार्टी द्वारा उत्पीड़ित होना था और उनकी जीवन प्रगति उथल-पुथल और क्रान्ति से सम्बन्धित थी।

RAMSAY और MACDONALD दोनों के संयुक्त अंक का योगफल 44 होता है। अगले प्रकरण में आप देखेंगे कि संयुक्त अंकों के प्रभाव और गुणों का वर्णन देते हुए इस अंक के सम्बन्ध में कहा गया है—"यह अंक भविष्य के लिये गम्भीर चेतावनियों से पूर्ण है, यह दूसरों के सम्बन्ध या सहयोग स्थापित करने में घोर-विपत्ति का पूर्वाभास देता है।" इस प्रकार के संकेत निश्चित रूप से एक राजनैतिक दल के प्रभावशाली नेता के लिये शुभ प्रदर्शक नहीं थे और शुभ प्रमाणित भी नहीं हुए। उनकी विफलता का, अंक विज्ञान की दृष्टि से, एक कारण और भी था। उनकी जन्म तारीख 12 अक्टूबर थी जिसका मूल अंक 3 बनता है। वह उनके मूल अंक 8 से सहानुभूति या सामञ्जस्य नहीं रखता।

यदि रेमसे मेक्डानल्ड को ज्ञात होता कि किसी के नाम के अंकों के प्रभाव से जीवन क्या से क्या हो जाता है तो वे जनता या अपने दल के सहयोगियों को RAMSAY नाम से पुकारने का अभ्यास न होने देते। वे यदि MACDONALD नाम से सदा सम्बोधित होते तो उसके संयुक्तांक 32 का पूर्ण शुभ प्रभाव उनको प्राप्त होता।

## 13

## 'संयुक्त' अंकों का पूर्ण विवरण

पिछले प्रकरणों में हमने कीरो के मतानुसार एकल या मूल अंक 1 से 9 तक के अर्थ और उनके मानव जीवन पर प्रभाव का विस्तृत विवरण दे दिया है। अंक विद्या के अध्ययन में हमारा अगला कदम है संयुक्त अंकों के निगूढ़ संकेतात्मक प्रतिरूपता का अर्थ, प्रभाव और विवरण देना और

यह बताना कि अपने दैनिक जीवन में इस ज्ञान से हम क्या व्यवहारिक लाभ उठा सकते हैं ।

जैसा कि कई वार कहा जा चुका है कि एकल अंक यह दर्शाता है कि कोई पुरुष या स्त्री दूसरों की दृष्टि में क्या दिखाई देते हैं । संयुक्त अंक उन गुप्त प्रभावों की ओर संकेत देते हैं जो नेपथ्य में छिपे हुये अपनी भूमिका अदा करते रहते हैं और किसी रहस्य पूर्ण तरीके से भवितिव्यता के अनुसार भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का पूर्वाभास दे देते हैं ।

मूल अंक 1 से 9 के बाद अंकों की और बड़ी प्रतीकात्मकता (Symbolism) आरम्भ होती है और उस समय तक जारी रहती है जब तक 9 की पांच गुनी संख्या अर्थात 45 नहीं आ जाती । इस पद पर 45 के अंक में रहस्यवादी अंक 7 जोड़ दिया जाता है तो संख्या 52 उत्पादित होती है जो कि 52 सप्ताहों की प्रतीक होती है। यदि 52 को 7 से गुणा किया जाये तो 364 की संख्या प्राप्त होती है । पुरातन काल में वर्ष में 364 दिन ही माने जाते थे और उस प्राचीनकाल के लोग 365 वें दिन को एक अवकाश और त्यौहार के दिन की तरह मानते थे। यह 365 की संख्या सूर्य के बारहों राशियों में भ्रमण पूर्ण करने के काल पर आधारित है ।

10 की संख्या से आरंभ होकर सब बाद के अंक संयुक्त अंक कहलाते हैं । उदाहरण 12 की संख्या को लीजिये । 12 का मूल अंक 3 होता है परन्तु उस संख्या अंक 1 और 2, 12 का संयुक्त अंक बनाते हैं और उसका प्रभाव 3 अंक से बिल्कुल भिन्न है ।

कीरो ने लिखा है कि संयुक्त अंको का चित्रण और संकेतात्मक प्रतिरूपता अज्ञातकाल से की गई है। और यह प्रतिरूपता अंक 10 से रहस्यपूर्ण 52 अंक तक चित्रण की गई है और उसका सरल भाषा में विवरण हम नीचे दे रहे हैं ।

10—इस संयुक्त अंक का प्रतीकात्मक प्रतिरूप है "भाग्य चक्र" (Wheel of Fortune) । यह प्रतिष्ठा या मर्यादा, निष्ठा या आस्था, आत्मविश्वास और उत्थान और पतन का अंक है । इस अंक से प्रभावित व्यक्ति अपनी इच्छानुसार बुराई या भलाई से नाम या बदनामी अर्जित

करता है। यह एक शुभ अंक माना जाता है और इससे प्रभावित व्यक्ति अपनी योजनाओं या कार्यों को कार्यान्वित करने में समर्थ होते हैं।

11—निगूढ़ विज्ञान के विद्वान इस अंक को अनिष्ट सूचक तथा अमांगलिक अंक मानते है। यह अंक छिपे हुए संकटों, संघर्ष और दूसरों द्वारा किये गये विश्वासघात की चेतावनी देता है। इस अंक का प्रतीकात्मक प्रतिरूप है "एक मुट्ठी वंद हाथ" (A Clenched Hand) और एक शेर जिसका मुंह वंधा हुआ है (A muzzled Lion) और एक व्यक्ति का जिसको भयानक कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा।

12—यह अंक मानसिक चिंता और यातनापूर्ण जीवन का द्योतक है। इसका प्रतीकात्मक प्रतिरूप है "बलिदान" (The Sacrifice) या 'उत्पीड़ित' (The Victim)। यह अंक अपने से प्रभावित व्यक्ति को दूसरों के षडयंत्र द्वारा या उनके स्वार्थ की वेदी पर बलिदान कर दिये जाने का पूर्वाभास देता है।

13—यह अंक इस वात का द्योतक है कि योजनाओं और कार्य-क्रमों में सदा परिवर्तन होता रहेगा। स्थान परिवर्तन भी द्योतित है। जैसे कि साधारण मान्यता है यह एक अशुभ अंक नहीं है। प्राचीन काल के कुछ लेखनों में यह लिखा है—"जो अंक 13 के प्रभाव को समझता है वह अधिकार और प्रभुत्व प्राप्त करता है।" इस अंक का संकेतात्मक चित्रण है "एक कंकाल (A Skeleton) जो एक हंसिये से एक घास के मैदान में उन व्यक्तियों की गर्दने काटते जा रहे हैं जो घास के ऊपर अपना अपना सिर उठाते हैं।" यह अंक उथल-पुथल और वरवादी का है। यह अंक अधिकार और प्रभुत्व तो प्रदान करता है परन्तु उसको उचित रूप से प्रयुक्त न किया जाये तो ध्वंसकारी होता है। यदि यह अंक किसी गणना में आये तो अज्ञात और अप्रत्याशित घटनाओं की चेतावनी देता है।

14—इस अंक से गति, तथा जन एवं वस्तु की समुदायात्मक प्रवृति प्रकट होती है। इसके प्रभाव से आंधी, तूफान, अग्नि, जल प्रकोप आदि की आशंका होती है। कार्य परिवर्तन धनोपार्जन, अथवा सेहत के लिये यह सौभाग्यशाली अंक है। परन्तु जातक को अन्य मनुष्यों की गलतरे

और मूर्खतापूर्ण गतिविधियों के कारण हानि और विक्रय की आशंका है। यदि भविष्य की गणनाओं में यह अंक दृष्टिगोचर हो तो जातक को संयम, सावधानी और बुद्धिमानी से काम करना चाहिये।

15—यह अंक निगूढ़ महत्व का तथा मायावी और रहस्य का है और इस अंक से प्रभावित व्यक्ति अपने उद्देश्य को पूर्ण करने के लिये यंत्र, मंत्र या जादू टोने जैसे तरीके के उपयोग करने में संकोच नहीं करता। यदि यह अंक किसी शुभ एकल अंक से सम्बन्धित हो तो अत्यन्त सौभाग्यशाली बन जाता है परन्तु इसका योग 4 या 8 अंक का योग हो तो उससे प्रभावित व्यक्ति किसी प्रकार की भी नीच साधनाओं की सहायता से अपने कार्य को पूर्ण करवाने में संकोच नहीं करेगा।

दूसरों से धन, भेंट और अनुग्रह प्राप्त करने के लिये यह शुभ अंक है। इस अंक वाले व्यक्ति संगीत तथा कला के प्रेमी और अच्छे वक्ता होते हैं।

16—इस अंक की अत्यन्त विचित्र निगूढ़ प्रतीकात्मकता है। उसका चित्रण किया गया है एक ऐसे टावर (बुर्ज) के रूप में जिस पर विजली का आघात हुआ है और जहां से एक मुकट धारी व्यक्ति नीचे गिर रहा है। इस प्रतिरूपता को "ध्वस्त दुर्ग" (The shattered citadel) भी वर्णित किया गया है।

इस अंक से प्रभावित व्यक्ति को वह यह चेतावनी देता है कि वह व्यक्ति होनी का शिकार होगा वह उसको यह भी बताता है कि उसको दुर्घटनाओं से सावधान रहना चाहिये और उसकी योजनाओं के पूर्ण होने की आशंका है। यदि भविष्य के सम्बन्ध में यह अंक दृष्टिगोचर हो तो जातक की अपनी योजनाओं के सम्बन्ध में पूर्ण रूप से सतर्क और सावधान रहना होगा।

17—यह एक सशक्त आध्यात्मिकता का अंक है। इसका प्रतीकात्मक प्रतिरूप है 'pointed star of venus" जो 'शान्ति और प्रेम' का प्रतीक है। इस अंक से प्रभावित व्यक्ति कठिनाइयों, रुकावटों और आपदाओं का दृढ़ता से मुकावला करता है और उन पर विजय प्राप्त करता है। यह एक अमरता का अंक माना जाता है और जातक के जीवन के

बाद उसकी कीर्ति अमर बनी रहती है। भविष्य विषयक प्रश्न के लिये एक शुभ अंक है परन्तु '4' या '8' अंक से कोई सम्बन्ध नहीं होना चाहिये।

18—इस अंक का प्रतीकात्मक प्रतिरूप है "एक रश्मिपूर्ण चन्द्रमा जिस पर से रक्त की बूंदे गिर रही हैं, नीचे एक भेड़िया और भूखा कुत्ता उन गिरती हुई रक्त की बूंदों को अपने मूंह में लेने के लिये लपक रहे हैं, और नीचे एक केकड़ा उन दोनों के पास पहुंचने के लिये वेग से बढ़ रहा है।" यह अंक भौतिकता द्वारा आध्यात्मिकता को नष्ट करने के प्रयत्न का प्रतीक है। इस अंक से प्रभावित व्यक्ति का कटु लड़ाइयों, पारिवारिक झगड़ों, युद्ध, सामाजिक उथलपुथल तथा क्रान्ति से सम्बन्ध होता है और कभी-कभी तो जातक युद्ध के माध्यम से धन और अधिकार प्राप्त करता है। (जातक का अर्थ है अंक से प्रभावित व्यक्ति।) यह अंक जातक को दूसरों द्वारा धोखाधड़ी तथा विश्वासघात और तूफान, जल और अग्नि प्रकोपों तथा विस्फोट से क्षति पहुंचने की चेतावनी देता है। जब कभी भविष्य में कोई कार्य के लिये कोई शुभ दिन निकालने में इस अंक पर विचार करें तो जो दिन निकले उसे सावधानी और खूब सोच विचार कर स्वीकार करें। कहने का अर्थ यह है कि यदि किसी ऐसी तारीख का संयुक्त अंक 18 निकले तो उसे किसी शुभ कार्य के लिये नहीं चुनना चाहिये।

19—यह अंक सूर्य का प्रतीक है। इसका प्रतीकात्मक चित्रण भी "सूर्य" है। यह एक शुभ अंक है। इससे हर्ष, सफलता, प्रतिष्ठा तथा मान वृद्धि प्राप्त होती है।

20—यह अंक "जागृति" (The Awakening) और 'निर्णयन' (The Judgement) का प्रतीक है। इसका प्रतीकात्मक चित्रण है—"एक परोंवाला देवदूत तुरही बजा रहा है और उसके नीचे, एक पुरुष, एक स्त्री और एक बच्चा एक कब्र से निकल रहे हैं और प्रार्थना के लिये हाथ जोड़े हुये है।"

इस अंक की व्याख्या है—किसी प्रयोजन या लक्ष्य, नयी योजनाओं, नयी आकांक्षाओं तथा कार्यशीलता के लिये जागृति। इस प्रकार इस अंक से नवीन योजनायें व नयी महत्त्वकांक्षायें प्रकट होती हैं। इस अंक को भी

शुभ माना गया है किन्तु सांसारिक कार्यों में सफलता निश्चित नहीं है। यदि भविष्य विषयक प्रश्न में यह अंक प्रयुक्त किया जाये तो कार्य में विलम्ब, कठिनाइयों या अड़चनों का सामना करना पड़ता है। अपने आप में आध्यात्मिक जागृति करके ही इस अंक को अपना सहायक बनाया जा सकता है।

21—इस अंक के प्रतीकात्मक प्रतिरूपता का 'ब्रह्माण्ड' के रूप में चित्रण किया गया है। यह अंक प्रगति, प्रतिष्ठा, मानवृद्धि, जीवन में उत्थान तथा सफलता का प्रतीक है। भविष्य विषयक प्रश्न में यदि यह अंक प्रयुक्त हो तो सफलता दिलाता है।

22—इस अंक का चित्रण इस प्रकार किया गया है—"एक भला आदमी दूसरों की मूर्खताओं के कारण अन्धा हो गया है। उसकी पीठ पर गल्लतियों की एक पोटली लटक रही है। एक भयानक चीता उस पर आक्र-मण कर रहा है और वह अपनी रक्षा करने में असमर्थ है।" इसका अर्थ यहनिकलता है कि इस अंक से प्रभावित व्यक्ति स्वयं भला होने पर भी भ्रान्ति और स्वप्न की दुनिया में विचर रहा है—मिथ्या आशा में अपना समय व्यतीत करता रहता है और जब विपत्ति बिल्कुल सिर पर आ जाती है तो चौकन्ना हो जाता है। यह अंक इस बात का भी सूचक है कि जातक दूसरों के प्रभाव में आकर गलत निर्णय लेता है। भविष्य विषयक प्रश्न में जब यह अंक प्रयुक्त हो तो उपर्युक्त बातों का ध्यान रखना चाहिये।

23—इस अंक का प्रतीकात्मक प्रतिरूप है "शेर का शाही सितारा" (The Royal Star of the Lion)। यह अंक उच्चाधिकारियों की सहायता सफलता और सुरक्षा का विश्वास दिलाता है। भविष्य विषयक प्रश्न के लिये यह एक अत्यन्त सौभाग्य सूचक अंक है और योजनाओं को सफल होने की पुष्टि करता है।

24—यह भी एक सौभाग्य सूचक अंक है। इस अंक से अपने कार्य में जातक को अपनी योजनाओं में उच्च पदाधिकारियों का सहयोग तथा उनकी सहायता प्राप्त होती है। यह अंक यह भी दर्शाता है कि प्रेम से और किसी पुरुष को किसी स्त्री से और किसी स्त्री को किसी पुरुष की

सहायता से लाभ होता है। भविष्व विपयक प्रश्नों के सम्बन्ध में भी यह एक शुभ अंक माना जाता है।

25 अंक दर्शाता है कि अनुभव द्वारा शक्ति प्राप्त होती है और दूसरों की गतिविधियां अवलोकन करने से लाभ होगा । इसे सर्वथा शुभ अंक नहीं माना जाता क्योंकि प्रारम्भिक जीवन में वहुत संघर्ष और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, तव कहीं जाकर सफलता प्राप्त होती है। भविष्य विषयक प्रश्न के लिये यह शुभ अंक माना जाता है।

26—यह अंक भविष्य के सम्बन्ध में गम्भीर चेतावनी देता है। वह दर्शाता है कि दूसरों के सहयोग से, साझेदारी से, गलत सलाह से, सट्टे से और गुट्टवाजी से बरबादी होने की आशंका है। भविष्य विषयक प्रश्न के लिये इस अंक को वहुत सावधानी से इस्तेमाल करना चाहिये।

27.—यह एक शुभ अंक है और इसका प्रतीकात्मक प्रतिरूप है "राजदण्ड" (The Sceptre)। यह हुकूमत तथा उच्चाधिकारिता का प्रतीक है। यह अंक यह दर्शाता है कि बुद्धिमत्ता से काम करने से उसका अच्छा पुरस्कार मिलेगा। इस अंक से प्रभावित व्यक्तियों को अपने विचारों और योजनाओं को स्वयं कार्यान्वित करना चाहिये। भविष्य विषयक प्रश्न के सम्बन्ध में संयुक्त अंक वहुत शुभ फल सूचित करता है।

28—इस अंक से कई विरुद्ध दिशाओं में जाने वाली शक्तियां सूचित होती हैं। इस अंक से प्रभावित व्यक्तियों को अपने कार्य स्वरूप वहुत सफलता की आशा होगी परन्तु यदि वे सावधानी न वरतें तो उनका सब कुछ समाप्त हो जायेगा। उनको अपने भविष्य के लिये प्रवन्ध करना आवश्यक है। इससे दूसरों में अन्धविश्वास रखने तथा व्यापार में प्रतिक्रिया, विरोध, या प्रतियोगिता के कारण या कानूनी कार्यवाही के कारण हानि की संभावना प्रकट होती है। भविष्य विपयक प्रश्न के लिये इस अंक को शुभ नहीं माना जाता।

29—यह अंक अनिश्चिततायें और दूसरों से विश्वासघात और धोखेबाज़ी, संघर्ष और कठिनाइयां, अप्रत्याशित संकट, अविश्वसनीय मित्र और विपरीत लिंग के व्यक्तियों से धोखा दर्शाता है। भविप्य विपयक

प्रश्नों के सम्बन्ध में अत्यन्त अशुभ अंक है।

30—इस अंक से प्रभावित व्यक्ति अत्यन्त बुद्धिमान तथा प्रतिभा-सम्पन्न होते हैं। वे आर्थिक संचय की ओर विशेष ध्यान न देकर अपने आपको मानसिक स्तर पर ऊंचा उठाने के प्रयत्न करते हैं। इसके कारण यह अंक न शुभ है और न अशुभ।

31—यह अंक अपने प्रभाव से पिछले अंक के लगभग समान है। इतना और है कि इस अंक से प्रभावित व्यक्ति अधिक स्वयंपूर्ण और अकेलापन अनुभव करने वाला होता है। और वह अपने साथियों से दूर-दूर रहता है। सांसारिक या भौतिक दृष्टि से यह एक शुभ अंक नहीं माना जाता।

32—इस अंक में भी एकल अंक 5 और 14 और 23 संयुक्त अंकों के समान मायावी शक्ति है। इससे बहुत व्यक्तियों या राष्ट्रों का समुच्चय या समुदाय इंगित होता है। इस अंक से प्रभावित व्यक्ति यदि स्वयं अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करे तो उसे सफलता प्राप्त होगी। परन्तु यदि वह अन्य व्यक्तियों की हठ या मूर्खतापूर्ण सलाह को मान्यता देगा तो उसकी योजनायें असफल होंगी। भविष्य विषयक प्रश्न के लिये शुभ अंक है।

33—इस अंक की अपनी कोई विशेष शक्ति नहीं है। इसका वही प्रभाव समझना चाहिये जो अंक 24 का बताया गया है।

34—इसका वही प्रभाव है जो अंक 25 का बताया गया है।

35—इसका वही प्रभाव है जो अंक 26 का बताया गया है।

36—इसका भी प्रभाव अंक 27 के समान है।

37—यह एक विशेष शक्ति संपन्न अंक है। इस अंक से प्रभावित व्यक्तियों को प्रेम तथा मित्रता—दोनों से सफलता तथा उसके द्वारा भाग्योदय प्राप्त होता है। इन व्यक्तियों को साझेदारी में भी लाभ होता है। भविष्य विषयक प्रश्न के लिये यह एक शुभ अंक है।

38—इस अंक का अंक 29 के समान प्रभाव है।

39—इसका प्रभाव अंक 30 के समान है।

40—इसका प्रभाव अंक 31 के समान है।

41—इसका प्रभाव अंक 32 के समान है।

42—इसका प्रभाव अंक 24 के समान है।

43—यह एक दुर्भाग्यशाली अंक है। यह क्रान्ति, उथल-पुथल, झगड़ा-फसाद, असफलता और रुकावट का प्रतीक है। भविष्य विषयक प्रश्न के सम्बन्ध में यह एक शुभ अंक नहीं है।

44—इसका अर्थ अंक 26 के समान है।

45—इसका अर्थ अंक 27 के समान है।

46—इसका अर्थ अंक 37 के समान है।

47—इसका अर्थ अंक 29 के समान है।

48—इसका अर्थ अंक 39 के समान है।

49—इसका अर्थ अंक 31 के समान है।

50—इसका अर्थ अंक 32 के समान है।

51— इस अंक में अपनी ही अलग शक्ति है। इससे 'योद्धा' अथवा 'विजयी' इंगित होता है। सेना से सम्बन्धित व्यक्तियों के लिये यह अत्यन्त सौभाग्यपूर्ण अंक है। इस अंक से प्रभावित व्यक्ति जिस क्षेत्र में भी कार्य करता है उसे सहसा उन्नति प्राप्त होती है। वह जो भी काम करे उसमें सफल होता है। परन्तु ऐसे व्यक्ति के शत्रु भी अनेक होंगे—उनसे भय तथा कत्ल किये जाने की आशंका रहेगी।

52—इसका अर्थ अंक 43 के समान है।

अब हम यह बतायेंगे कि संयुक्त अंकों के प्रतीकात्मक अर्थ को 1 से 9 तक मूल अंकों के साथ-साथ इस्तेमाल करके अपने दैनिक जीवन में किस प्रकार लाभ उठा सकते हैं।

## उदाहरण

मान लीजिये कि हमको यह ज्ञात करना है कि सोमवार 26 अप्रैल का दिन हमारे किसी विशेष कार्य के लिए शुभ या अनुकूल रहेगा या नहीं। पहले अपने प्रचलित नाम का प्रत्येक अक्षर का अंक निकालिये, फिर जो संयुक्त या एकल अंक आये उसमें 26 अप्रैल अर्थात $2+6=8$ जोड़िये और बाद में 8 को नाम के कुल अंक और जन्मांक को जोड़िये। अब योगफल

जो अंक प्रदत्त करेगा उसको देखिये वह शुभफलदायक है या नहीं है तो समझ लीजिये कि 26 अप्रैल आपके काम के लिये अनुकूल दिन नहीं है। यदि वह अनुकूल नहीं है तो इसी नियम का उपयोग करके 27 तारीख और वह भी ठीक न हो तो आगे आने वाली तारीखों को देखिये। इस प्रकार कोई न कोई दिन आपको शुभ मिल ही जायेगा।

इस सम्बन्ध में कीरो ने JOHN SMITH नाम के एक व्यक्ति का उदाहरण दिया है जिसका जन्म 8 जनवरी को हुआ था।

| | |
|---|---|
| | S=3 |
| J=1 | M=4 |
| O=7 | I=1 |
| H=5 | T=4 |
| N=5 | H=5 |
| 18=9 | 17=8 |

$$9+8=17=8$$

9 और 8 जोड़कर संयुक्त अंक 17 बनता है और एकल अंक 8 उधर 26 अप्रैल से भी 8 अंक बनता है। दोनों के योगफल से 16 की संख्या आती है जिसका एकल अंक 7 बनता है। यदि इस अंक में जन्मांक 8 जोड़ दें तो संयुक्त 15 आता है और 6 एकल अंक।

15 अंक के अंतर्गत देखेंगे कि उसके फलार्थ में लिखा है—"दूसरों से धन, भेंट, और अनुग्रह प्राप्त करने के लिये ये शुभ अंक है।" इससे यदि 26 अप्रैल को जान स्मिथ किससे धन प्राप्त करने की या अपने कार्य पूर्ण के लिये किसी का अनुग्रह प्राप्त करना चाहता है तो वह दिन उसके लिये अनुकूल और सफलता का दिन प्रमाणित होगा। यही नियम प्रत्येक नाम के लिये व्यवहृत किया जा सकता है।

अब हम एक भारतीय नाम का उदाहरण देते हैं। VIJAY GOEL (विजय गोयल) जिसकी जन्म तिथि 15 अगस्त है वह 25 जनवरी को अपने पद वृद्धि के लिये अरजी देना चाहता है। हमें विचार करना है कि कीरो की दी हुई पद्धति के अनुसार विजय गोयल के लिये 25 जनवरी का दिन शुभ होगा या नहीं?

| | |
|---|---|
| V=6 | |
| I=1 | G=3 |
| J=1 | O=7 |
| A=1 | E=5 |
| Y=1 | L=3 |
| 10=1 | 18=9 |

नाम का संयुक्त अंक 10 बना और एकल अंक 1। जन्मांक बना 1+5=6 और कार्य की तारीख 25 का एकल अंक है 7। अब तीनों एकल अंकों को जोड़ा तो संयुक्त अंक 14 हमारे सम्मुख आया।

14 अंक के अंतर्गत फलार्थ में लिखा है—'यदि भविष्य की गणनाओं में यह अंक दृष्टिगोचर हो तो संयम, सावधानी और बुद्धिमानी से काम करना चाहिये।'

इस फलार्थ से ऐसा आभास मिलता है कि 25 जनवरी का दिन उसके विचारित काम के लिये विशेष शुभ नहीं और उसको 25 के बजाय 26 जनवरी को या 8 फरवरी को अरजी देना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से संयुक्त अंक 15 हो जायेगा जो, जैसा ऊपर हम प्रथम उदाहरण में बता चुके हैं, ऐसे कार्यों के लिये अत्यन्त शुभ अंक है।

## 14

## एकल और संयुक्त अंकों के व्यवहारिक उपयोग के सम्बन्ध में अतिरिक्त जानकारी

प्राय: जन्मांक और नामांक में परस्पर सहानुभूति नहीं होती जिसके कारण जीवन निस्कण्टक नहीं हो पाता। यदि इन दो अंकों में समन्वयता हो तो सम्बन्धित व्यक्ति की बहुत सी कठिनाइयां दूर हो जाती हैं।

उदाहरण के लिये पिछले प्रकरण में दिये हुए जान स्मिथ के नामांक और जन्मांक का विवेचन करते हैं।

| | |
|---|---|
| J=1 | S=3 |
| O=7 | M=4 |
| H=5 | I=1 |
| N=5 | T=4 |
| 18=9 | H=5 |
| | 17=8 |

JOHN का एकल अंक है 9 और स्मिथ का 8। 8 और 9 का योगफल हुआ 17 अर्थात 1+7=8 इस प्रकार पूरे नाम का मूल अंक 8 है। यदि जान स्मिथ का जन्म ऐसी तारीख को हुआ हो जिसका मूल अंक 8 हो जैसे 8, 17 26 तो नामांक और जन्मांक में पूर्णरूप से समन्वयता होगी, और यद्यपि 8 कोई विशेष शुभ अंक नहीं है परन्तु जान स्मिथ के लिये जन्मांक और नामांक में कोई विरोध नहीं होगा। इसलिये वह यदि 8, 17 या 26 तारीख को कोई लेन देन या व्यवसाय सम्बन्धी या कोई अन्य महत्वपूर्ण कार्य सम्पादन करे तो अपने को अन्य दिनों से अधिक भाग्यशाली पायेगा।

इसके विपरीत यदि उसका नामांक 2 हो अर्थात 2, 11, 20 या 29 तो उसके नामांक और जन्मांक में परस्पर सामञ्जस्यता न होगी और उसके कार्य सम्पादन में बाधायें और उलझनें उपस्थिन होती रहेंगीं और वह यह भी निर्णय करने में असमर्थ होगा कि कोई महत्वपूर्ण कार्य के सम्पादन के लिये उसे कौन सा दिन चुनना चाहिये। वह अपना जन्मांक तो बदल नहीं सकता परन्तु नामांक को बदला जा सकता है। यदि वह अपने नाम में एक अक्षर ऐसा जोड़ दे जिसमें 3 की संख्या और जुड़ जाये तो 17+3=20=2 उसका नामांक हो जायेगा। ऐसा वह अपने नास में किसी स्थान पर C, G, L या S अक्षर जोड़कर कर सकता है। वह यह कर सकता है कि वह अपना नाम JOHN C. SMITH या JOHN G. SMITH रखकर उसे प्रचलित कर दे।

परन्तु यदि JOHN SMITH का जन्मांक 8 है अर्थात उसका जन्म 8, 17, या 26 को हुआ हो तो उसका नामांक और जन्मांक दोनों 8 होंगे और उसको नाम में कोई अक्षर जोड़ते की आवश्यकता नहीं है।

यदि किसी व्यक्ति का जन्मांक 4 या 8 हो और 8 जन्मांक वाले के लिये नामांक 4 हो या 4 जन्मांक वाले का नामांक 8 हो तो सांसारिक या भौतिक सफलता प्राप्त करने के लिये उसके लिये श्रेयस्कर होगा कि वह अपना नाम इस प्रकार बदले (कोई अक्षर बदल कर या जोड़कर) कि नामांक एक ऐसी संख्या आये जिसका प्रदोलन अधिक भाग्यपूर्ण हो, जैसे 1, 3, 6, या 9। अधिकांश स्थितियों में इस परिवर्तन से अत्यन्त सौभाग्य पूर्ण परिणाम निकलते हैं, जिससे एक दुःख और दुर्भाग्य के अन्धकारपूर्ण जीवन में सुख और सौभाग्य का प्रकाश चमकने लगता है।

कीरो का मत है कि जिनके नामांक 4 या 8 हों और वे उसको 1, 3, 6 या 9 में परिवर्तित कर दें तो उनको वह रत्न धारण करना चाहिये और उन रंगो का इस्तेमाल करना चाहिये जो इन अंको के लिये निर्धारित किये गये हैं।

कीरो का यह भी मत है कि पूर्ण लाभ उठाने के लिये लोगों को उस मकान को रहने के लिये चुनना चाहिये जिसके अंक का प्रदोलन (Vibration) उनके नामांक और जन्मांक के प्रदोलन से समन्वयता रखता है।

अब हम इस सम्बन्ध में प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी का उदाहरण देते हैं।

श्रीमती इन्दिरा गांधी का जन्म 19 नवम्बर को हुआ था। इसलिये उनका जन्मांक 1 है $(1+9=10=1)$

| | |
|---|---|
| I=1 | G=3 |
| N=5 | A=1 |
| D=4 | N=5 |
| I=1 | D=4 |
| R=2 | H=5 |
| A=1 | I=1 |
| 14=5 | 19=1 |

नामांक—6

यों 6 एक शुभ अंक है; परन्तु उसके प्रदोलन और जन्मांक के प्रदोलन

में समन्वयता नहीं है। हमने सुना है कि लोकसभा के निर्वाचन के नामांकन पत्रों में प्रायः वह अपना नाम INDIRA NEHRU GANDHI लिखा करती है।

N =5
E=5
H=5
R=2
U=6

23=5

नेहरू नाम के 5 अंक को यदि उनके उपर्युक्त नामांक 6 में जोड़ दिया जाये तो नामांक 11 अर्थात् 2 हो जाता है और परिणाम स्वरूप जन्मांक और नामांक में अच्छी समन्वयता आ जाती है। अपने सहकारी और निजी निवास स्थान के लिये उन्होंने 1, सफदरजंग रोड, चुना है। इस प्रकार उनके जन्म के अंक के, नाम के अंक के और निवास स्थान के प्रदोलनों (Vibrations) में पूर्ण समन्वयता है और परिणाम सर्व विदित है।

## 15

## जन्मांक सबसे अधिक महत्वपूर्ण क्यों है ?

अपने दैनिक कार्यों के लिये शुभ और अशुभ दिन जानने के लिये जन्मांक का उपयोग सबसे अधिक सरल और स्पष्ट है—विशेषकर उन लोगों के लिये जिन्होंने अंक विद्या का उच्च स्तर का अध्ययन नहीं किया हो या जिनको इस विषय में उच्च ज्ञान नहीं प्राप्त है, जन्मांक द्वारा निश्चित रूप से किसी कार्य का वह उपयुक्त दिन जाना जा सकता है जिसका प्रदोलन जन्मांक से समन्वय करता है।

जिस व्यक्ति का जन्म किसी भी महीने की 1, 10, 19 या 28 तारीख को हुआ वह निश्चय के साथ उनमें कोई भी तारीख अपने महत्व-

पूर्ण कार्य के लिये चुन सकता है और वह उसके लिए महीने का सबसे अधिक अच्छा दिन प्रमाणित होगा। अंक 4, अंक 1 के नकारात्मक प्रभाव का सूचक है। 1 जन्मांक वाला व्यक्ति यद्यपि 4 अंक से सम्बन्धित किसी भी तारीख को चुन सकता है परन्तु कीरो का मत है कि इस अंक को किसी सांसारिक कार्य के लिये नहीं चुनना चाहिये। उन्होंने यह विचार प्रकट किया है कि अंक 4 स्वयं 1 जन्मांक वाले व्यक्ति के जीवन में आता रहता है और शुभ प्रभाव नहीं देता। कीरो ने इस सम्बन्ध में अपने निजी अनुभव के आधार पर यह कहा है। 1 जन्मांक वालों के लिये 4 अंक वाली तारीखें अर्थात 4, 13, 22 और 31 दुर्घटना, मृत्यु जैसे दुःखद समाचार लाई हैं, जिसके कारण उनके जीवन पर काफी प्रभाव पड़ा है। कीरो ने अपने अनुभव में यह भी देखा है कि 1 जन्मांक वाले व्यक्ति बिना जाने बूझे 4, 13, 22 31, 40, 49 आदि ऐसी संख्या वाले, जिसका मूल अंक 4 होता है, मकान की ओर आकर्षित होते हैं और यद्यिप उन मकानों में रहने की अवधि में 1 अंक वाले व्यक्तियों के जीवन में महत्वपूर्ण घटनायें घटित होती हैं, परन्तु सांसारिक दृष्टि से उनको उनसे कोई विशेष लाभ नहीं होता।

उस व्यक्ति को, जिसका जन्मांक 6 हो, ऐसी संख्या या नम्बर के मकान में कभी नहीं रहना चाहिये जिसका मूल अंक 4 बनता हो। उसी तरह 4 जन्मांक वाले व्यक्ति को ऐसी संख्या वाले मकान में नहीं रहना चाहिये जिसका मूल अंक 8 (जैसे 8, 17, 26, 35, 44, आदि) बनता हो। इस नियम को मानकर बहुत से लोग अपने आपको, दुःखद घटनाओं से बचा सकते हैं।

1 जन्मांक वाले व्यक्ति के दूसरी श्रेणी के अनुकूल अंक हैं 2 और 7, अर्थात जिनके अंतर्गत 2, 7, 11 16, 20, 25 या 29 तारीखें आती हैं। इसी प्रकार 2, 7, 11, 16, 20, 25, 29, 34 आदि संख्या के मकान भी उनके लिये साधारणतया अशुभ नहीं माने जाते; परन्तु क्योंकि ये अंक परिवर्तन और अनिश्चितता से सम्बन्धित हैं, 2 और 7 मूल अंक वाले मकानों में 1 अंक वाले स्थायी रूप से नहीं टिक पाते।

समन्वयता और प्रदोलन के नियमों के अनुसार उत्तम यही होगा कि

1 अंक वाले व्यक्ति उसी अंक वाले व्यक्ति, मकान या दिन से सम्बन्धित हों। इसी प्रकार 4 और 8 अंकों को छोड़कर अन्य अंकों वाले व्यक्ति पूर्णरूप से शुभ फल प्राप्त करने के लिये अपने ही अंक से सम्बन्ध स्थापित करें। 4 और 8 अंक वालों को अपने अंकों को छोड़कर अन्य सौभाग्यपूर्ण अंकों के प्रदोलनों को चुनना चाहिये। इसके लिये नामांक के उचित उपयोग की आवश्यकता होती है। कोई 4 या 8 अंक का व्यक्ति यदि अधिक सौभाग्यपूर्ण अंकों के प्रदोलन का लाभ उठाना चाहता है तो वह अपने नाम के कुछ अक्षर बदल कर ऐसा नया नामांक बनाये जिसके प्रदोलन उसके लिये शुभ फलदायक हों।

मान लीजिये किसी व्यक्ति का 8, 17 या 26 जनवरी को जन्म हुआ था और उसके नाम के अक्षर बदलने से पहले या बाद उसका नामांक 1, 3, 5 या 6 बनता है, तो 8 जन्मांक वाले व्यक्ति के लिये लाभदायक होगा कि वह 8 की संख्या को किसी भी कार्य सम्पादन के लिये उपयोग में न लाये और 1, 3, 5 या 6 जैसे अंकों के प्रभाव में काम करे। 4 जन्मांक वाले व्यक्तियों को भी यही नीति अपनानी चाहिये।

आप यह देखेंगे कि ऊपर दिये हुये नियमों में अंक 9 को कोई स्थान नहीं दिया गया है। इसका कारण यह है कि अंक 4 जिसका अधिष्ठाता ग्रह यूरेनस है और अंक 8 जिसका अधिष्ठाता ग्रह शनि है—दोनों अपने गुणों में मंगल के अंक 9 के घोर विरोधी हैं। इस लिये 4 और 8 अंकों वालों को अंक 9 से दूर ही रहना उचित है। यदि आपको ज्योतिष का ज्ञान है तो आपको उपर्युक्त तथ्य की यथार्थता पर विश्वास हो जायेगा। किसी की भी जन्म कुण्डली मंगल की शनि या यूरानस से युति अनेकों दुःखद घटनाओं और कठिनाइयों का पूर्वाभास देती है।

जन्मांक को सबसे अधिक महत्त्व देने का एक कारण यह भी है कि एक तो वह परिवर्तित नहीं हो सकता, दूसरे वह जन्म के समय स्वामित्व रखने वाले ग्रह से प्रभावित होता है और तीसरे प्रदोलन (Vibration) के किसी रहस्यमय नियम के अंतर्गत जन्म का समय ही अंक की समन्वयता या प्रदोलन निर्णय करता है, जिसका प्रभाव जन्म लेने के समय से लेकर जीवन के अन्त तक सक्रिय रहता है।

और जैसे हम कई बार कह चुके हैं—जन्मांक जीवन के भौतिक पहलू से सम्बन्धित है और नामांक सम्बन्धित है हमारे अस्तित्व के आध्यात्मिक पहलू से ।

ऐसा भी है कि जो नामांक हम बनायें वह निश्चित रूप से वास्तविक या ठीक न हो । नामांक उसी नाम का बनाना होता है जो सबसे अधिक प्रचलित हो । साधारण व्यक्ति के लिये यह बात एक समस्या उपस्थित करती है । बहुत से लोग अपने 'सरनेम' उपनाम से जाने जाते हैं । भूत पूर्व प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू के विभिन्न नाम प्रचलित थे । उनके बहुत से अनुयायी उन्हें केवल 'पंडित जी' कहते थे—कुछ उन्हें केवल नेहरू जी कहते थे और बहुत कम लोग उन्हें 'जवाहरलाल' कहते थे । इसी प्रकार स्वर्गीय गोविन्द बल्लभ पन्त अधिकतर 'पन्त जी' के नाम से जाने जाते थे । अबुल कलाम आजाद 'मौलाना आजाद' के नाम से जाने जाते थे और मोहम्मद अली जिन्ना केवल 'जिन्ना' के के नाम से। ऐसी स्थिति में एक साधारण व्यक्ति के लिये यह निश्चित करना कठिन होता है कि वह नामांक के लिये किस नाम को चुने । इसलिये नामांक बनाने में गलती होने की सम्भावना है; परन्तु यदि जन्मांक पर अधिक जोर दिया जाये और उसको मूलाधार माना जाये तो गलती नहीं होगी ।

परन्तु यदि किसी नाम के ठीक होने में कोई सन्देह नहीं है और मूल जन्मांक और मूल नामांक एक ही हैं तो अवश्य शुभ फल प्राप्त होगा । यदि नामांक और जन्मांक में समन्वयता न हो तो नाम के कुछ अक्षरों को बदल कर वह समन्वयता लाई जा सकती है । इसका उदाहरण हम पहले दे चुके हैं । एक व्यक्ति का नाम AJAI KAPOOR है उसका जन्म 19 जून को हुआ था। उसके पिता का नाम NAWAL KISHORE KAPOOR है परन्तु पुत्र KISHORE शब्द को नहीं इस्तेमाल करता । AJAI KAPOOR अभी तक इसी नाम से जाने जाते हैं और स्कूल कालेज में उनका यही नाम दर्ज है ।

अब देखिये AJAI KAPOOR का जन्मांक है 1 (1+9=10 =1)। अब हम इसका नामांक बनाते हैं :—

AJAI KAPOOR

1111=4 218772=27=9

9+4=13=4 नामांक

यद्यपि 1 और 4 सूर्य के अंक हैं परन्तु 4 का अधिष्ठाता ग्रह यूरानसहै। जैसा हम पहले बता चुके हैं 4 और 8 नामांक को किसी भी अङ्क से संबंधित करना शुभ फलदायक नहीं होता। इसलिए हम AJAI KAPOOR नाम के जन्मांक और नामांक में समन्वयता लाने के लिए, कुछ और परिवर्तन करें कि दोनों अङ्कों में सामंजस्यता हो जाये। यदि अपने पिता की तरह AJAI KAPOOR अपने नाम को AJAI KISHORE KAPOOR लिखे और प्रचलित करे तो यह समन्वयता प्राप्त हो जाएगी।

| | | |
|---|---|---|
| A=1 | K=2 | |
| J=1 | I=1 | K=2 |
| A=1 | S=3 | A=1 |
| I=1 | H=5 | P=8 |
| 4 | O=7 | O=7 |
| | R=2 | O=7 |
| | E=5 | R=2 |
| | 25=7 | 27=9 |

4+7+9=20=2 नामांक

आप देखेंगे इस प्रकार नाम बदलने से जन्मांक 1 है और नामांक 2 हो गया है। 1 और 2 अंकों में पूर्ण समन्वयता है। इसमें सन्देह नहीं कि इस समन्वयता के कारण अजय किशोर कपूर का नाम उनके जीवन को सुख और सौभाग्य से पूर्ण कर देगा। वह चाहें तो अपना नाम केवल AJAI KISHORE ही रखें। तब भी उनका नामांक शुभ फलदायक (2) ही होगा। यदि वह हस्ताक्षर A. KAPOOR करे तो नाम और जन्मांक और नामांक दोनों 1 होगा। यह श्रेष्ठ फलदायक होगा।

नोट—सूक्ष्म गणनाओं के लिये जन्म मास या जन्म वर्ष का अंक इतना व्यक्तिगत या अंतर्तम नहीं होता जितना कि जन्मांक होता है।

उदाहरण—यदि किसी व्यक्ति का जन्म 6 जून 1866 को हुआ हो तो उनको निम्नलिखित क्रम में लिखना चाहिये :—

6 = 6 (व्यक्तिगत)
जून = 5 (साधारण विषय)
1866 = 21 = 3 (भवितिव्यता की धारा)

यहां पर एक बात स्पष्ट करना आवश्यक है। जून को 6वां महीना मान कर कई अंक शास्त्री उसका अंक 6 मानते हैं। परन्तु कीरो ने उसके लिये 5 अंक निर्धारित किया है। इसका कारण यह है 6 जून 5 अंक के अन्तर्गत अवधि काल 21 मई से 20 जून के बीच में पड़ता है)।

अंक 6, 5 और 3 पर अलग-अलग विचार करना चाहिये। उनका संयुक्तांक बनाना आवश्यक नहीं है।

जन्म वर्ष में उसी का संयुक्त जोड़ दिया जाये तो जो वर्ष आता है वह व्यक्ति विशेष के लिये भाग्य के सम्बन्ध में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होता है।

उदाहरण—1866
+21
1887

यह स० 1887 उस व्यक्ति के लिये, जिसका जन्म 6 जून 1866 को हुआ था, अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होगा।

इस बात को आगे चलकर प्रसिया (Prussia) के विलियम I के जीवन की घटनाओं का विवेचन करते समय प्रमाणित करेंगे। (देखिए प्रकरण 18)

## 16

## नामों और अंकों के कुछ दृष्टान्त

इस प्रकरण में हम कुछ दृष्टान्तों द्वारा यह समझाने का प्रयत्न करेंगे

कि हिब्रू वर्णमाला के अक्षरों (A से Z तक) के लिये निर्धारित अंकों को, वह दिखाने के अभिप्राय से कि नाम और अंक भवितव्यता या होनी (Destiny) से कैसे गुथे हुये हैं, इन्हें किस प्रकार प्रयुक्त करना चाहिये।

नैपोलियन पहले अपना नाम NAPOLEON BUONAPARTE लिखा करता था। अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में उसने नाम को NAPOLEON BONAPARTE लिखना आरम्भ कर दिया।

| | BUONAPARTE | BONAPARTE |
|---|---|---|
| | B=2 | B=2 |
| | U=6 | O=7 |
| | O=7 | N=5 |
| | N=5 | A=1 |
| | A=1 | P=8 |
| | P=8 | A=1 |
| | A=1 | R=2 |
| | | T=4 |
| =5 | R=2 | E=5 |
| | T=4 | 35=8 |
| | E=5 | |
| | 41=5 | |

NAPOLEON से और BUONAPARTE दोनों से 5 अंक बनता है। जैसा हम पहले दर्शा चुके हैं कि 5 एक मायावी (या चमत्कारपूर्ण) अंक है और प्राचीन यूनानी इसे रक्षाकवच की तरह अपने साथ युद्ध स्थल में ले जाया करते थे। दो 5 जिनके जोड़ से 10 अंक बनता है, यह सम्बन्ध अत्यन्त महत्वपूर्ण और अर्थगर्भित है।

जब नैपोलियन ने अपने नाम के दूसरे भाग के हिज्जे BONAPARTE कर दिये तो इस शब्द में 8 अंक का प्रदोलन आ गया। जैसा हम बता चुके हैं कि 8 अंक के एक पहलू क्रान्ति, अराजकता, दुराग्रह और

न्याय से विरोध, का प्रतीक है और नीचे स्तर का प्रभाव दुःखान्त है। यद्यपि नैपोलियन एक महान व्यक्ति था; परन्तु उसका जीवन या अस्तित्व अंक विद्या के अनुसार नीचे स्तर पर था। NAPOLEON BONAPARTE से नाम के दोनों भागों के अंकों का योगफल 13 होता है जिसका प्रतीकात्मक प्रतिरूप है "एक कंकाल जो एक हंसिये से उन व्यक्तियों की गरदनें काटता जा रहा है जो नीचे मैदान में घास के ऊपर अपना सिर उठाते हैं।" यह 'शक्ति' का भी प्रतीक है परन्तु यदि इसके प्रभाव को उचित रूप से न किया जाये तो ध्वंसकारी बन जाता है।

ऊपर जो कुछ हमने नैपोलियन पर प्रभाव डालने वाले अंकों के सम्बन्ध में कहा है उसमें कितनी सत्यता है इसका नैपोलियन के जीवन का इतिहास साक्षी है।

इस सम्बन्ध में कीरो ने तीन जहाजों—MAINE, WARATAH और LEINSTER के प्रमाण दिये हैं, जो अपने अंकों के दुष्प्रभाव से नष्ट भ्रष्ट हो गये।

| | | |
|---|---|---|
| | W=6 | L=3 |
| M=4 | A=1 | E=5 |
| A=1 | R=2 | I=1 |
| I=1 | A=1 | N=5 |
| N=5 | T=4 | S=3 |
| E=5 | A=1 | T=4 |
| 16 | H=5 | E=5 |
| | 20 | R=2 |
| | | 28 |

अमरीका का जंगी जहाज MAINE हवाना हारबर में एक रहस्यपूर्ण विस्फोट से नष्ट भ्रष्ट हो गया था। उसका कोई भी यात्री जीवित नहीं बचा था। MAINE नाम का संयुक्त अंक 16 बनता है जिसका प्रतीकात्मक प्रतिरूप है 'एक टावर (बुर्ज) जिस पर बिजली का आघात हुआ हो'। जहाज में विस्फोट कैसे हुआ और किसकी कार्यवाही द्वारा हुआ

इसका रहस्य कभी न खुला परन्तु इसके कारण अमरीका और स्पेन में युद्ध छिड़ गया ।

LEINSTER नामक जहाज को प्रथम महायुद्ध के अन्तिम दिनों में एक जर्मनी की पनडुब्बी ने अपनी तोप से निशाना लगा कर आइर-लैण्ड के समुद्र तट पर नष्ट भ्रष्ट कर दिया । LEINSTER से संयुक्त अंक 28 बनता है । यह अंक परस्पर विरोधी प्रभावों से पूर्ण है और 'इस पर अन्धविश्वास से हानि' भी व्यक्त करता है । इस जहाज पर बहुत से सिपाही और नागरिक यात्री सवार थे । उनको यह विश्वास था कि जंगी जहाज उनकी रक्षा के लिये पीछे चल रहे होंगे परन्तु किसी अज्ञात कारण से कोई जंगी जहाज उनकी सुरक्षा के लिये नहीं भेजा गया था । LEINS-TER अकेला ही था जब उस पर पनडुब्बी ने आक्रमण किया गया और इसके कारण सैकड़ों व्यक्तियों के प्राण चले गये ।

WARATAH नामक जहाज जो आस्ट्रेलिया से चलने के बाद अपने सब अधिकारियों, कर्मचारियों तथा यात्रियों के साथ सहसा ऐसा डूब गया जैसे समुद्र ने उसे निगल लिया हो । WARATAH नाम का संयुक्त अंक 20 बनता है । इस अंक का प्रतीकात्मक अर्थ है "निर्णयन"—(The Judgement) । इसके चित्रण में एक परोंवाला देवदूत तुरही बजा रहा है और नीचे एक पुरुष, एक स्त्री और एक बच्चा कब्र से प्रार्थना के लिये हाथ जोड़े निकल रहे हैं ।

कीरो ने 8 अंक के दुष्प्रभाव का एक ज्वलन्त उदाहरण दिया है । युद्ध भूमि में एक तोप के पास एक आदमी बैठा था । उसको अंक विद्या का कुछ ज्ञान था । उसके आसपास कुछ लोग बैठे थे । वह यह जानकर चौंक पड़ा कि उन सब के जन्मांक 8 थे । उसका भी जन्म 26 जनवरी को अर्थात् 8 अंक के अवधिकाल में तथा 8 अंक वाली तारीख को हुआ था । उसने यह भी देखा कि वह दिन 17 फरवरी था अर्थात् 8 अंक का दिन था । एक और संयोग था—होनी का प्रभाव उसे नजर आया । वह जिस तोप के पास बैठा था उस पर 8 अंकित था । जब वह इन सब बातों पर विचार कर रहा था तभी सहसा जर्मनी फौज की एक तोप ने गोलाबारी आरम्भ कर दी ।गोले गिरते हुये निकट आ रहे थे । वह उन्हें गिनता रहा । जब सातवां

गोला गिरा तो वह अपने स्थान से भाग खड़ा हुआ। आठवां गोला उस तोप पर गिरा जिस के पास वह बैठा था। वहां जितने व्यक्ति थे उनमें केवल वही था जो जीवित बच गया था।

## 17

अंक 13—वह शुभ है या अशुभ? उस अंक को आतंकपूर्ण मानना निराधार है।

चाहे किसी व्यक्ति को, अंक विद्या का ज्ञान हो या न हो वह 13 अंक को अशुभ मानता है। यह अंधविश्वास इतने विस्तृत रूप से फैल गया है कि बहुत से होटलों में 12 के बाद कमरे को 13 के बजाय 12 A का नम्बर देते हैं और उसके बाद 14 नम्बर आता है। 13 नम्बर को बिल्कुल उड़ा देते हैं।

कीरो का कहना है कि यह तो नहीं मालूम कब से लोग इस अंक से आतंकित होने लगे; परन्तु उससे भय खाने का कारण यह रहा हो कि यह अंक पुरातन काल से शक्तिवान अंक माना जाता रहा है और भवितिव्यता से सम्बन्धित किया गया है। हम अंक 13 का प्रभाव बताते समय यह बता चुके हैं कि पुरातन काल के लेखनों में इस अंक के संबंध में यह कहा गया है—"जो इस अंक के प्रभाव को समझता है वह अधिकार और प्रभुत्व प्राप्त करता है।"

प्राचीन काल में इंगलैंड तथा अन्य योरोपीय देशों में कट्टर धर्म पंथियों ने निगूढ़ विद्याओं का घोर विरोध किया था। इस अंक पर विशेष रूप से वक्रदृष्टि डाली गयी और इसको हौव्वा बना दिया गया। ऐसा विश्वास फैलाया गया कि यदि तेरह व्यक्ति एक साथ भोजन करने बैठें तो एक वर्ष के अन्दर उनमें से एक की मृत्यु अवश्य हो जायेगी।

13 अंक से भयभीत होने का एक और कारण था। वह था इसका निगूढ़ प्रतीकात्मकता में यह चित्रण—"एक कंकाल जो अपने हड्डियों के

हाथों में हँसिया लिए आदमियों की गरदनें काट रहा है।"

अंक 13 के उपर्युक्त चित्रण को समझाने के लिये हम को पुनः अंक 4 के अर्थ और प्रभाव पर विचार करना आवश्यक है। क्योंकि 13 का मूल अंक 4 ही है।

जैसा आप पहले पढ़ चुके हैं कि एकल अंक 4 सबसे निराला अंक है। उससे प्रभावित व्यक्ति दूसरों द्वारा गलतफहमियों के शिकार होते हैं और जीवन में अकेलापन अनुभव करते हैं। उनके विरोधी वह छिपे हुये शत्रु होते हैं जो निरन्तर उनके विरुद्ध अपने चक्रव्यूह रचा करते हैं। 4 अंक से प्रभावित व्यक्ति समाज और शासन की जमी जमाई व्यवस्था को बदल डालते हैं। वे सामाजिक सुधारों में बहुत दिलचस्पी लेते हैं। वे सत्ता के विरुद्ध नारे बुलन्द करते हैं और नई सत्ता स्थापित करते हैं।

13 अंक में उपर्युक्त गुण 4 अंक से कुछ उच्च स्तर पर वर्तमान होते हैं। जैसा इसके प्रतीकात्मक चित्र में दिखाया गया है यह अपने सामने जो कुछ हो उसको काट कर धराशायी कर देता है। इसी चित्रण के कारण कदाचित यह अंक प्राचीन काल से भयभीत कर देने वाला अंक बन गया है।

परन्तु यह भी देखना चाहिये कि 13 का अंक 4 अंक के क्रम 4, 13, 22 और 31 क्रम का एक अंक है। इसके परिणामस्वरूप जिस व्यक्तिका जन्म 4, 13, 22 या 31 हो तो वह देखेगा यह अंक उसकी जीवन प्रगति में बार-बार सामने आयेंगे। इस प्रकार 13 भी उन अंकों के समान दृष्टि गोचर होगा जिनका मूल अंक 4 है।

13 अंक के लोगों के जीवन में आने के कुछ उदाहरण कीरो ने दिये हैं।

डेनवर कोलोरेडो के निवास पर एक सज्जन मि० एच० सी० शरमन ने 13 तारीख को मिस वीक्स के सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रखा। उनका विवाह 13 जून 1913 को दस बजकर 13 मिनट पर हुआ। पति पत्नी दोनों का जन्म 13 तारीख को हुआ था। उनके विवाहोत्सव में 13 अतिथि उपस्थित थे और विवाह के समय वधू के हाथ में 13 गुलाब के फूलों का गुलदिस्ता था। उनके लिये 13 अंक अशुभ नहीं प्रमाणित हुआ।

जान फिग नाम के डोवर के एक पुलिस सार्जेन्ट ने 'डेली एक्सप्रेस' के नाम के समाचार पत्र में यह सूचना प्रकाशित करवाई थी कि 13 का अंक उसके लिए तनिक भी आतंक पूर्ण या दुर्भाग्यशाली नहीं प्रमाणित हुआ। उसने लिखा था कि वह 13 सदस्यों के परिवार में से एक था। उसने 13 वर्ष की उम्र से काम करना आरम्भ कर दिया और अपनी प्रथम नौकरी में 13 वर्ष तक टिका रहा। फिर 13 अप्रैल को डोवर पुलिस फोर्स में भरती हुआ। उसके अपने परिवार में अर्थात पति पत्नी और बच्चों को सम्मिलित करके 13 सदस्य थे।

भवितिव्यता के सूचक 13 अंक की एक विचित्र व्यवतता नार्थ बर्टन यार्क्स के निवासी मि० फुवाह् रुड नाम के व्यक्ति की मृत्यु सम्बन्धी परिस्थितियों में पाई गयी। दिल के दौरे से महीने की 13 तारीख को उनकी मृत्यु हुई। तेरह सप्ताह से वे स्थानीय क्लब के फन्ड से आर्थिक सहायता ले रहे थे और मृत्यु के बाद उनके पास 13 शिलिंग शेष रह गये थे। उनकी शव यात्रा के दिन उनके सबसे छोटे पुत्र का 13 वां जन्म दिवस था। मि० रुड के परिवार में 13 सदस्यों ने शव यात्रा में भाग लिया। उनके ज्येष्ठ पुत्र का 'रोयाल नेवी' में 13 नम्बर था जो उस समय 13वें जहाज में काम कर रहा था। यह पता नहीं कि मि० रुड का जन्म कब हुआ था; परन्तु ऊपर लिखित 13 अंक की उनके जीवन में पुन: आवृत्ति से यह निश्चित सा लगता है कि उनका जन्म 4, 13, 22 या 31 तारीख को हुआ होगा।

कीरो ने एक सेमुअल स्टोरी नाम के व्यक्ति का उदाहरण भी दिया है, जिसके जीवन में 13 अंक दुर्भाग्य से अधिक सौभाग्य को लाया। मि० सेमुअल का जन्म 13 जनवरी 1840 $(1+8+4+0=13)$ को हुआ था। 13 वर्ष की उम्र से वह धनोपार्जन करने लगे थे। जब वह 26 $(13\times2)$ वर्ष के थे तो उन्होंने अपना राजनैतिक भाषण दिया। यह भाषण 26 जनवरी $(2\times13)$ को दिया गया था। इस भाषण से उनका राजनैतिक क्षेत्र में भाग्योदय हुआ। सन्डरलैंण्ड टाऊन काउन्सिल के 13 वर्ष सदस्य रहने के पश्चात्, वह पार्लियामेन्ट के मेम्बर चुने गए। अपनी प्रथम पत्नी से उनका साथ 13 वर्ष तक रहा। एक महीने की 26

(2 × 13) तारीख को उसकी मृत्यु हो गयी। उन्होंने दूसरा विवाह 1898(1+8+9+8=26=2× 13) में 58 वर्ष (8+5=13) की उम्र में किया। उसका जन्म 13 तारीख को हुआ था और मृत्यु भी 13 तारीख को हुई। वह लिबरल पार्टी के सदस्य 39 (3×13) वर्ष तक रहे और उसको स० 1903 (13) में छोड़ दिया।

पाठकों को ये उदाहरण तोता मैना के किस्से की तरह लग रहे होंगे; परन्तु कीरो महोदय का कथन है कि ये सच्ची कहानियां यह प्रमाणित करती हैं कि अंक विज्ञान में पूर्ण यथार्थता है और यह 13 अंक भी उतना भयानक नहीं या दुर्भाग्यशाली नहीं है जैसा लोगों ने समझ रखा है।

## 18

**फ्रांस के सेन्ट लुई और लुई XVI के जीवन के घटना चक्र में अंकों की पुनरावृत्ति का एक असाधारण उदाहरण—**

बहुधा यह विश्वास नहीं किया जाता है कि कुछ समय बाद एक-सी घटना घटित होती है। परन्तु बहुत बार ऐसा देखा गया है कि आज जो घटना घटित हुई ठीक वैसी ही कुछ वर्ष पूर्व हुई थी। इसको लोग 'संयोगवश' कह कर टाल देते हैं। परन्तु कई बार जब उतने ही वर्ष बाद घटित हो तो उसे हम केवल 'संयोगवश' कह कर नहीं टाल सकते। कीरो ने एक घटना चक्र की कुछ प्रधान घटनाओं का विवरण दिया है। उन्होंने कहा है कि इतिहास इसका साक्षी है कि फ्रांस के सेन्ट लुई और लुई XVI के जन्म में ठीक 539 वर्ष का अन्तर था। दोनों के जीवन में जो घटना चक्र चला उसमें एक ही समान घटनाओं के घटित होने में ठीक 539 वर्ष का अन्तर था। इस सम्बन्ध में नीचे वह विचित्र और मनोरंजक घटना चक्र देखिये और अंक विद्या पर अपने विश्वास को दृढ़ बनाइये।

| सेन्ट लुई | लुई XVI |
|---|---|
| सेन्ट लुई का जन्म 23 अप्रैल, स० 1215 | लुई XVI का जन्म 23 अगस्त स० 1754 |

| | |
|---|---|
| कालान्तर 539<br>1754 | |
| सेन्ट लुई की बहन आइसाबेल का जन्म स० 1225 | लुई XVI की बहन एलिजाबेथ का जन्म स० 1764 |
| कालान्तर 539<br>1764 | |
| सेन्ट लुई के पिता लुई VIII की मृत्यु स० 1226 | लुई XVI के पिता की मृत्यु स० 1765 |
| कालान्तर 539<br>स० 1765 | |
| सेन्ट लुई की अवयस्कता (minority) का आरम्भ स० 1226 | लुई XVI की अवयस्कता का आरम्भ स० 1765 |
| कालान्तर 539<br>स० 1765 | |
| सेन्ट लुई का विवाह स० 1231 | लुई XVI का विवाह स० 1770 |
| कालान्तर 539<br>1770 | |
| सेन्ट लुई को वयस्काधिकार प्राप्त हुये स० 1235 | लुई XVI का राज सिंहासन पर बैठना स० 1774 |
| कालान्तर 539<br>1774 | |
| सेन्ट लुई की इंगलैण्ड के बादशाह हेनरी III से युद्ध के बाद सन्धि स 1243 | लुई XVI की इंगलैण्ड के बादशाह जार्ज III से सन्धि स० 1782 |
| कालान्तर 539<br>1782 | |

| | |
|---|---|
| एक पूर्व देशीय राजकुमार सेन्ट लुई के पास ईसाई बनने के लिये आया स० 1249 | एक पूर्व देशीय राजकुमार ने उसी उद्देश्य से अपना राजदूत लुई XVI के पास भेजा स० 1788 |
| कालान्तर 539 / स० 1788 | |
| सेन्ट लुई का बन्दी होना स० 1250 | लुई XVI राज्याधिकार से बंचित कर दिया गया स० 1789 |
| कालान्तर 539 / 1789 | |
| सेन्ट लुई के साथियों ने उसका साथ छोड़ दिया स० 1250 | लुई XVI के साथियों ने उसका परित्याग कर दिया स० 1789 |
| कालान्तर 539 / 1789 | |
| ट्रिसटान (Tristan) (दुःख) का जन्म स० 1250 | क्रान्ति का आरम्भ स० 1789 |
| कालान्तर 539 / 1789 | |
| सेन्ट लुई की माता (राजमाता) का देहान्त स० 1253 | फ्रान्स से 'सफेद लिली' का अन्त स० 1792 |
| कालान्तर 539 / 1792 | |
| सेन्ट लुई अवकाश लेकर और (धर्म परिवर्तन करके) जैकोबियन बनना चाहता है स० 1254 | लुई XVI अपने आपको जैको-बियन मत के लोगों के हाथों में समर्पित कर देता है स० 1793 |
| कालान्तर 539 / स० 1793 | |

एक निश्चित कालान्तर में इतिहास की पुनरावृत्ति का यह एक असाधारण उदाहरण है। कालान्तर की संख्या के अंकों को जोड़ने से 8 अंक बनता है और LOUIS XVI के नाम में भी आठ अक्षर हैं। क्या यह एक संयोग मात्र है ?

इस सम्बन्ध में हम अंकों की दैविक शक्ति का कुछ और प्रमाण देते हैं :

सेन्ट लुई का जन्म 23 अप्रैल को हुआ था—जन्मांक 5

लुई XVI का जन्म 23 अगस्त को हुआ था—जन्मांक 5

इस प्रकार दोनों के जन्मांकों पर पूर्ण समन्वयता थी और वे दोनों एक ही प्रकार का प्रभाव उत्पादित करने के लिए सक्षम थे।

दोनों नामों का हेब्रू वर्णमाला द्वारा भी विवेचन किया जा सकता है।

| S A I N T | L O U I S |
|---|---|
| 3 1 1 5 4 | 3 7 6 1 3 |
| 14 = 5 | 20 = 2 |
| | 5 + 2 = 7 |
| L O U I S | X V I |
| 3 7 6 1 3 | 1 6 |
| 20 = 2 | 7 |
| | 2 + 7 = 9 |

SAINT LOUIS के नाम से एकल अंक बनता है 7 और LOUIS XVI के नाम से एकल अंक 9 बनता है। यदि इन दोनों एकल अंकों को जोड़ें तो 16 संयुक्त अंक आ जाता है। जैसा पहले लिखा जा चुका है 16 अंक का निगूढ़ अर्थ है—'एक टावर जिस पर बिजली का आघात हुआ हो और जिस पर से राजमुकट सिर पर धारण किये नीचे कोई गिर रहा है।' LOUIS XVI के पतन का यह कितना उपयुक्त प्रतिरूप (Symbol) है।

कीरो ने अपने शोधपूर्ण संग्रह से फ्रांस के बादशाहों के सम्बन्ध में अंकों के प्रभाव के कुछ और भी उदाहरण दिये हैं जिनमें अंक 14 की बार-बार पुनरावृत्ति हुई है।

14 मई 1029 को फ्रांस के प्रथम वादशाह हैनरी को धर्मपन्थियों ने पवित्र किया था। और हैनरी नाम के अन्तिम वादशाह का 14 मई 1610 में कत्ल हुआ था।

HENRI de BOURBON 14 अक्षरों का नाम था 14 वें वादशाह का जो फ्रांस और नवारे का वादशाह कहलाता था।

14 दिसम्बर 1553 को ईसामसीह के जन्म के 14 शताब्दियों, 14 दशक और 14 वर्ष वाद, फ्रान्स के हेनरी IV का जन्म हुआ था। स० 1553 के अंकों को जोड़ा जाये तो 14 का अंक वनता है।

14 मई 1552 को हैनरी IV की प्रथम पत्नी का जन्म हुआ था।

14 मई 1588 को हेनरी III के विरुद्ध बगावत आरम्भ हुई थी।

14 मई 1590 को हेनरी की IV की सेना की पेरिस के फाक्स वर्ग नामक स्थान में पराजय हुई थी।

14 नवम्बर 1592 को फ्रान्सीसी संसद ने एक निर्णय लिया जिसके अंतर्गत रोम को (अर्थात पोप को) हेनरी IV के स्थान पर किसी अन्य को वादशाह बनाने का अधिकार दिया गया।

14 मई 1643 को हेनरी IV के पुत्र लुई XIII की मृत्यु हुई— महीने के उसी दिन जब उसका पिता मारा गया था, 1643 के अंकों को जोड़ा जाये तो 14 अंक बनता है।

लुई XIV 1643 (14) में राजसिंहासन पर बैठा और 1715 (14) में उसकी मृत्यु हो गई। मृत्यु के समय 77 (14) वर्ष की आयु थी।

लुई XV 1715 (14) में गद्दी नशीन हुआ।

लुई XVI के शासन काल के 14 वें वर्ष देश में क्रान्ति आरम्भ हुई जिसके कारण उसे राज्याधिकार परित्याग करना पड़ा।

14 का अंक फ्रान्स के भाग्य के साथ क्यों सम्बन्धित था, इसका कारण कीरो ने यह दिया है कि 14 का मूल अंक 5 है। ज्योतिष के अनुसार पेरिस कन्या (Virgo) राशि के प्रभाव में है जिसका अपने नकारात्मक रूप में स्वामी बुध ग्रह है, जिसका अंक है 5; फ्रान्स के इतिहास में जिस अवधि काल का ऊपर के उदाहरणों में जिक्र किया गया है उसमें पेरिस ही

राज्याधिकार का स्थान था और जिसका पेरिस पर राज्याधिकार होता था वही समस्त फ्रान्स का बादशाह माना जाता था।

प्रकरण 15 के अन्त में हमने कहा था कि प्रसिया राज्य के विलयम I के सम्बन्ध में विशेष विवरण बाद में देंगे। वह हम अब दे रहे हैं।

स० 1849 प्रसिया (अब इसका नाम बदल गया है) के बादशाह विलियम I ने अपनी माता के साथ भाग कर इंगलैंड में आश्रय लिया। उसकी भेंट एक महिला अंक शास्त्री से हुई और उसने उस महिला से अपने भविष्य के सम्बन्ध में पूछा।

महिला ने कहा, "1849 के सब अंकों को जोड़ कर देखो, क्या संख्या आती है?" विलियम I ने जोड़ा—

$$\begin{array}{r} 1849 \\ +22 \\ \hline 1871 \end{array}$$

"इस वर्ष में अर्थात् 1871 में तुम युद्ध में विजय प्राप्त करोगे और तुम्हारे बादशाह बन जाने की घोषणा होगी।

"और फिर—?" विलयम I ने पूछा।

"1871 के अंकों को फिर उसी तरह जोड़ो," महिला ने उत्तर दिया, "उस संख्या से जो वर्ष निकलेगा वह तुम्हारी मृत्यु कावर्ष होगा।"

विलियम I ने जोड़ा तो जो वर्ष आया वह था : 1888 (1871+17)। "उसके बाद मेरे देश का क्या होगा?" विलियम I ने पूछा।

'फिर उसी तरह जोड़ो', महिला ने कहा 'और बताओ, क्या संख्या आती है?'

विलयम I ने जोड़ा—

$$\begin{array}{r} 1888 \\ +25 \\ \hline 1913 \end{array}$$

'उस वर्ष', महिला ने उत्तर दिया, 'तुम्हारा जो उत्तराधिकारी अपने

सिर पर राजमुकट धारण कर रहा होगा, वह एक नये युद्ध की तैयारी करेगा जिससे उसकी और देश की बरबादी होगी।"

यह भविष्यवाणी जर्मनी के भूतपूर्व सम्राट कैसर के एक निकट सम्बन्धी ने 1904 में कीरो को बताई थी। भविष्यवाणी बिल्कुल ठीक निकली थी।

## 19

## नामांक बनाने के सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण और लाभदायक निर्देश

कीरो लिखते हैं—उनके सम्मुख प्रायः यह प्रश्न रक्खा जाता था कि नामों से पहले जो "Mr, Mrs, या Miss" (मिस्टर, मिसेज या मिस) लिखा जाता है उनको भी नामांक बनाने में सम्मिलित करना चाहिये या नहीं।

कीरो का उत्तर वही है जो पहिले ही इस पुस्तक में लिख चुके हैं। वह यह है कि नामांक उस पूरे या छोटे नाम से बनाना चाहिये जो सबसे अधिक प्रचलित हो।

उदाहरण के लिये यदि कोई युवती MISS JONES के नाम से पुकारी जाती है—जैसा कि प्रायः व्यापारिक संस्थानों में होता है—तो उस संस्थान से, जिसमें वह नौकरी करती है, सम्बन्धित सब कार्यों के लिये उसे अपना प्रचलित नाम MISS JONES ही मानना चाहिये और उसी नाम से नामांक चुनना चाहिये; परन्तु अपने निजी कार्यों के लिये उसके क्रिश्चियन नाम से या उस नाम से, जिससे वह परिवार वालों या मित्रों द्वारा पुकारी जाती है, नामांक बनाना होगा। मान लीजिये उसका पूरा नाम MARY JONES है; परन्तु घर वाले उसे केवल MARY कह कर पुकारते हैं। तो अपने निजी जीवन और घरेलू कार्यों के सम्बन्ध में इसके नामांक का प्रभाव-फल MARY नाम से ठीक निकलेगा। बाद में

यदि इस युवती का विवाह हो जाता है और लोग उसे Mrs PATRICK के नाम से पुकारने लगते हैं; परन्तु उसके घरवाले, सम्बन्धी, पति और पति के सम्बन्धी उसे MARY ही पुकारते हैं तो अपने निजी और घरेलू कार्यों को छोड़ कर अन्य कार्यों के लिये उसे Mrs PATRICK के नाम से नामांक बनाना चाहिए। यही सिद्धान्त पुरुषों पर लागू होता है।

जब किसी पुरुष या स्त्री के कई क्रिश्चियन नाम हों तो नामांक उसी नाम से बनाना चाहिये जो सबसे अधिक प्रचलित हो।

बहुत से व्यक्तियों को खिताब मिलते हैं जो वे अपने नाम के आगे या पीछे लिखने लगते हैं। जो नियम ऊपर दिया गया है वही उनके सम्बन्ध में भी लागू होगा।

कीरो के समय में एक अत्यन्त प्रसिद्ध गायिका थी। उसका नाम था : NELLIE MELBA ; परन्तु गायिका के रूप में वह MELBA के नाम से प्रसिद्ध थी।

| | | |
|---|---|---|
| | N=5 | M=4 |
| D=4 | E=5 | E=5 |
| A=1 | L=3 | L=3 |
| M=4 | L=3 | B=2 |
| E=5 | I=1 | A=1 |
| 14=5 | E=5 | 15=6 |
| | 22=4 | |

6+4=10=1

इस प्रसिद्ध गायिका के 'सरनेम' MELBA से संयुक्त अंक 15 बनता है और एकल अंक 6 बनता है। दोनों अंक सफलता के लिये अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं। अपनी एक पत्रिका में प्रकाशित लेख में कीरो ने लिखा था—"यदि अंक 15 किसी शुभ एकल अंक से सम्बन्धित हो तो वह बहुत सौभाग्य सूचक और शक्तिवान बन जाता है। इस अंक से प्रभावित व्यक्ति कुशल वक्ता, संगीतज्ञ और कला प्रेमी होते हैं और उनके व्यक्तित्व में विशेष आकर्षण शक्ति होती है।" MELBA में इस

प्रकार के गुण प्रचुर मात्रा में विद्यमान थे।

मेलबा अपने हस्ताक्षर में अपना पूरा नाम NELLIE MELBA लिखती थी। इस पूरे नाम का संयुक्तांक बनता है 10 जो एक सौभाग्य सूचक अंक है। पूरे नाम सें बनने वाला एकल अंक 1 ओजस्वी व्यक्तित्व और महत्वाकांक्षा का द्योतक है। इस अंक से प्रभावित व्यक्ति जिस किसी क्षेत्र या व्यवसाय में हों; उसके प्रमुख बनने की कांक्षा रखते हैं।

मेलबा को 'DAME' का खिताब मिला था। DAME से सौभाग्य सूचक अंक 5 बनता है। यदि खिताब सहित हम पूरे नाम का विवेचन करें तो अंक इस प्रकार बनते हैं : DAME 5, NELLIE 4, और MELBA 6। इन तीनों अंकों के जोड़ने से संयुक्त अंक 15 बनता है। इसका परिणाम यह हुआ कि जब तक यह प्रसिद्ध गायिका जीवित रही, उस पर सौभाग्य और सफलता की छत्र छाया बनी रही।

एक बात सदा याद रखना चाहिये कि खिताब के अंक के जोड़ने से नाम का सौभाग्य सूचक प्रभाव बिगड़ भी सकता हैं। और खिताब का अंक यदि 4 या 8 हो तो यह निश्चित है कि नाम के सब शुभ प्रभावों का अन्त हो जाता है। वह खिताब बाहर से प्रसन्नता का सूचक क्यों न हो उसके गर्भ में दुर्भाग्य ही होता है।

NAPOLEON का नाम यह समझाने के लिये अच्छा उदाहरण है। इस नाम से संयुक्त अंक 41 बनता है। इस अंक से बहुत से व्यक्तियों या राष्ट्रों का समुच्चय या समुदाय इंगित होता है। एकल अंक 5 भी सौभाग्य सूचक है। जब नेपोलियन फ्रान्स का बादशाह बना तो उसका नाम NAPOLEON I हो गया। इससे उसके नाम का संयुक्तांक 42 बन गया और मूल अंक 6; दोनों सौभाग्य सूचक अंक—जिसके कारण वह सदा के लिये GREAT NAPOLEON के सम्मानित नाम से प्रसिद्ध हो गया।

NAPOLEON III का संयुक्त अंक 44 बनता है। जैसा हम पहले बता चुके हैं—यह अंक भविष्य के सम्बन्ध में गम्भीर चेतावनी देता है। यह दर्शाता है कि दूसरों के सहयोग से, साझेदारी से, गलत सलाह से,

सट्टे से और गुट्टबाजी से वरबादी होने की आशंका है। नेपोलियन III पर यह दुष्प्रभाव पूर्ण रूप से सार्थक हुआ। संयुक्तांक 44 होने के कारण नेपोलियन III के नाम का एकल या मूल अंक 8 बना। इस सबका परिणाम यह हुआ कि नेपोलियन III इतिहास में वह बादशाह कहलाया जिसने फ्रान्स की महत्ता को समाप्त कर दिया।

सम्राट और साम्राज्ञी जब राजसिंहासन पर वैठते हैं तो उनके नाम बदल जाते हैं। अंकों के इस परिवर्तन से मनोरंजक प्रभाव पड़ता है।

KING EDWARD VII जब सिंहासनारूढ़ हुये तो उन्होंने अपना नाम ALBERT के स्थान में EDWARD कर दिया। नये नाम का संयुक्तांक इस प्रकार बनता है :—

| | | |
|---|---|---|
| KING | =11 | =2 |
| EDWARD | =22 | =4 |
| VII | =7 | =7 |
| | | 13 |

13 अंक के प्रभाव का पूर्ण विवेचन हम पिछले प्रकरणों में कर चुके हैं। इस अंक ने इंग्लैण्ड में होने वाले सनसनी खेज परिवर्तनों का पूर्वाभास दे दिया था। यह संयोग नहीं, दैवयोग था कि एडवर्ड VII का जन्मांक 9 और पूरे नाम का मूलांक 4 मिलकर 13 ही का संयुक्त अंक बनाते थे। इन सबका परिणाम यह हुआ कि एडवर्ड VII को सिंहासन परित्याग करना पड़ा और उनका शासन काल बहुत संक्षिप्त रहा।

## 20

## 4 और 8 अंक से प्रभावित व्यक्तियों की समस्याओं का समाधान

4 और 8 अंकों से प्रभावित व्यक्तियों के जीवन में 4 और 8 अंकों की पुनरावृत्ति से उनका जीवन कष्टमय और दुःखद बन जाता है। वे

होनी के शिकार बन जाते है और भाग्य उन्हें नीचे ऊपर ढकेलता रहता है। जो व्यक्ति अपने आपको उपर्युक्त परिस्थितियों में पा रहे हैं उनके लिए दुर्भाग्य से बचने के लिये नीचे दिये हुये आदेश बहुत सहायक होंगे।

4 का अंक स्वयं और उसके क्रम के अन्य अंक ऐसे अशुभ नहीं हैं कि भयभीत होने का कारण बनें। जिन व्यक्तियों का जन्म 4, 13, 22 या 31 को हुआ हो वे इन तारीखों और अंकों को अपने जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण पायेंगे; परन्तु क्योंकि अंक विद्या में अंक 4 अंक 1 से साहचर्य्यता रखता है और 1-4 या 4-1 लिखा जाता है। इन दोनों अंकों में 1 अधिक शुभ और बली है। 4 अंक वालों को चाहिये कि जहां तक सम्भव हो सके अपने महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिये 1, 10, 19, और 28 तारीखों को चुनें और जहां तक हो सके ऐसे मकान को अपने रहने के लिये चुनें जिसके नम्बर का मूल अंक 1 हो। उनको यह भी स्मरण रखना चाहिए कि 1-4 क्रम के अंक 2-7 के क्रम से अंतर्बदल (Interchangeable) हैं और उनको 2, 6, 11, 16, 20, 25, 29 जैसी तारीखों से अपने कार्यों के लिये आशंकित नहीं होना चाहिये।

परन्तु उस परिस्थिति में जब 4 और 8 जन्मांक वाले किसी व्यक्ति के जीवन में 4 और 8 अंकों का संयोजन बार-बार दृष्टिगोचर हो तो उन्हें उनसे सम्बन्धित तारीखों तथा उन अंकों वाले व्यक्तियों आदि का परिहार करना चाहिये। दूसरे शब्दों में उनसे दूर रहना चाहिये।

उदाहरण—यदि कोई व्यक्ति, जिसका जन्म 4, 13, 22 या 31 तारीख को हुआ है, किसी ऐसी स्त्री से विवाह करता है जिसका जन्म 8, 17 या 26 तारीख को हुआ हो तो वह निश्चित रूप से देखेगा कि 4 और 8 अंक किसी और अंक से अधिक उसके जीवन को प्रभावित करते रहेंगे और अधिकतर दुर्भाग्य, दुःख, और अवसाद उत्पन्न करेंगे। इस पुरुष और उस स्त्री के लिये उचित है कि 4 और 8 अंक से सम्बन्धित प्रत्येक तारीख या वस्तु, का परिहार करें और यदि सम्भव हो तो अंक 1 के क्रम के अंकों को प्रयुक्त करें। यदि ऐसा सम्भव न हो तो 2-7 क्रम के अंकों का इस्तेमाल करें।

ऐसा देखा गया है कि कदाचित आकर्षणपूर्ण प्रदोलन के कारण 4

और 8 अंक वाले लोग परस्पर एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं; परन्तु सांसारिक दृष्टि से यह संयोजन सौभाग्य सूचक नहीं माना जा सकता। वे एक दूसरे के प्रति अत्यन्त अनुरक्ति और निष्ठा की भावना रखते हैं और एक दूसरे की बीमारी या अन्य दुःखद परिस्थितियों के समय पर सब प्रकार का बलिदान करने को तैयार रहते हैं; परन्तु इन दोनों के संयोजन से उनका जीवन बाधाओं, आपदाओं, दुर्भाग्य और विषम घटनाओं से पूर्ण होता है।

8 अंक के व्यक्ति और दूसरे व्यक्ति चाहे वे जितने महान् और उत्कृष्ट गुणों वाले क्यों न हों उन्हें अपने शुभ कार्यों और त्याग का पुरस्कार बहुत कम प्राप्त होता है। यदि वे किसी उच्च पद या स्थान पर पहुंच जाते हैं तो उनका उत्तरदायित्व उनको गम्भीर और चिन्तित बनाये रखता है। वे अत्यन्त धनवान् भी बन जाते हैं; परन्तु उनका वैभव और धन भी उन्हें प्रसन्न नहीं रखता और प्रेम और निष्ठा के लिये उन्हें बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है।

यदि 4 और 8 अंक उनके जीवन में बार-बार दृष्टिगोचर हों और निराशा और दुर्भाग्य का कारण बनें तो दृढ़ निश्चित होकर जिनका मूल अंक 8 बनता है उनसे दूर रहना चाहिये। जैसा उदाहरण देकर हम पहले बता चुके हैं कि उन्हें अपना नाम इस प्रकार बदल लेना चाहिये जिससे 1, 3, 5 या 6 अंक उत्पादित हो जायें और वे अपने काम इन अंकों से बनी तारीखों में ही सम्पन्न करें। ऐसा करने से वे देखेंगे कि उनके भाग्य में कैसा अदभुत् परिवर्तन आ जाता है।

यदि वह अपने अंक को बदलना नहीं चाहते तो फिर उनके लिये यही उचित है कि अपने महत्त्वपूर्ण कार्य 8, 17, 26, 4, 13, 22 या 31 तारीख को ही सम्पन्न करें।

इस समस्या को सुलझाने का एक उपाय और भी है : 4 और 8 अंकों के संयोजन से प्रभावित व्यक्ति उस अवधि काल के अंक को भी अपना सकते हैं जिसमें उनका जन्म हुआ हो। उदाहरण के लिये यदि किसी व्यक्ति का जन्म 19 फरवरी और मार्च 20 के बीच में हुआ है तो वह उस अवधि काल के अंक 3 को अपना सकता है। इस प्रकार यदि किसी व्यक्ति

का जन्म 22 फरवरी, 26 फरवरी, या 4, 8, 13. 17, 22 मार्च को हुआ हो तो वह अपना महत्त्वपूर्ण कार्य लाभ के साथ इस अवधि काल में 3 क्रम की तारीख में कर सकता है। वास्तव में ऐसे व्यक्तियों को अपना जन्मांक अंक 8 के अवधि कालों को छोड़कर भुला देना चाहिये।

यही नियम अंक 8 के अवधिकालों को छोड़कर अन्य अंकों के अवधि कालों पर भी लागू होगा। दिसम्बर 21 से जनवरी 20 का अंक 8 का सकारात्मक अवधिकाल और जनवरी 21 से फरवरी 19 तक इस अंक का नकारात्मक अवधिकाल होता है। यदि इन दो अवधिकालों में जन्म हुआ हो तो 4 और 8 अंक वाले व्यक्तियों को इनके अंक को नहीं अपनाना चाहिये; बल्कि उनके लिये लाभप्रद होगा यदि इन अवधिकालों के बिल्कुल विपरीत अवधिकालों के अंकों को अर्थात् जून 21 से जुलाई 20 (इसके अंक हैं 2-7) और जुलाई 21 से अगस्त 20 (इनके अंक हैं 1-4) चुनना चाहिये। ऐसा करने से 4 और 8 अंक वाले स्वयं अनुभव करने लगेंगे कि उनकी परिस्थितियों में कितना शुभ परिवर्तन होने लगा है।

इस सम्बन्ध में 2 अंक वाले व्यक्तियों पर अंक 4 और 8 का प्रभाव बता देना उचित होगा। अंक 2 वाले व्यक्ति प्रायः अनुभव करते हैं कि 2, 11, 20 और 29 के अतिरिक्त 8 अंक भी उनके जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इसका कारण यह है कि 2 का चार गुना 8 एक अत्यन्त शक्तिशाली अंक है और अपने से कमजोर अंक 2 पर अधिकार जमाने का प्रयत्न करता है; परन्तु अंक 8 अंक 2 वाले के लिये सुखद संयोजन नहीं है और जब वह अपना प्रभाव डालने में सफल हो जायेगा तो 2 अंक वाले व्यक्तियों को दुखद घटनाओं और निराशा का ही सामना करना पड़ेगा। उन्हें 8 अंक के प्रति सतर्क रहना चाहिये। 4 अंक भी 2 अंक वाले व्यक्तियों पर काफी प्रभाव डालता है; परन्तु इसका यह कारण नहीं है कि 4 दो का दुगना है; बल्कि इसलिए कि वह उन दो अंकों (2-7) में से है जिससे अंक 1-4 से आंतरिक परिवर्तन होता है।

## 21

## अंक और रोग

विभिन्न अंकों से प्रभावित व्यक्तियों को अलग-अलग प्रकार के रोगों से पीड़ित होने की सम्भावना होती है। अनुभव से ऐसा देखा गया है कि जीवन के कुछ वर्ष, वर्ष के कुछ महीने, और महीनों के कुछ दिन स्वास्थ्य की दृष्टि से उनके लिये शुभ और अशुभ होते हैं। इस प्रकरण में हम इसी विषय पर कुछ प्रकाश डाल रहे हैं। इस ज्ञान से लाभ यह होगा कि लोग अपने ऊपर जो रोग होने की संभावना है उससे बचने के लिये पहिले ही से सावधानी बरत लें।

### अंक 1

1 अंक के वे व्यक्ति होते हैं जिनका जन्म किसी भी महीने की 1, 10, 19 या 28 तारीख को हुआ हो। उनके लिये सम्भावित रोग हैं—हृदय के विकार, धड़कन, रक्त का अनियमित परिसंचरण और मध्यावस्था और वृद्धावस्था में रक्तचाप में वृद्धि। उनको आंखों के रोग भी हो सकते हैं। उनको चाहिये कि वे समय-समय पर अपनी आंखों की परीक्षा करवाते रहें।

1 अंक से प्रभावित लोगों के लिये उनकी उम्र का 19वां, 28वां, 37वां और 46वां वर्ष ऐसा होगा जिसमें या तो स्वास्थ्य में महत्त्वपूर्ण सुधार होगा या स्वास्थ्य में काफी गिरावट होगी।

उनके लिये स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखने के महीने हैं—अक्टूबर, दिसम्बर और जनवरी। इन महीनों में उन्हें आवश्यकता से अधिक परिश्रम नहीं करना चाहिये।

### अंक 2

अंक 2 से प्रभावित वे व्यक्ति होते हैं जिनका जन्म किसी भी महीने की 2, 11, 20 या 29 तारीख को हुआ हो। उनके लिये सम्भावित

रोग हैं—उदर विकार, हाजमे की खराबी, गैस विकार, अंतड़ियों की सोजिश, ट्यूमर आदि।

2 अंक से प्रभावित व्यक्तियों के लिये उनकी उम्र का 20वां, 25वां, 29वां, 43वां, 47वां, 52वां और 65वां वर्ष ऐसा होगा जिससे उनके स्वास्थ्य में या तो महत्त्वपूर्ण सुधार होगा या काफी गिरावट हो सकती है।

स्वास्थ्य के सम्बन्ध में उनके लिये अशुभ महीने हैं—जनवरी, फरवरी और जुलाई।

## अंक 3

अंक 3 से प्रभावित वे व्यक्ति होते हैं जिनका जन्म किसी भी महीने की 3, 12, 21 या 30 तारीख को हुआ हो। जिन रोगों की संभावना उन्हें होती हैं वे हैं—न्यूराइटिस (स्नायुमंडल का रोग), साइटिका (इस रोग में नितम्ब या पीठ के निचले भाग तथा पैरों में जोर का दर्द होता है), और त्वचा के रोग।

स्वास्थ्य के सम्बन्ध में उनके लिये अशुभ महीने हैं—दिसम्बर, फरवरी, जून और सितम्बर।

अंक 3 से प्रभावित व्यक्तियों के लिये उनकी उम्र का 12वां, 21वां, 39वां, 48वां और 57वां वर्ष स्वास्थ्य में परिवर्तन (शुभ या अशुभ) के लिये महत्त्वपूर्ण हो सकता है।

## अंक 4

अंक 4 से प्रभावित वे व्यक्ति होते हैं जिनका जन्म किसी भी महीने की 4, 13, 22 या 31 तारीख को हुआ हो। वे प्रायः ऐसे रहस्यपूर्ण रोगों से ग्रस्त होते हैं जिनका निदान करना कठिन होता है। अन्य रोग जिनकी ओर उनकी प्रवृत्ति होती है—विषाद रोग (गहरी उदासी), मानसिक विकार, रक्त की कमी हो जाना (अनेमिया), सिर और पीठ में दर्द होना, मूत्राशय और गुरदे के विकार।

स्वास्थ्य के सम्बन्ध में उनके लिये अशुभ महीने हैं—जनवरी, फरवरी, जुलाई, अगस्त और सितम्बर।

अंक 4 से प्रभावित व्यक्ति के लिये उनकी उम्र का 13वां, 22वां, 31वां, 40वां, 49वां और 58वां वर्ष स्वास्थ्य में परिवर्तन (शुभ या अशुभ) के लिये महत्त्वपूर्ण हो सकता है।

## अंक 5

अंक 5 से प्रभावित वे व्यक्ति होते हैं जिनका जन्म किसी भी महीने की 5, 14 या 23 तारीख को हुआ हो। इन व्यक्तियों में अपने स्नायुमंडल तथा मस्तिष्क पर आवश्यकता से अधिक भार डालने की प्रवृत्ति होती है। उनके लिये संभावित रोग हैं न्यूराइटिस, मुख, आंखों और हाथों में फड़-फड़ाहट, नींद न आना, लकवा आदि। अच्छी नींद, विश्राम और शांतिपूर्ण वातावरण उनके लिये सबसे अधिक लाभदायक औषधियां हैं।

स्वास्थ्य के सम्बन्ध में उनके लिये अशुभ महीने हैं—जून, सितम्बर दिसम्बर।

अंक 5 से प्रभावित व्यक्तियों के लिये उनकी उम्र का 14वां, 23वां, 41वां और 50वां वर्ष स्वास्थ्य में परिवर्तन के लिये महत्त्वपूर्ण हो सकता है।

## अंक 6

अंक 6 से प्रभावित वे व्यक्ति होते हैं जिनका जन्म किसी भी महीने की 6, 15 या 24 तारीख को हुआ हो। इन लोगों को गले, नाक और फेफड़ों के ऊपरी भाग में विकार हो सकते हैं। ये व्यक्ति यदि खुली हवा में रहें और नियमित रूप से व्यायाम करें तो बिल्कुल स्वस्थ रह सकते हैं। जो स्त्रियां अंक 6 से प्रभावित होती हैं उनके स्तनों में रोग होने की संभावना होती है। जीवन के उतरते भाग में इनके हृदय पर भी दुष्प्रभाव पड़ने और उसके कारण रक्त परिसंचरण में अनियमितता हो जाने की सम्भावना होती है।

स्वास्थ्य के सम्वन्ध में इन व्यवितयों के लिये अशुभ महीने मई, अक्टूवर और नवम्वर होते हैं।

6 अंक के प्रभावित व्यक्तियों के लिये उनकी उम्र का 15वां, 24वां 42वां, 51वां और 60वां वर्ष स्वास्थ्य में परिवर्तन (शुभ या अशुभ) के लिये महत्त्वपूर्ण हो सकता है।

## अंक 7

अंक 7 से प्रभावित वे व्यक्ति होते हैं जिनका जन्म किसी भी महीने की 7, 16 या 25 तारीख को हुआ हो। ये लोग साधारण से कारण से चिंतित हो जाते हैं और चिड़चिड़ाने लगते हैं। जब तक उनका काम सुचारू रूप से चलता रहता है वे चाहे जितना काम हो सरलता से कर डालते हैं; परन्तु यदि परिस्थितिवश या किसी व्यक्ति या व्यक्तियों द्वारा किए कार्यों द्वारा वे चिन्तित हो जाते हैं तो तिनके को पहाड़ समझने लगते हैं और वहुत शीघ्र हताश और उदास हो जाते हैं। मानसिक तौर पर उनमें पर्याप्त क्षमता होती है पर शरीर से वे कमजोर होते हैं। उनकी त्वचा ऐसी नाजुक होती है कि साधारण रगड़ से उसमें दाने, फोडे आदि उत्पन्न हो जाते हैं। वदहजमी के कारण भी उनकी त्वचा पर दुष्प्रभाव पड़ता है।

इन लोगों के लिये स्वास्थ्य के सम्वन्ध में अशुभ महीने जनवरी, फरवरी, जुलाई और अगस्त होते हैं।

7 अंक से प्रभावित व्यक्तियों के लिये उनकी उम्र का 7वां, 16वां, 25वां, 34वां, 43वां, 52वां और 61वां वर्ष स्वास्थ्य में परिवर्तन (शुभ या अशुभ) के लिये महत्वपूर्ण हो सकता है।

## अंक 8

अंक 8 से प्रभावित वे व्यक्ति होते हैं जिनका जन्म किसी भी महीने की 8, 17 या 26 तारीख को हुआ हो। इन व्यक्तियों को जिन रोगों की ओर से मुख्यतः भय होता है वे हैं—जिगर की खरावी, पित्त-विकार, अंतड़ियों का ठीक काम न करना या उनमें सोजिश। उनको सिरदर्द, रक्त-

विकार और गठिया जैसे रोग भी हो सकते हैं। उनको मांस छोड़कर हरी सब्जियां अधिक खानी चाहियें।

इन लोगों के लिये स्वास्थ्य के सम्बन्ध में अशुभ महीने दिसम्बर, जनवरी, फरवरी और जुलाई होते हैं।

8 अंक से प्रभावित व्यक्तियों के लिये उनकी उम्र का 17वां, 26वां, 35वां, 44वां, 53वां और 62वां वर्ष स्वास्थ्य में परिवर्तन (शुभ या अशुभ) के लिये महत्त्वपूर्ण हो सकता है।

## अंक 9

अंक 9 से प्रभावित वे व्यक्ति होते हैं जिनका जन्म किसी भी महीने की 9, 18 या 27 तारीख को हुआ हो। इन लोगों को जिन रोगों के प्रकोप का भय होता है वे हैं—सब प्रकार के ज्वर, खसरा, चेचक, स्कारलेट ज्वर (Scarlatina) आदि। इन लोगों को सादा भोजन करना और मदिरापान से परहेज करना चाहिये।

इन लोगों के लिये स्वास्थ्य के सम्बन्ध में अशुभ महीने—अप्रैल, मई, अक्टूबर और नवम्बर होते हैं।

9 अंक से प्रभावित व्यक्तियों के लिये उनकी उम्र का 9वां, 18वां, 27वां, 36वां, 45वां 54वां और 63वां वर्ष, स्वास्थ्य के परिवर्तन (शुभ या अशुभ) के लिये महत्त्वपूर्ण हो सकता है।

ऊपर अंकों से सम्बन्धित रोग के विषय में जो कुछ लिखा गया है वह कीरो के कई दशकों के निजी अनुभव और अनुसन्धान पर आधारित है।

## 22

## जन्म के अंकों के प्रभाव के अनुसार अनुकूल, व्यवसाय में सफलता तथा भाग्योन्नति देने वाले नगर के चुनाव का तरीका

इस प्रकरण में दिये हुये नियमों के अनुसार कोई भी व्यक्ति यह जानने

में सक्षम हो सकता है कि वह जिस शहर या नगर में रह रहा है उसका प्रदोलन (Vibration) उसके जन्मांक से समन्वय रखता है या नहीं। लोगों को चाहिये कि जहां तक सम्भव हो सके वह अपने रहने और व्यवसाय के लिये वही स्थान चुनें जो उनके जन्मांक के अनुकूल हो। ऐसा करने से निःसन्देह उनको सुख सौभाग्य प्राप्त होगा।

अक 1 से प्रभावित व्यक्ति अर्थात् जिनका जन्म किसी भी महीने की 1,10,19 या 28 तारीख को हुआ हो निम्नलिखित नगरों को अपने अनुकूल पायेंगे। उदाहरण के लिये हम MAN CHESTER को लेते हैं।

M A N C H E S T E R
4 1 5 3 5 5 3 4 5 2=37=10=1

अन्य नगर जिनका मूल अंक 1 है, नीचे दिये जाते हैं :—

BIRMINGHAM, BOSTON,
NEWYORK, ALEXANDRIA,

1 अंक वाले भारतीय नगर हैं:—HAZARI BAGH, JAIPUR, KANAUJ, MIDNAPORE, PATHANKOT, PATIALA, ROURKELA, SANTI NiKETAN, TIRUCHIRA PPALI, UDAIPUR, WARDHA और PATNA।

जैसा हम पहले बता चुके हैं, 1 अंक वाला व्यक्ति 1-4 क्रम के अंकों से सम्बन्धित है और 2-9 क्रम के अंकों की उसके प्रति अत्यन्त समन्वयता और सहानुभूति है। इस तरह 1, 2, 4, 7 अंक वाले व्यक्ति ऐसे किसी भी स्थान को चुन सकते हैं जिसका मूल अंक 1, 2, 4 या 7 हो।

जन्मांक 2 वाले व्यक्ति अर्थात जिनका जन्म किसी भी महीने की 2, 11, 20 या 29 तारीख को हुआ है, अपने लिये वह स्थान चुनें जिसका मूल अंक 2 हो। 1, 4, 7 अंक वाले स्थान भी उनके लिये अनुकूल और शुभ फलदायक होंगे। उदाहरण के लिये हम इंग्लैण्ड के LEEDS नगर को लेते हैं।

L E E D S
3 5 5 4 3=20 - 2

2 अंक वाले अन्य कुछ नगर हैं PLYMOUTH, LOS ANGELES, NORWICH, BEIRUT, ISLAMABAD और OSLO।

2 अंक वाले प्रमुख भारतीय नगर हैं BANGALORE, BHUBANESWAR, CHANDIGARH, KOHIMA, JORHAT, NAINITAL, VARANASI CHAPRA और GONDA।

जन्मांक 3 वाले व्यक्ति अर्थात जिनका जन्म 3, 12, 21, या 30 तारीख को हुआ हो। उदाहरण के लिये DUBLIN को ले सकते हैं।

DUBLIN
462315 = 21 = 3

3 अंक वाले कुछ विदेशों के नगर हैं MOSCOW, MELBOURNE, YORK, JERUSALEM, TOKYO, HARVARD, BAHRAIN, LISBON।

3 अंकों वाले मुख्य भारतीय नगर हैं ALLAHABAD, AMBALA, BIJAPUR, DARJEELING, DHARWAR, JAMSHEDPUR, KHARAGPUR, KORAPUT, NASIK, NELLORE, PORT BLAIR SHILLONG, SIMLA और SYLHET।

4 अंक वाले व्यक्ति अर्थात जिनका जन्म 4, 13, 22 या 31 तारीख को हुआ हो, उदाहरण के लिये LONDON को ले सकते हैं :—

LONDON
375475 = 31 = 4

4 अंक वाले कुछ विदेशों के नगर हैं BRISTOL, WASHINGTON, TEHRAN, QUEBEC और MONTREAL। 4 अंक वाले मुख्य भारतीय नगर हैं BHAGALPUR, BHARATPUR, BHILAI, DHANBAD, HOSHIARPUR, IMPHAL, MIRZAPUR MYSORE, NABDIP, RAE BARELI, VELLORE और VIJYAWADA।

5 अंक वाले व्यक्ति अर्थात जिनका जन्म 5, 14 और 23 तारीख को हुआ हो, CHICAGO का उदाहरण ले सकते हैं।

C H I C A G O
3 5 1 3 1 3 7=23=5

5 अंक वाले कुछ अन्य विदेशों के नगर हैं CAIRO, LAHORE, KABUL और VIENNA. इस अंक वाले मुख्य भारतीय नगर हैं— AKOLA, ASANSOL, BHUJ, CUDDAPAH, DEHRA DUN, DURGAPUR, JABALPUR, JAMNAGAR, LUCKNOW, MATHURA, QUILON और RAMPUR।

केवल 5 अंक ऐसा अंक है जिसका सहयोग और समन्वय सभी अंकों से है। अतः 5 अंक वालों के लिये सभी अंक वाले नगर अनुकूल प्रमाणित होंगे। 5 अंक वाला नगर सबसे अधिक शुभ होगा।

6 अंक वाले अर्थात जिनका जन्म 6,15 या 24 तारीख को हुआ हो LIVERPOOL को उदाहरण के लिये ले सकते हैं।

LIVERPOOL
316528773=42=6

6 अंक वाले कुछ अन्य विदेशों के नगर हैं—DOVER, PARIS, OXFORD, SANFRANCISCO, SEOUL, NAIROBI और WARSHAW। इस अंक वाले मुख्य भारतीय नगर हैं—DARBHA-NGA, GAYA, HISSAR, INDORE, JHANSI, JODHPUR, KANPUR, MAHE, PUNE, SECUNDERABAD, UJJAIN, VISAKHAPATNAM और MADRAS।

7 अंक वाले अर्थात वे व्यक्ति जिनका जन्म 7, 16, या 25 तारीख को हुआ हो HOLLY WOOD को उदाहरण के लिये ले सकते हैं।

HOLLY WOOD
573316774=43=7

7 अंक वाले कुछ अन्य विदेशों के नगर है—AUCKLAND, HONKONG, और VENICE. इस अंक वाले मुख्य भारतीय नगर

हैं—AGARTALA, AGRA, ALIGARH, BHOPAL, CALCUTTA KOSHIKODE, COIMBTORE, NEW DELHI, DWARKA, FAIZABAD, GANGTOK, HYDERABAD, JAMMU, NAGPUR, PONDICHERRY और SURAT.,

7 अंक के व्यक्ति 1, 2 और 4 अंक वाले नगर अपने लिये अनुकूल और सौभाग्य सूचक पायेंगे।

8 अंक वाले व्यक्ति अर्थात् वे व्यक्ति जिनका जन्म 8, 17 या 26 तारीख को हुआ हो GLASGOW को उदाहरण के लिये ले सकते हैं।

GLASGOW
3313376=26=8

8 अंक वाले कुछ विदेशों के नगर हैं—BELFAST, HULL और BOURNE MOUTH. इस अंक वाले मुख्य भारतीय नगर हैं—AURANGABAD, BARODA, BELGAON, BELLARY, BIKANER, BOMBAY, BURDWAN, DHOLPUR, DIBRUGARH, HOWRAH, MEERUT, PANAJI, PURI, RAMESHWARAM, RANCHI और TRIVANDRUM।

यह बताया ही जा चुका है कि 4 और 8 अंक वालों के लिए 4 या 8 अंक वाले स्थान शुभ नहीं होते। उनको अपने निजी सुख, सौभाग्य और व्यावसायिक सफलता के लिये 1, 3, 5, 6 अंकों वाले स्थानों को अपने रहने के लिए चुनना चाहिये।

9 अंक वाले व्यक्ति अर्थात् वे जिनका जन्म 9, 18, या 27 तारीख को हुआ हो BLACKPOOL को उदाहरण के लिये ले सकते हैं।

BLACKPOOL
231328773=36=9

9 अंक के कुछ अन्य विदेशों के नगर हैं—BERLIN, ROME, TORONTO और BRUSSELS. इस अंक वाले मुख्य भारतीय नगर

हैं—ALMORA, AMRITSAR, BAREILLY, COOCH-BIHAR, GORAKHPUR, JALPAIGURI, MONGHYR और PORBANDER,

जैसा हम पहले कह चुके हैं 3, 6, 9 के क्रम के अंकों को हम दाहिने बायें, ऊपर नीचे, आड़े तिरछे जोड़ें तो सदा मूल अंक 9 ही उत्पादित होगा। इसलिये इन तीनों में अंकों में पूर्ण रूप से परस्पर सहानुभूति और समन्वयता हैं। इन अंकों वाले 3, 6, 9 अंकों वाले नगर में रहने से सदा वही फल प्राप्त करेंगे जैसे वे अपने अंक के नगर में रह रहे हों।

ऊपर जो कुछ हमने जन्मांक से नगर के अंकों के समन्वय के सम्बन्ध के लिये कहा है, वह कीरो द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार हैं; परन्तु हमने प्राय: देखा है कि 2 जन्मांक वाले व्यक्तियों को 8 अंक का नगर काफी सौभग्यपूर्ण प्रमाणित हुआ है। उदाहरण के लिये प्रसिद्ध अभिनेता अमिताभ बच्चन को ले लीजिये। अभिताभ बच्चन का जन्म 11 अक्टूबर को हुआ था। उनका जन्मांक 2 हुआ। वह 7 अंक के कलकत्ता नगर में सबसे पहले व्यवसाय के लिये गये। 7 अंक 2 अंक वालों के लिये कीरो ने बिल्कुल अनुकूल बताया है। कलकत्ता में अभिताभ जी को अच्छा पद अवश्य मिला; परन्तु 8 अंक वाले बम्बई में उन्हें जो उन्नति, ख्याति और समृद्धि के शिखर पर पहुंचने का अवसर प्राप्त हुआ है वह सर्व विदित हैं। इस उदाहरण के आधार पर हमें विश्वास करने को विवश होना पड़ता है कि 2 अंक और 8 अंक में परस्पर समन्वय है। इस सम्बन्ध में इंगलैंड के प्रसिद्ध ज्योतिष विद्वान, सेफीरियल ने अपनी पुस्तक 'THE NUMBERS BOOK' में लिखा है—

"2 Vibrates to 8, attracts 9 and 7; and disagrees with 5. It is passive to 1,3,4 and 6".

हमारा पाठकों से अनुरोध है क्यों कि इस प्रकरण का विषय सबके लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है, उनके लिये उचित है कि वह व्यावहारिक रूप से परीक्षण करके देखें कि कौन-सा जन्मांक किस नगर के लिये अनुकूल प्रमाणित होता है। यह पुस्तक हमने कीरो के अंक विद्या से सम्बन्धित

विचारों को आधार लेकर लिखी है। इसलिए हम अन्य लेखकों के विचारों को देकर पाठकों को उलझन में नहीं डालना चाहते। यदि सम्भव हो सका तो सेफोरियल के विचारों पर आधारित हम एक अलग पुस्तक पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेंगे।

## 23

## संयुक्त राष्ट्र अमरीका के कुछ भूतपूर्व राष्ट्रपतियों के नामों द्वारा उनकी जीवन प्रगति का विवेचन

इस प्रकरण में हम कीरो द्वारा किये गये अमरीका के संयुक्त राष्ट्र के कुछ राष्ट्रपतियों की जीवन प्रगति का विवेचन दे रहे हैं। इस विवेचन से पाठकों को व्यावहारिक रूप में अंक विद्या सम्बन्धी कीरो द्वारा निर्धारित नियमों का प्रयोग करने में पर्याप्त सहायता मिलेगी।

| GEORGE | WASHINGTON |
|---|---|
| 357235 | 6135153475 |
| 25=7 | 40=4 |

7+4=11=2

GEORGE नाम से संयुक्त अंक बनता है 25 और मूल अंक 7। प्रकरण 13 में दिये हुये संयुक्त अंकों के अर्थ के अनुसार इस संयुक्त अंक के सम्बन्ध में लिखा है—

'यह अंक यह दर्शाता है कि अनुभव द्वारा शक्ति प्राप्त होती है और दूसरों की गतिविधियों के अवलोकन करने से लाभ होगा। यह सर्वथा शुभ अंक नहीं माना जाता क्योंकि प्रारम्भिक जीवन में संघर्ष और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, तब कहीं जाकर सफलता प्राप्त होती है। भविष्य विषयक प्रश्न के लिये यह शुभ अंक माना जाता है।'

WASHINGTON शब्द का संयुक्त अंक 40 है और मूल अंक 4। प्रकरण 13 में 40 संयुक्त अंक का अर्थ इन शब्दों में दिया गया है (40 लिये 30 और 31 अंक के अर्थ को देखिये। क्योंकि 40 के सामने लिखा अंक का अर्थके है कि इसका प्रभाव अंक 31 के समान है और अंक 31 के सामने लिखा है कि यह अंक प्रभाव में पिछले अंक के समान है)"।

"इस अंक से प्रभावित व्यक्ति अत्यन्त बुद्धिमान तथा प्रतिभा सम्पन्न होते हैं। वे आर्थिक संचय की ओर विशेष ध्यान न देकर अपने आपको मानसिक स्तर पर ऊंचा उठाने का प्रयत्न करते हैं।"

यह इस तथ्य से पूर्ण रूप से प्रमाणित हो जाता है कि वाशिङ्गटन ने अपनी सेना के कमांडर-इन-चीफ के पद से इस्तीफा दे दिया और अपने अधीनस्थ सेनाध्यक्षों से अन्तिम मिलन में कहा—'स्नेह और आभार से पूर्ण हृदय से अब मैं आपसे विदा लेता हूं।'

अमरीकी कांग्रेस को सम्बोधित करते हुये उन्होंने कहा—'जिस काम का बीड़ा मैंने उठाया था वह सफलतापूर्वक समाप्त हो गया है। अब शेष उत्तरदायित्व मैं आप लोगों के हाथ में सौंपता हूं और अपने पद से अवकाश लेता हूं।'

उस महान व्यक्ति ने, जिसको अमरीका के संयुक्त राष्ट्र का 'राष्ट्र-पिता' माना है, अपनी कठिन और लम्बी सेवाओं तथा कर्त्तव्य परायणता के लिये कोई पुरस्कार नहीं स्वीकार किया और सेवा से अवकाश लेकर वे माउन्ट वरनन में अपने घर में जाकर रहने लगे।

जार्ज वाशिंगटन का लब्ध प्रतिष्ठित नाम उनके नाम के निगूढ़ अर्थ की यथार्थता को पूर्णरूप से प्रमाणित करता है।

यदि GEORGE के मूल अंक 7 और WASHINGTON के मूल अंक 4 को जोड़ा जाय तो 11 संयुक्त अंक बनता है और 2 एकल अंक। यदि 11 को उसके उच्चतर अंक 20 तक बढ़ा दिया जाये तो हमें प्रतीकात्मक शब्द 'जागृति' और 'निर्णयन' (The Awakening and The Judgement) प्राप्त होते हैं।

यदि किसी व्यक्ति के जन्मांक और नामांक के प्रदोलनों में समन्वयता

होती है तो हमें उसके स्वभाव के गुणों का ज्ञान प्राप्त करने में बहुतसहायता मिलती है। यदि जन्मांक और नामांक में सामंजस्य नहीं होता तो जातक की जीवन प्रगति निश्चित नहीं होती।

GEORGE WASHINGTON के पूरे नाम का मूल अंक 2 है और नाम के प्रथम और दूसरे भागों के मूल अंक क्रमश: 7 और 4 हैं।

WASHINGTON का जन्मदिन 22 फरवरी को मनाया जाता है—जिसको कीरो की पद्धति के अनुसार मूल अंक 4—1 के रूप में लिखा जायेगा। उनके अंतर्द्वंदल अंक हैं 2—7। कुछ लोगों का कहना है कि पुराने कलेण्डर के अनुसार वाशिंगटन की जन्म तारीख 11 फरवरी थी। इससे प्रभाव में कोई परिवर्तन नहीं होगा; क्योंकि उनके पूरे नाम का मूल अंक 2 है। इस प्रकार जन्मांक और नामांक के प्रदोलनों में पूर्ण रूप से समन्वयता है। यही कारण है कि उनका नाम संयुक्त राष्ट्र अमरीका में ही नहीं, वरन् संसार के इतिहास में अमर बन गया है।

| A B R A H A M | L I N C O L N |
|---|---|
| 1 2 2 1 5 1 4 | 3 1 5 3 7 3 5 |
| 16=7 | 27=9 |
| | 7+9=16=7 |

एब्रेहाम लिंकन का जन्म 11 फरवरी 1809 को हुआ था और इनकी हत्या शुक्रवार 14, अप्रैल 1865 की रात्रि को हुई थी।

लिंकन के जन्मांक 3 और नामांक 7 में समन्वयता नहीं है। जन्मांक 3 जिसका अधिष्ठाता ग्रह बृहस्पति है, एक शक्तिशाली अंक है। वह महत्त्वाकांक्षा और प्रभुत्वता का प्रतीक है। 3 अंक वालों के सम्बन्ध में 5वें प्रकरण में आप निम्नलिखित विवरण पायेंगे :—

"3 अंक वाले व्यक्ति निश्चित रूप से महत्त्वाकांक्षी होते हैं और किसी अधीनस्थ पद में वे संतुष्ट नहीं रहते। उनका ध्येय संसार में ऊंचा उठने का होता है जिससे वे दूसरों के ऊपर प्रभुत्व रख सकें। वे अनुशासन प्रिय होते हैं—उसमें कठोर भी होते हैं और जो निर्देश देते हैं उसका पालन करवाकर रहते हैं। व्यापार, सरकारी नौकरी या किसी भी क्षेत्र

में वे सर्वोच्च स्थान पर पहुंच जाते हैं। स्थल सेना, जल सेना या सरकारी संस्थानों में वे प्रायः उच्च पदों पर आसीन होते हैं और अपने दायित्व को पूर्णरूप से निभाने में सफल होते हैं।"

ABRAHAM LINCOLN का मूल अंक अपने गुण प्रभाव में निर्बल है जैसा कि प्रकरण 9 में कहा गया है :—

"···7 अंक से प्रभावित व्यक्ति अत्यन्त स्वतंत्र स्वभाव के होते हैं। उनमें मौलिकता होती है और व्यक्तित्व भी उनका अन्य अंकों के लोगों से पृथक होता है···जिस कार्य क्षेत्र में भी वे रुचि लें उनमें दर्शन (philosophy) का दृष्टिकोण अवश्य आ जाता है···।"

प्रकरण 9 में यह भी बताया गया है कि 7 अंक से प्रभावित व्यक्तियों में एक ऐसी विचित्र आकर्षण शक्ति होती है जिससे दूसरों पर अत्यन्त प्रभाव पड़ता है।

ऊपर दिये सब गुण एब्रेहम लिंकन में विद्यमान थे।

संयुक्त अंकों का रहस्यमय प्रभाव प्रदर्शित करने के लिये हम जन्मांक 3 को नामांक 7 में जोड़ते हैं। योगफल देता है संयुक्तांक 10. अब देखिये प्रकरण 13, उसमें 10 अंक के विषय में लिखा है :—

'इस अंक का प्रतीकात्मक प्रतिरूप है 'भाग्यचक्र' (Wheel of Fortune)। यह प्रतिष्ठा या मर्यादा, निष्ठा या आस्था और उत्थान और पतन का अंक है। इस अंक से प्रभावित व्यक्ति अपनी इच्छानुसार, भलाई या बुराई से नाम या बदनामी अर्जित करता है। यह एक शुभ अंक माना जाता है और इससे प्रभावित व्यक्ति अपनी योजनाओं या कार्यों को कार्यान्वित करने में समर्थ होते हैं।"

अंकों के निगूढ़ प्रभाव को प्रमाणित करने के लिये हम उनके जन्म के संयुक्त अंक पर विचार करते हैं। संयुक्त अंक है 12। इसके विषय में प्रकरण 13 में लिखा है—

'अंक 12—यह अंक मानसिक चिंता और यातनापूर्ण जीवन का द्योतक है। इसका प्रतीकात्मक प्रतिरूप है 'बलिदान' (The Sacrifice) या 'उत्पीड़ित' (The Victim)। यह अंक अपने से प्रभावित व्यक्ति को,

दूसरों के षड़यन्त्र द्वारा या उनके स्वार्थ की वेदी पर बलिदान कर दिये जाने का पूर्वाभास देता है।"

अब नाम के संयुक्त अंक 16 का प्रभाव देखिये। उसी प्रकरण में 16 अंक के सम्बन्ध में लिखा है—

"इस अंक की अत्यन्त विचित्र निगूढ़ प्रतीकात्मकता है। उसका चित्रण किया है किसी ऐसे टावर (बुर्ज) के रूप में जिसपर बिजली का आघात हुआ है और जहां से एक मुकट धारी व्यक्ति नीचे गिर रहा है। इसकी प्रतिरूपता को 'ध्वस्त दुर्ग' (The shattered citadel) भी वर्णित किया गया है।"

जब हमारा ध्यान थियेटर में बैठे लिंकन की, शुक्रवार अप्रैल 14 की रात्रि को, सहसा हत्या किये जाने की ओर जाता है, तो हम देखते हैं कि उनसे सम्बन्धित अंकों के प्रभाव की भूमिका में कितनी यथार्थता है। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि एब्रेहाम लिंकन संयुक्त राष्ट्र के 16वें राष्ट्रपति थे। इस संख्या का मूलांक वही है जो उनके नाम का है।

WARREN G. HARDING

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के 29वें राष्ट्रपति का जन्म ब्लूमिंग ग्रोव नामक नगर में 2 नवम्बर 1865 को हुआ था। उनकी मृत्यु विष पान से 3 अगस्त 1923 को हुई थी। उनकी सहसा मृत्यु उस समय हुई जब उनके प्रशासन के सम्बन्ध में जांच पड़ताल होने के कारण बहुत सनसनी फैली हुई थी।

| W A R R E N | G. | H A R D I N G |
|---|---|---|
| 6 1 2 2 5 5 | 3 | 5 1 2 4 1 5 3 |
| 21=3 | 3 | 21=3 |

3+3+3=9

हारडिंग के जन्मांक 2 और नाम के मूल अंक 9 में बिल्कुल समन्वयता नहीं है। अंक 2 का अधिष्ठाता ग्रह चन्द्रमा है और अंक 9 का अधिष्ठाता ग्रह मंगल है। अतः इन दोनों अंकों के गुणों में परस्पर कोई सामंजस्यता नहीं है।

हम पहले बता चुके हैं कि जब जन्मांक और नामांक के समन्वयता नहीं होती तो सम्बन्धित व्यक्ति की जीवन प्रगति निष्कण्टक नहीं होती। हारडिंग के जीवन में यही हुआ। उनके प्रशासन कार्यों के सम्बन्ध में गहरा वाद-विवाद था और अन्त में उनके विरुद्ध जांच पड़ताल करवाने की नौबत आ पहुंची थी। यदि उनकी सहसा मृत्यु न हो जाती तो उनके प्रशासन के सम्बन्ध में और भी अधिक अनियमिततायें प्रकाश में आतीं।

क्योंकि जन्म तारीख से कोई संयुक्त अंक नहीं बनता है और न ही उनके अक्षरों से कोई संयुक्त अंक बनता है इसलिये हम जन्मांक 2 और नामांक को जोड़ते हैं। इससे संयुक्त अंक 11 बनता है। प्रकरण 13 में संयुक्त अंक 11 के सम्बन्ध में लिखा है—

"निगूढ़ विज्ञान के विद्वान इस अंक को अनिष्ट सूचक या अमांगलिक अंक मानते हैं। यह अंक छिपे हुये संकटों, संघर्ष और इसके द्वारा किये विश्वासघात की चेतावनी देता है। इस अंक का प्रतीकात्मक प्रतिरूप है 'एक मुट्ठी बन्द हाथ (A clenched Hand) और 'एक शेर जिसका मुंह बंधा हुआ है' (A Muzzled lion)

जब ऊपर जैसा अंक का प्रतीकात्मक अर्थ हो और जन्मांक और नामांक में घोर असमन्वय हो तो यह स्पष्ट है कि सम्बन्धित व्यक्ति का जीवन एक गड़बड़ झाला बन जायेगा।

वेरन जी हारडिंग के सम्बन्ध में एक विचित्र संयोग की बात यह भी देखी गयी कि जब 3 अगस्त 1923 को उनकी मृत्यु हुई तो वे 57 वर्ष के थे। 57 संख्या से संयुक्त अंक 12 बनता है जिसका विवरण प्रकरण 13 में इस प्रकार दिया गया है—

"यह अंक मानसिक चिंता और यातनापूर्ण जीवन का द्योतक है। इसका प्रतीकात्मक प्रतिरूप है—'बलिदान' (The Sacrifice) या 'उत्पीड़ित' (The Victim)। यह अंक अपने से प्रभावित व्यक्ति को दूसरों द्वारा षड़यंत्र या दूसरों द्वारा उनके स्वार्थ की वेदी पर बलिदान कर दिये जाने का पूर्वाभास देता है।"

जो राष्ट्रपति हारडिङ्ग के जीवन के इतिहास से परिचित हैं वे मान

जायेंगे कि उनके जन्मांक और नामांक उनके अन्तिम दिनों का कितना यथार्थ वर्णित करते हैं।

**THEODORE ROOSEVELT**

थियोडोर रूजवेल्ट संयुक्त राष्ट्र अमरीका के 26 वें राष्ट्रपति थे। उनका जन्म 29 अक्टूबर 1858 को हुआ था और मृत्यु 6 जनवरी 1919 को हुई थी।

| THEODORE | ROOSEVELT |
|---|---|
| 4 5 5 7 4 7 2 5 | 2 7 7 3 5 6 5 3 4 |
| 39=12=3 | 42=6 |

3+6=9

केवल, उनका मंगल से प्रभावित जन्मांक 9 ही नहीं है; बल्कि उनका जन्म जिस अवधिकाल में हुआ था उसका अंक 9 (नकारात्मक) था। इस प्रकार थियोडोर रूजवेल्ट जन्मांक और नामांक दोनों द्वारा मंगल ग्रह से पूर्ण रूप से प्रभावित थे। उनमें परिस्थितियों से जूझने का जन्म जात गुण था, वे स्वतंत्र स्वभाव के थे और उनके विषय में कोई कुछ भी कहे उसकी उन्हें किंचित मात्र की परवाह नहीं थी।

वे प्रेसीडेन्ट न बनने पायें इसलिये उनको वाइस प्रेसीडेन्ट बनाया गया था। भाग्य ने उनके लिये कुछ और ही निश्चित कर रखा था। 14 अक्टूबर 1901 को प्रेसीडेन्ट विलियम मेकिन्ले की हत्या हो गयी और वे प्रेसीडेन्ट बन गये।

मंगल से प्रभावित व्यक्ति यदि वे किसी उच्च पद पर आसीन होते हैं तो अधिकतर उनकी हत्या का प्रयत्न किया जाता है। थियोडोर रूजवेल्ट इस नियम के अपवाद नहीं थे। 14 अक्टूबर, 1912 को वे एक अराजकता वादी द्वारा किये गये हत्या के प्रयत्न में गंभीर रूप से घायल हुये थे।

अब देखिये प्रकरण 11 में 9 अंक का विवरण।

"9 अंक वाले जो कुछ प्राप्त करते हैं उसके लिये उनको संघर्ष करना

पड़ता है। अपने जीवन के पूर्वार्द्ध में उन्हें प्रायः कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है परन्तु अपने आत्मविश्वास और दृढ़ निश्चय द्वारा वे अन्ततः सफलता प्राप्त करते हैं। वे आवेशात्मक, जल्दबाज और स्वतंत्र स्वभाव के होते हैं। उनको अपने ऊपर किसी का प्रभुत्व स्वीकार नहीं होता।

यदि 9 अंक उनके जीवन की घटनाओं और उनकी तारीखों में विशेष रूप से दृष्टिगोचर हो तो यह समझना चाहिये कि उनका जीवन काफी संघर्षपूर्ण होगा और उनके बहुत विपक्षी और शत्रु होंगे। वे प्रायः युद्ध में या जीवन से संघर्ष करते हुये चोट खाते हैं या अपने प्राण खो बैठते हैं। वे अत्यन्त साहसी होते हैं और अच्छे सैनिक या नेता बनते हैं।"

क्यों कि THEODORE ROOSEVELT के नामांक से कोई संयुक्त अंक नहीं बनता है, इसलिए हम संयुक्त अंक बनाने के लिये जन्मांक 9 और नामांक 9 को जोड़ते हैं। इस प्रक्रिया से संयुक्त अंक 18 बनता है। अब देखिये प्रकरण 13 में संयुक्त अंक 18 के सम्बन्ध में हमने लिखा है—

'...यह अंक भौतिकता द्वारा आध्यात्मिकता को नष्ट करने का प्रतीक है। इस अंक से प्रभावित व्यक्ति का कटु लड़ाइयों, पारिवारिक झगड़ों, युद्ध, सामाजिक उथल-पुथल तथा क्रान्ति से सम्बन्ध होता है और कभी-कभी तो जातक युद्ध के माध्यम से धन और अधिकार प्राप्त करता है।'

थियोडोर रूजवेल्ट ने चाहे अमरीका और स्पेन के बीच युद्ध में धन न अर्जित किया हो परन्तु इस युद्ध में कमान्डर के रूप में काम करके बहुत लाभ और सम्मान अर्जित किया था।

WOODROW WILSON

वुडरो विलसन संयुक्त राष्ट्र अमरीका के 28वें राष्ट्रपति थे। उनका जन्म 28 दिसम्बर 1856 को हुआ था और मृत्यु 3 फरवरी 1924 को हुई थी।

| WOODROW | WILSON |
|---|---|
| 6 7 7 4 2 7 6 | 6 1 3 3 7 5 |
| 39 = 12 = 3 | 25 = 7 |

$$3+7 = 10 = 1$$

वुडरो विलसन के जन्म का मूल, अंक 1 है, और नाम का मूल अंक भी 1 है। वह 28वें राष्ट्रपति थे। इस संख्या से भी मूल अंक 1 बनता है। अंक विद्या के अनुसार 1 अंक 1-4 के रूप में लिखा जाता है और उसके अंतर्परिवर्तनीय अंक हैं 2-7।

इन अंको का सदा राष्ट्रपति विलसन के जीवन की घटनाओं से महत्व पूर्ण सम्बन्ध रहा, यह नीचे दिये हुये घटना-क्रम से प्रमाणित हो जायेगा।

| | | |
|---|---|---|
| जन्म 28 दिसम्बर | उत्पादित अंक | 1 |
| वर्ष 1856 | ,, अंक | 2 |
| मृत्यु का वर्ष 1924 | ,, अंक | 7 |
| 28 वें राष्ट्रपति | ,, ,, | 1 |
| नाम की मूल संख्या | ,, ,, | 1 |
| प्रथम बार राष्ट्रपति का पद संभाला मार्च 4 | ,, ,, | 4 |
| जरमनी से राजनयिक सम्बन्ध तोड़ा 4 फरवरी | ,, ,, | 4 |
| दूसरी बार राष्ट्रपति का पद संभाला मार्च 4 | ,, ,, | 4 |
| युद्ध के सम्बन्ध में कांग्रेस को सन्देश 2 अप्रैल | ,, ,, | 2 |
| अमरीकी सेना फ्रान्स पहुंची 13 दिसम्बर | ,, ,, | 4 |
| सेन्ट निहील में अमरीकी सेना ने निर्णायक युद्ध किया 13 सितम्बर | ,, ,, | 4 |
| सन्धि पर हस्ताक्षर 11 नवम्बर | ,, ,, | 2 |

उनके नाम के संयुक्तांक 10 का प्रकरण 13 में जो प्रतीकात्मक अर्थ दिया गया है वह इस प्रकार है :—

"इस संयुक्त अंक का प्रतीकात्मक प्रतिरूप है 'भाग्य चक्र' (Wheel of Fortune)। यह प्रतिष्ठा या मर्यादा, निष्ठा या आस्था, आत्म विश्वास और उत्थान और पतन का अंक है। इस अंक से प्रभावित व्यक्ति अपनी भलाई या बुराई, नाम या बदनामी अर्जित करता है। यह एक शुभ अंक माना जाता है और इससे प्रभावित व्यक्ति अपनी योजनाओं या कार्यों को कार्यान्वित करने में समर्थ होते हैं।"

राष्ट्रपति विलसन के जीवन में अंकों ने जो प्रभाव डाला उसकी यथार्थता इनके जीवन के इतिहास से पूर्ण रूप से प्रमाणित हो जाती है।

**HERBERT HOOVER**

हर्बर्ट हूवर संयुक्त राष्ट्र अमरीका के 31वें राष्ट्रपति थे। उनका जन्म 10 अगस्त 1874 को हुआ था।

अपने प्रारम्भिक जीवन में वे अपना नाम HERBERT CLARK HOOVER लिखा करते थे जिससे निम्नलिखित अंक बनते थे :—

| HERBERT | CLARK | HOOVER |
|---|---|---|
| 5 5 2 2 5 2 4 | 3 3 1 2 2 | 5 7 7 6 5 2 |
| 25=7 | 11=2 | 32=5 |

7+2+5=14=5

बाद में उन्होंने अपने नाम से CLARK शब्द निकाल दिया और उनका प्रचलित और सर्वमान्य नाम हो गया HERBERT HOOVER।

| HERBERT | HOOVER |
|---|---|
| 5 5 2 2 5 2 4 | 5 7 7 6 5 2 |
| 25=7 | 32=5 |

7+5=12=3

उनका जन्मांक 1-4 है जिसके अंतर्बदल अंक हैं 2-7। उनका जन्मांक और भी अधिक प्रभावशाली बन जाता है क्योंकि उन्का जन्म-अंक 1-4 के अवधिकाल (21 जुलाई से 20 अगस्त तक) में हुआ था। यदि उनके जन्म का अंक नीचे दिये हुये तरीके से लिखा जाये तो उल्लिखित अंकों का महत्त्व सरलता से समझा जा सकता है :—

10 = 1-4
अगस्त = 1-4
1874 (20) = 2-7
} 8-(विपरीत अवधि काल का अंक 8)

1-4 अवधिकाल का अधिपति सूर्य है। उसका विपक्षी शनि है जिसका अंक 8 और उसका (अकारात्मक) अवधिकाल, 1-4 अंक के अवधिकाल से बिल्कुल विपरीत 21 जनवरी से 21 फरवरी तक है। इस उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्रपति हूवर के सम्बन्ध में अंक 1-4 कितना प्रभावशाली है।

नामांक 3 यद्यपि बृहस्पति का शक्तिशाली अंक है, इस सम्बन्ध में दूसरी श्रेणी का अंक बन जाता है। परन्तु राष्ट्रपति हूवर के जन्मांक और नामांक में समन्वयता नहीं है। और उनकी जीवन प्रगति में जो उलझनें, कठिनाइयां बाधायें आदि उत्पन्न हुईं, उनका उन्हें सामना न करना पड़ता यदि उनके नामांक और जन्मांक के प्रदोलनों में समन्वय होता।

परन्तु यह तो निश्चित है कि राष्ट्रपति 1 अंक वाले व्यक्ति थे और उसके प्रभाव से वंचित नहीं रह सकते थे। प्रकरण 3 में हमने 1 अंक के विषय में लिखा है—

"···यह अंक सम्पूर्णता से सृष्टात्मकता, वैयक्तिकता तथा अकारात्मकता का प्रतीक है। जिसका जन्मांक 1 हो या उसी श्रेणी का (10,19,28) कोई अंक हो तो उस व्यक्ति में उपर्युक्त गुण पूर्णरूप से पाये जायेंगे। इन गुणों के कारण वह अपने आपको सब कुछ समझने वाला, अपने कार्य क्षेत्र में क्रियात्मक, सृष्टात्मक, नये आविष्कार करने वाला होगा और अपनी विचार धारा में निश्चित या स्थिर स्वभाव का

होगा। उसके स्वभाव में हठ और आत्माभिमान पर्याप्त मात्रा में होगा और जिस कार्य को वह हाथ में लेगा उसको पूर्ण निश्चय तक कार्यान्वित करने में क्रियाशील होगा। 1 अंक वाले व्यक्तियों पर सूर्य का प्रभाव और भी अधिक होगा यदि उनका जन्म 21 मार्च और 28 अप्रैल के बीच में हुआ हो।

1 अंक से प्रभावित व्यक्ति उच्चाभिलाषी होते हैं। उन्हें अपने ऊपर अंकुश पसन्द नहीं होता और वे जिस कार्य क्षेत्र में भी प्रवेश करते हैं, वहां उच्च स्थान प्राप्त करते हैं। वे स्वयं अपनी संस्था के संचालक या अध्यक्ष होना चाहते हैं। वे जिस पद पर भी आसीन हों उसका प्रभुत्व रखना जानते हैं और अपने अधीन कर्मचारियों से आदर प्राप्त करते हैं…"

इसमें सन्देह नहीं कि ऊपर लिखे अधिकांश गुण हूवर में विद्यमान थे। वे साधरण स्तर से उठकर संसार के सबसे बड़े राष्ट्रों में से एक के राष्ट्रपति बने।

19 वर्ष (1 अंक) की अवस्था में उन्होंने प्रथम नौकरी पाई थी। वह थी संयुक्त राष्ट्र के ज्योलाजिकल सर्वे (Geological Survey) विभाग में। उसके बाद वे आस्ट्रेलिया गये और एक खदान के मैनेजर नियुक्त हुये। आस्ट्रेलिया से वे चीन गये।

स० 1900 (अंक 1-4) में 25000 कर्मचारियों वाली चीन की एक कम्पनी के पुनर्गठन के लिये नियुक्त हुये और कम्पनी को प्रथम वार आर्थिक लाभ कराया।

1914-1918 के महायुद्ध में हूवर को अपनी योग्यता प्रदर्शित करने का सबसे बड़ा अवसर मिला। 13 (अंक 4-1) नवम्बर 1914 को वह राटर्डम में प्रथम खाद्य सामग्री से भरा जहाज पहुंचाने में सफल हुये और भूख से पीड़ित बैल्जियम के निवासियों की भूख से मरने से रक्षा की। महायुद्ध के अन्त तक उन्होंने 4,000,000 डालर (अंक 4-1) अपने देश की सहायता के लिये एकत्रित कर लिये थे।

4 मार्च 1921 में राष्ट्रपति विलसन के प्रशासन में वह व्यापार सचिव के पद पर नियुक्त हुये। इस पद से उन्नति करते-करते 1929 में

संयुक्त राष्ट्र के राष्ट्रपति बन गये। यह एक विचित्र संयोग है कि हरबर्ट हूवर 31वें राष्ट्रपति थे। 31 संख्या से भी अंक 4 बनता है।

प्रकरण 13 में आप देखेंगे कि 31 अंक सांसारिक या भौतिक दृष्टि से एक शुभ अंक नहीं माना जाता। और यह सत्य ही प्रमाणित हुआ। हूवर यद्यपि सब प्रकार से योग्य थे परन्तु उनके प्रशासन काल से संयुक्त राष्ट्र विषम परिस्थितियों से गुजर रहा था। बेकारी इतिहास में सबसे अधिक बढ़ गयी थी, स्टाक एक्सचेंज के संत्रासों से करोड़ों लोग आर्थिक रूप से फकीर हो गये थे और व्यापार घाटे के निम्नतम स्तर पर गिर गया था। परिणाम यह हुआ कि राष्ट्रपति हूवर को इतिहास ने एक असफल राष्ट्रपति की गणना में रखा। इसका मुख्य कारण था कि उनके जन्मांक और नामांक में समन्वय नहीं था।

कीरो का कहना है कि जिन व्यक्तियों का अगस्त के मध्य के आस-पास जन्म होता है वे जैसे सर्वोच्च पदों को प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार प्रायः पतन के गहरे खड्ड में भी गिरते हैं।

FRANKLIN DELANO ROOSEVELT

फ्रेन्कलिन डिलेनो रूजवेल्ट संयुक्त राष्ट्र अमरीका के 32वें राष्ट्रपति थे। उनका जन्म न्यूयार्क में 30 जनवरी 1882 को हुआ था।

उनके नाम के अंक इस प्रकार हैं—

| FRANKLIN | DELANO | ROOSEVELT |
|---|---|---|
| 82152315 | 453157 | 277356534 |
| 27=9 | 25=7 | 42=6 |

$$9+7+6=22=4$$

राष्ट्रपति रूजवेल्ट के जन्म का मूल अंक 3 है। यह एक शक्तिशाली अंक है और इसका अधिष्ठाता ग्रह बृहस्पति है। उनके सम्बन्ध में 3 अंक की शक्ति दूषित हो गई है; क्योंकि उनका जन्म 8 अंक के शनि के नकारात्मक अवधिकाल में हुआ था। कीरो ने अपनी पुस्तक "When were you were Born ?" में लिखा है "भचक्र के इस अवधिकाल में (21 जनवरी से 21 फरवरी तक) जिनका जन्म होता है वे जनता की भलाई

के काम करने में बहुत सक्रिय होते हैं और दूसरों की मुसीबत दूर करने के लिए अपना सब कुछ देने को तैयार हो जाते हैं। वे तर्कसंगत होते हैं और सफल वक्ता भी होते हैं। परन्तु वे किसी दृष्टिकोण को दृढ़ता से अपना लें तो उनको कायल करना कठिन होता है।

यदि उनका ध्यान इन क्षेत्रों की ओर आकर्षित हो तो वे व्यापार में तथा अर्थव्यवस्था में प्रवीण होते हैं। परन्तु अधिकतर वे दूसरों के लिये अधिक और अपने लिए कम सफलता प्राप्त करते हैं।

जन सभाओं और जनता के समारोहों में उनको बहुत दिलचस्पी होती है।

अपनी आंखों के इशारे से वे चुपचाप अपना अधिकार प्रगट करते हैं और दूसरों को दबा लेते हैं। अपने लिये वह कुछ तभी करते हैं जब परिस्थितियां उन्हें विवश कर देती हैं।

स्वास्थ्य के सम्बन्ध में वे पेट के स्नायु जाल से कुछ ऐसे रोगग्रसित होते हैं कि साधारण इलाज से उनको कोई लाभ नहीं होता। दुर्घटना में उनके दांतों पर दुष्प्रभाव पड़ता है। उनको घुटनों और पैरों में भी दर्द की शिकायत होती है।

फ्रैंकलिन डिलानो रूजवेल्ट का क्योंकि शक्तिशाली 3 अंक के अंतर्गत जन्म हुआ था जो दृढ़ निश्चय और महत्वाकांक्षा का सूचक है, वे अपने जन्म के अवधिकाल के प्रभाव पर अधिकार पाने में समर्थ हुये थे।

3 अंक से प्रभावित व्यक्तियों के सम्बन्ध में हमने प्रकरण 5 में इस प्रकार लिखा है :—

3 अंक वाले व्यक्ति निश्चित रूप से महत्वाकांक्षी होते हैं और किसी अधीनस्थ पद से वे सन्तुष्ट नहीं रहते। उनका ध्येय संसार में ऊंचा उठने का होता है जिससे वे दूसरों के ऊपर प्रभुत्व रख सकें। वे अनुशासन प्रिय होते हैं—उसमें कठोर भी होते हैं और जो निर्देश देते हैं उसका पालन करवाकर रहते हैं।

व्यापार, सरकारी नौकरी या किसी भी क्षेत्र में वे सर्वोच्च स्थान पर पहुंच जाते हैं। स्थल सेना, जल सेना या सरकारी संस्थानों में वे प्रायः

उच्च पदों में आसीन होते हैं और अपने दायित्व को पूर्ण रूप से निभाने में सफल होते हैं।'

यह विवरण राष्ट्रपति रूजवेल्ट पर पूरी तरह से लागू होता है।

अब जब हम उनके जन्मांक 3 और नामांक 4 का विवेचन करते हैं तो उनमें समन्वयता नहीं पाते।

राष्ट्रपति हार्डिंग के जीवन की प्रगति का विवेचन करते समय हमने लिखा था कि जब नामांक और जन्मांक में समन्वयता न हो तो जीवन एक गड़बड़ झाला बन जाता है।

हार्डिंग संयुक्त राष्ट्र के 29वें राष्ट्रपति थे। 29 अंक (प्रकरण 13 देखिये) अनिश्चितताओं, और दूसरों से विश्वासघात और धोखेबाजी का सूचक है।

राष्ट्रपति रूजवेल्ट 32वें राष्ट्रपति होने के कारण एक सौभाग्यशाली संयुक्त अंक के प्रभाव में आ जाते हैं। प्रकरण 13 में 32 अंक के सम्बन्ध में हमने लिखा है—

"इस अंक में मायावी शक्ति है। इसमें बहुत व्यक्तियों या राष्ट्रों का समुच्चय या समुदाय इंगित होता है। इस अंक से प्रभावित व्यक्ति यदि स्वयं अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करे तो उसे सफलता प्राप्त होगी। परन्तु यदि वह अन्य व्यक्तियों की हठ या मूर्खतापूर्ण सलाह को मान्यता देगा तो उसकी योजनायें असफल होंगी। भविष्य विषयक घटनाओं के लिये यह एक शुभ अंक है।"

राष्ट्रपति रूजवेल्ट के नाम का संयुक्त अंक 22 उनके अपने आपके लिये विशेष सौभाग्यसूचक नहीं है। इस अंक के सम्बन्ध में प्रकरण 13 में लिखा है—

इस अंक का चित्रण इस प्रकार किया गया है—

"एक भला आदमी दूसरों की मूर्खता के कारण अन्धा हो गया है। एक गलतियों की पोटली उसकी पीठ पर लटक रही है।" इसका अर्थ यह है कि इस अंक से प्रभावित व्यक्ति स्वयं भला होने पर भी, भ्रान्ति और स्वप्न की दुनिया में विचर रहा है—मिथ्या आशा में अपना जीवन व्यतीत करता है और जब विपत्ति बिल्कुल सिर पर आ जाती है तो

चौकन्ना हो जाता है। यह अंक इस बात का भी सूचक है कि जातक दूसरों के प्रभाव में आकर गलत निर्णय लेता है।"

राष्ट्रपति रूजवेल्ट को अपने प्रशासन काल में अपनी हत्या किये जाने का बहुत खतरा था। उनके जीवन के सम्बन्ध में वही संकेत थे जो एब्राहेम लिंकन के जीवन में थे। उनका भी जन्मांक 3 था।

एक बार तो राष्ट्रपति रूजवेल्ट मृत्यु के निकट पहुंच गये थे जब 15 फरवरी 1933 में मियामी में जंगारा नाम के एक आतंकवादी ने उन पर छः गोलियां चलाई थीं।

अब इस प्रकरण को जवाहरलाल नेहरू और नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के उदाहरण देकर समाप्त करेंगे।

JAWAHARLAL NEHRU

जो भारत के या संसार के इतिहास में सदा अमर रहेंगे उन महापुरुष जवाहरलाल का जन्म 14 नवम्बर 1889 को हुआ था। उनकी मृत्यु 27 अप्रैल को 1964 हुई थी। भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए उन्होंने अपने सुखी और ऐश्वर्य के जीवन का बलिदान करके स्वतंत्रता मिलने तक अधिकांश यौवन के दिन जेल में ही व्यतीत किये थे। स्वतंत्रता के पश्चात जब वे प्रधान मंत्री बने तो अपने मृत्यु काल तक वे इसी पद पर आसीन रहे। हम नीचे दिये विवेचन द्वारा देखेंगे कि उनके इतने संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करने और उनके महापुरुष बनने में उनके जन्म और नाम से सम्बन्ध रखनेवाले अंकों ने क्या भूमिका अदा की है।

| JAWAHARLAL | NEHRU |
|---|---|
| 1 1 6 1 512313 | 55526 |
| 24=6 | 23=5 |

$$6+5=11=2$$

जवाहरलाल जी के जन्म का संयुक्त अंक है 14 और एकल या मूल अंक है 5।

संयुक्त अंक 14 (प्रकरण 13 देखिये) से जन एवं वस्तु की समुदायात्मक प्रवृत्ति प्रकट होती है। यह गतिशीलता का सूचक है। इसके प्रभाव

से आंधी, तूफान, अग्नि तथा जल प्रकोप आदि की आशंका प्रगट होती है (यह प्रतीकात्मक अर्थ है। इससे यह समझना चाहिये कि इस अंक से प्रभावित व्यक्ति अपने जीवन में तूफानों का सामना करेगा। अर्थात् उसका जीवन संघर्षपूर्ण होगा)।···यदि भविष्य विषयक गणनाओं में यह अंक दृष्टिगोचर हो तो जातक को संयम, सावधानी और बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए।

मूल अंक 5—इस अंक से प्रभावित व्यक्ति किसी से भी शीघ्र मैत्री कर लेते हैं। इससे किसी भी अंक से प्रभावित व्यक्ति इनका मित्र हो सकता है। 5 अंक से प्रभावित व्यक्ति, आवेशात्मक होते हैं और अपने सब कामों में जल्दबाजी दिखाते हैं।···यदि वे स्वभाव या आचरण में अच्छे होते हैं तो वे वैसे ही बने रहते हैं। यदि उनका स्वभाव और आचरण खराब होता है तो कोई उसे सुधार नहीं सकता। प्रकरण 7 में देखिये किन किन महान व्यक्तियों का 5 अंक के अंतर्गत जन्म हुआ है,

JAWAHARLAL का संयुक्त अंक है 24, और मूल या एकल अंक है 6।

अंक 24—यह एक सौभग्यसूचक अंक है। इस अंक से जातक को अपने कार्य में उच्च पदाधिकारियों का सहयोग तथा उनकी सहायता प्राप्त होती है।

अंक 6—इस अंक से प्रभावित व्यक्तियों में एक विचित्र प्रकार की आकर्षण शक्ति होती है, जिससे लोग उनके प्रति आकर्षित हुये बिना नहीं रह सकते। (जवाहरलाल जी की असाधारण लोकप्रियता से कौन अनभिज्ञ है। उनकी सभाओं में उनको सुनने तथा उनके दर्शन करने लाखों व्यक्ति एकत्रित हो जाते थे। यह उनकी आकर्षण-शक्ति या लोकप्रियता ही थी जिससे उनके जीवन काल में उनकी कांग्रेस पार्टी ही एक मात्र प्रभावशाली पार्टी थी और उसके विभाजन का प्रश्न ही नहीं उठता था)। 6 अंक से प्रभावित व्यक्ति लोगों के प्रिय पात्र होते हैं और उनके अधीनस्थ लोग उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा रखते हैं। वे अपनी योजनाओं को पूर्ण करने में दृढ़निश्चयी होते हैं और इस दृष्टि से उनको अत्यन्त हठी माना जा सकता है। जब वे अपना पथ निश्चित कर लेते हैं तो वे किसी को भी

रास्ते में आने नहीं देते।···वे सोन्दर्योपासक होते हैं तथा ललित कलाओं के प्रेमी होते हैं और उन्हें प्रोत्साहन देते हैं (आज भारत की जो असाधारण औद्योगिक उन्नति हुई है उसका श्रेय जवाहर लाल जी को ही जाता है। प्लानिंग कमीशन को उन्होंने ही जन्म दिया था)।

6 अंक वाले व्यक्तियों में मित्र बनाने की विशेष क्षमता होती है। (यह सर्वविदित है कि राष्ट्रों में मैत्री भाव और सदभावना बनाने में जवाहरलाल सदा संलग्न रहते थे। 'Peaceful Coexistence' और पंचशील के सिद्धान्तों के जन्मदाता वे ही थे)।

NEHRU शब्द का संयुक्त अंक है 23 और एकल अंक है 5। संयुक्तांक 23 का प्रतीकात्मक रूप है 'The Royal star of Lion। यह अंक उच्चाधिकारियों की सहायता से सफलता और सुरक्षा का विश्वास दिलाता है। मूल अंक 5 के विषय में हम ऊपर लिख चुके हैं।

JAWAHARLAL NEHRU का संयुक्तांक है 11; यह अंक अनिष्टसूचक तथा अमांगलिक माना जाता है। यह अंक छिपे हुये संकटों, संघर्ष और दूसरों द्वारा किये गये विश्वासघात की चेतावनी देता है। इस अंक के प्रभाव का प्रमाण स्वतन्त्रता के बाद का इतिहास है। नेहरू जी के प्रशासन-भार संभालने के बाद ही धोखा देकर पठानों के रूप में पाकिस्तानी सेना ने काश्मीर पर आक्रमण किया। उसके बाद में नेहरू जी के परम मित्र शेख अब्दुल्ला ने स्वतंत्र काश्मीर बनाने का षड़यंत्र रचा जिसके कारण नेहरू जी को उन्हें जेल में बन्द करना पड़ा। चीन के प्रधान मंत्री चाऊ-एन लाइ जो नेहरू के परम मित्र बनने का दावा करते थे और भारत के साथ मैत्री भाव और पंचशील के सिद्धान्तों का बखान करते नहीं थकते थे, उन्होंने चुपचाप धोखा देकर भारत की उत्तरी सीमा पर भारत की भूमि में प्रविष्ट होकर उस पर अधिकार जमा लिया और भारत के अन्य भूभागों को चीन का भाग बताया और इसके बाद बिना किसी चेतावनी के भारत के उत्तर पूर्व की सीमा पर आक्रमण कर दिया। भारत इस विश्वासघात के लिये तैयार न था और भारत की अपमानपूर्ण पराजय हुई। चीन के इस विश्वासघात से नेहरू जी के ऊपर ऐसा भीषण मानसिक आघात लगा कि वह हतोत्साह हो गये उसके दो वर्ष

बाद ही उनकी मृत्यु हो गयी।

जवाहरलाल जी के जन्म के मूल अंक 5 और नाम के मूल अंक 2 का योगफल 7 है। 7 अंक से प्रभावित व्यक्ति स्वतंत्र स्वभाव के होते हैं। उनमें मौलिकता होती है और व्यक्तित्व भी उनका अन्य अंकों के लोगों से पृथक होता है। वे बेचैन स्वभाव के होते हैं और परिवर्तन और यात्रा उन्हें प्रिय है। 7 अंक वाले व्यक्ति प्रायः बहुत सफल लेखक, चित्रकार और कवि बनते हैं। पर जिस कार्य क्षेत्र में वे रुचि लें उसमें दर्शन (philosophy) का दृष्टिकोण अवश्य आ जाता है। 7 अंक वाले धार्मिक मामलों में रूढ़िवादी नहीं होते। उनमें एक ऐसी विचित्र आकर्षण शक्ति होती है जिससे दूसरों पर अत्यन्त प्रभाव पड़ता है (7 अंक के ये गुण नेहरू जी के स्वभाव और व्यक्तित्व पर पूरी तरह से लागू होते हैं)।

प्रकरण 21 में हमने 5 से सम्बन्धित रोगों का विवरण देते हुये लिखा है कि इस अंक से प्रभावित व्यक्तियों में अपने स्नायु मंडल और मस्तिष्क पर आवश्यकता से अधिक भार डालने की प्रवृत्ति होती है। सम्भावित रोगों में हमने लकवा का भी उल्लेख किया है। नेहरू जी लकवा रोग से ग्रसित हुये थे जिसके कारण उनकी जीवन शक्ति पर अत्यन्त प्रभाव पड़ा था।

## SUBAS CHANDRA BOSE

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 में हुआ था और एक विमान दुर्घटना में उनकी मृत्यु 22 अगस्त 1945 में बर्मा में हुई थी। उस समय वे द्वितीय महायुद्ध के समय ब्रिटिश राज्य के विरुद्ध बनाई हुई इंडियन नेशनल आर्मी के सेनाध्यक्ष थे।

| SUBASH | CHANDRA | BOSE |
|---|---|---|
| 362135 | 3515421 | 2735 |
| 20 = 2 | 21 = 3 | 17 = 8 |

$$2 + 3 + 8 = 13 = 4$$

नेता जी के जन्म का मूल अंक 5 है। उसके प्रभाव गुण का विवरण हम नेहरू जी के उदाहरण में पहले दे चुके हैं। संयुक्त अंक 23 का प्रतीकात्मक प्रतिरूप है 'The Royal Star of the Lion)।

नाम के सम्बन्ध में SUBASH का संयुक्त अंक है 20 यह अंक 'जागृति' (The AWAKENING) और 'निर्णयन' (The Judgement) का प्रतीक है।

इस अंक से नयी योजनायें और नयी महत्त्वाकांक्षायें प्रकट होती हैं। इस अंक को शुभ माना गया है; किन्तु सांसारिक कार्यों में सफलता निश्चित नहीं है। यदि भविष्य विषयक प्रश्न में यह अंक प्रयुक्त किया जाए तो कार्य में विलम्ब, कठिनाइयों और अड़चनों का सामना करना पड़ता है।

CHANDRA का संयुक्त अंक 21 है। यह अंक प्रगति, प्रतिष्ठा, मानवृद्धि, जीवन में उत्थान तथा सफलता का प्रतीक है।

BOSE का संयुक्त अंक है 17। यह एक सशक्त आध्यात्मिकता का अंक है। इस अंक से प्रभावित व्यक्ति कठिनाइयों, रुकावटों और आपदाओं का दृढ़ता से मुकाबला करता है और उन पर विजय प्राप्त करता है। यह एक अमरता का अंक माना जाता है और जातक के जीवन के बाद उसकी कीर्ति अमर बनी रहती है।

नेताजी के पूरे नाम का संयुक्त अंक 13 बनता है। यह अंक इस बात का द्योतक है कि योजनाओं और कार्यक्रमों में सदा परिवर्तन होता रहेगा। स्थान परिवर्तन भी द्योतित है।

यह अंक उथल-पुथल का बरबादी का द्योतक है (प्रकरण 13 देखिये)। यह अंक अधिकार और प्रभुत्व तो प्रदान करता है; परन्तु उसको उचित रूप से प्रयुक्त न किया जाये तो ध्वंसकारी होता है। भविष्य विषयक सम्बन्ध में यह अंक अज्ञात और अप्रत्याशित घटनाओं की चेतावनी देता है।

नेताजी के पूरे नाम का मूल अंक है 4; इस अंक से प्रभावित व्यक्ति का निराला ही स्वभाव होता है। वे प्रत्येक बात को विपरीत दृष्टिकोण से देखते हैं। और वे प्रायः संघर्ष करते हैं। इसके कारण उनके बहुत से विरोधी और शत्रु हो जाते हैं। इस अंक से प्रभावित व्यक्ति निर्धारित नियमों का उल्लंघन करते हैं और उनका बस चले तो सब कुछ उलट पलट देते हैं। वे प्रायः वैधानिक सत्ता का विरोध करते हैं। वे अपने विचारों में

तथा दृष्टिकोणों में अत्यन्त निश्चयात्मक और अपरम्परावादी होते हैं।

नेता जी के जन्म का मूल अंक है 5 ; और नाम का मूल अंक है 4; दोनों के योग से बनता है अंक 9 ; अंक 9 वाले जो कुछ प्राप्त करते हैं उसके लिये उन्हें संघर्ष करना पड़ता है। वे आवेशात्मक जल्दबाज और स्वतंत्र स्वभाव के होते हैं। उनको अपने ऊपर किसी का प्रभुत्व पसन्द नहीं होता। वे अत्यन्त साहसी होते हैं और अच्छे सैनिक या नेता बन सकते हैं। वे प्रायः युद्ध में या जीवन में संघर्ष करते हुये चोट खाते हैं या अपने प्राण खो बैठते हैं। ये लोग असहिष्णु होते हैं और अपने विरुद्ध अलोचना को सहन नहीं कर सकते। अपनी योजनाओं में किसी का हस्तक्षेप उन्हें पसन्द नहीं होता है।

शायद ही कोई शिक्षित भारतीय ऐसा होगा जो नेता जी सुभाषचन्द्र बोस के जीवन से परिचित न होगा। पाठकों ने देखा होगा कि उनके जन्मांक और नामांकों का उनके जीवन पर कितना यथार्थपूर्ण प्रभाव पड़ा है। हमने SUBASHCHANDRA और BOSE के मूल अंको का अलग-अलग विवेचन नहीं दिया है परन्तु आप देखेंगे कि उनका प्रभाव भी नेता जी के जीवन पर अधिकांश रूप में लागू होगा।

## 24

## सेफेरियल के मत के अनुसार भाग्य और धन अंक का निकालना, उनका प्रभाव और महत्व—कबाला पद्धति।

सेफेरियल को भी पाश्चात्य ज्योतिष जगत में एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है। वे केवल ज्योतिष विज्ञान में ही पारंगत नहीं थे; वरन् अंक विद्या पर भी उनको पूर्ण रूप से अधिकार प्राप्त था। यह प्रकरण अंक विद्या पर उनके मत और विचारों पर आधारित है।

कबाला पद्धति के अनुसार अंगरेजी अक्षरों के लिये निम्नलिखित अंक निर्धारित किये हैं। उन अंकों पर किस ग्रह या राशि का प्रभाव है यह भी निम्नलिखित तालिका में दिया गया है :—

| अंगरेजी का अक्षर | अंक | प्रभावक ग्रह या राशि |
|---|---|---|
| A | 1 | बुध ग्रह |
| B | 2 | कन्या राशि |
| G | 3 | तुला राशि |
| D | 4 | वृश्चिक राशि |
| E | 5 | वृहस्पति ग्रह |
| VUW | 6 | शुक्र ग्रह |
| Z | 7 | धनु राशि |
| H | 8 | मकर राशि |
| Th | 9 | कुम्भ राशि |
| I J Y | 10 | यूरेनस ग्रह |
| C K | 11 | नेप्चून ग्रह |
| L | 12 | मीन राशि |
| M | 13 | मेष राशि |
| N | 14 | वृषभ राशि |
| X | 15 | शनि ग्रह |
| O | 16 | मंगल ग्रह |
| F P | 17 | मिथुन राशि |
| Ts Tz | 18 | कर्क राशि |
| Q | 19 | सिंह राशि |
| R | 20 | चन्द्र ग्रह |
| S | 21 | सूर्य ग्रह |
| T | 22 | पृथ्वी |

सेफीरियल के मत के अनुसार भाग्यांक और धनांक निकालने के तरीके अलग-अलग हैं। इस प्रकार भाग्यांक और धनांक एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। परन्तु भाग्यांक के द्वारा लोग अपनी आर्थिक (धन संबंधी)

कार्य विधियों को इस तरह परियोजित कर सकते हैं कि उनका धन सम्वन्धी कार्य उस दिन या उस समय सम्पन्न हो जव उनके भाग्यांक का शुभ प्रभाव सक्रिय हो।

भाग्यांक निकालने के लिये जन्म दिन (रविवार, सोमवार, मंगलवार आदि) और वह समय जिसमें जन्म हुआ हो, जानना आवश्यक है।

जन्म समय में केवल जन्म के घंटे के ज्ञान की आवश्यकता है; मिनट आदि का कोई महत्व नहीं है। उदाहरण के लिये यदि किसी का जन्म प्रातः काल 6-30 पर हुआ है तो यह समझा जायेगा कि जन्म 6 A.M और 7 A.M में वीच में हुआ है शाम को 7-30 को जन्म हुआ हो तो 7 P.M और 8 P.M के वीच में समझा जायेगा। कुछ आगे चलकर हम एक तलिका दे रहे हैं जिसमें सोमवार से शनिवार के घंटे ए.एम. (A M.) (रात्रि के बारह बजे के बाद से दोपहर के बारह बजे तक का समय ए. एम. होता है) और पी. एम. (P.M.) (दोपहर के बारह बजे के बाद से रात्रि के बारह बजे तक का समय पी. एम. होता है) दिये जा रहे हैं और साथ ही वह अंक दिये जा रहे हैं जो उन घंटों को प्रभावित करते हैं। जो अंक आपके जन्म समय के घंटे के सामने होगा वही आपका भाग्यांक होगा। वह समय आपके धन सम्बन्धी कार्य के लिये शुभफलदायक होगा।

तालिका में आप देखेंगे कि कुछ अंकों की छाप गहरी है और कुछ की हल्की। गहरी छाप वाले अंक अकारात्मक (Positive) समय बताते हैं और हलकी छाप वाले नकारात्मक (negative) समय। अकारात्मक घंटे अंकों के सौभाग्यसूचक प्रदोलन को शक्तिशाली बनाते हैं। अतः वे जातक के लिये नकारात्मक घंटों से अधिक शुभफलदायक प्रमाणित होंगे। परन्तु चाहे आपका जन्म अकारात्मक घंटे में हुआ हो या नकारात्मक घंटे में उस घंटे से सम्बन्धित अंक ही भाग्यांक होगा।

| जन्म अंक | रविवार | | सोमवार | | मंगलवार | | बुधवार | | बृहस्पतिवार | | शुक्रवार | | शनिवार | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | A.M. | P.M. | A.M. | P.M. | A.M. | PM. | A.M. | P.M. | A.M. | P.M. | A.M. | P.M. | A.M, | P.M. |
| 0-1 | 1 | 3 | 7 | 6 | 9 | 8 | 5 | 1 | 3 | 7 | 6 | 9 | 8 | 5 |
| 1-2 | 6 | 9 | 8 | 5 | 4 | 3 | 2 | 6 | 9 | 8 | 5 | 4 | 3 | 2 |
| 2-3 | 5 | 1 | 3 | 7 | 6 | 9 | 8 | 5 | 1 | 3 | 7 | 6 | 9 | 8 |
| 3-4 | 2 | 6 | 9 | 8 | 5 | 4 | 3 | 2 | 6 | 9 | 8 | 5 | 4 | 3 |
| 4-5 | 8 | 5 | 1 | 3 | 7 | 6 | 9 | 8 | 5 | 1 | 3 | 7 | 6 | 9 |
| 5-6 | 3 | 2 | 6 | 9 | 8 | 5 | 4 | 3 | 2 | 6 | 9 | 8 | 5 | 4 |
| 6-7 | 9 | 8 | 5 | 1 | 3 | 7 | 6 | 9 | 8 | 5 | 1 | 3 | 7 | 6 |
| 7-8 | 4 | 3 | 2 | 6 | 9 | 8 | 5 | 4 | 3 | 2 | 6 | 9 | 8 | 5 |
| 8-9 | 6 | 9 | 8 | 5 | 1 | 3 | 7 | 6 | 9 | 8 | 5 | 1 | 3 | 7 |
| 9-10 | 5 | 4 | 3 | 2 | 6 | 9 | 8 | 5 | 4 | 3 | 2 | 6 | 9 | 8 |
| 10-11 | 7 | 6 | 9 | 8 | 5 | 1 | 3 | 7 | 6 | 9 | 8 | 5 | 1 | 3 |
| 11-12 | 8 | 5 | 4 | 3 | 2 | 6 | 9 | 8 | 5 | 4 | 3 | 2 | 6 | 9 |

उदाहरण के लिये यदि आपका जन्म 6 और 7 प्रातः काल (A.M) को सोमवार को हुआ हो तो आपका भाग्यांक 5 होगा। और किसी और दिन भी जो समय (घंटा) 5 अंक के अंतर्गत आता हो तो उस अवधिकाल में कोई विशेष कार्य करना शुभ फलदायक होगा, विशेषकर जब उस अवधि-काल का लाभ उठाया जाये जो अकारात्मक (Positive) 5 अंक के अंतर्गत आता हो।

अकारात्मक अवधिकाल स्वाभाविक तौर पर धन सम्बन्धी या अन्य रचनात्मक कार्यों के लिए सर्वोत्तम होगा और नकारात्मक अवधिकाल अध्ययन, शोधकार्य आरम्भ करने के लिये तथा घोड़ों की रेस जैसे कार्यों के लिये शुभ होते हैं। नकारात्मक अवधिकाल अंतःप्रेरणा शक्ति के लिये अधिक बली होता है। जैसा हम ऊपर कह चुके हैं, अकारात्मक अवधि काल रचनात्मक और सक्रियता के कार्यों के लिये अधिक उपयुक्त होते हैं।

ऊपर दिये हुये उदाहरण में भाग्यांक 5 निकला है। इस भाग्यांक वाले जातक के लिये शुभ अवधिकाल है सोमवार को 6 A.M से 7 A.M तक, रविवार को 2 A.M से 3 A.M तक, अकारात्मक और 9 PM से 10 P.M तक (नकारात्मक) सोमावर को फिर 8 P.M से 9 P.M तक (अकारात्मक), मंगलवार को 3 A.M से 4 A.M तक (अकारात्मक), 10 P.M से 11 P.M तक (अकारात्मक), बुधवार को रात के बारह बजे से 1 A.M तक (अकारात्मक), 7 A.M से 8 A.M तक (नकारात्मक) 2 P.M से 3 P-M तक (अकारात्मक) और 9 P.M से 10 P.M तक (नकारात्मक), वृहस्पतिवार को 6 P.M से 7 PM तक (अकारात्मक), शुक्रवार को 1 A.M से 2 A.M तक (नकारात्मक), 8 A.M से 9 A.M तक (अकारात्मक), 3 P.M से 4 P.M तक (नकारात्मक), 10 P.M से 11 P.M तक (अकारात्मक), शनिवार को 5 A.M से 6 A.M तक (नकारात्मक), दिन के बारह बजे से 1 A.M तक (अकारात्मक) और 7 से 8 P.M तक (नकारात्मक)। यही विधि और अंकों के लिये प्रयुक्त करना चाहिये।

## धन अंक

धन अंक भाग्य अंक से बिल्कुल भिन्न होता है। इसके लिये जिस व्यक्ति का धनांक निकाला जाता है उसका पूरा नाम लिखा जाता है और उसके अक्षरों के अंकों द्वारा गणना की जाती है। नाम के प्रत्येक भाग के अंक अलग-अलग लिखे जाते हैं और फिर सब भागों के अंकों को जोड़ कर जो योगफल हो उसी से धनांक निकाला जाता है। यदि योगफल 22 संख्या से अधिक हो तो उस संख्या को जोड़कर जो अंक बने वह धनांक होगा। धनांक 22 संख्या से अधिक कभी नहीं होगा। धनांक निकालने के लिए कब्राला पद्धति का आधार लेना होगा जिसके अनुसार अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षरों के अंक हम इस प्रकरण के आरम्भ में दे चुके हैं।

### उदाहरण (1)

| E D W A R D | W I L L I A M |
|---|---|
| 5 4 6 1 20 4 | 6 10 12 12 10 1 13 |
| 40=4 | 64=10 |

W H I T M A N
6 8 10 22 13 1 14
74=11

4+10+11=25

क्योंकि 25 संख्या 22 से अधिक है। इसलिये उसके अंकों 5 और 2 को जोड़ेंगे। इस प्रकार धनांक 7 आयेगा। इस अंक से हमें उपर्युक्त व्यक्ति की आर्थिक स्थिति की जानकारी प्राप्त होगी।

### उदाहरण (2)

| G H A N S H Y A M | D A S |
|---|---|
| 3 8 1 14 21 8 10 1 13 | 4 1 21 |
| 79=16=7 | 26=8 |

B I R L A
2 10 20 12 1
45=9

7+8+9=24=6

क्योंकि संख्या 24 संख्या 22 से अधिक है। इसलिये इसके अंकों 2 और 4 को जोड़ लिया। इस प्रकार घनश्यामदास बिड़ला का धनांक 6 निकला।

अब हम 1 से 22 अंकों के प्रभाव और फल का विवरण देते हैं।

## अंक 1

अंक 1 यह संकेत देता है कि जातक के लिये धनोपार्जन के अनेकों भिन्न भिन्न प्रकार के स्रोत (sources) होंगे। अर्थात वह कई प्रकार के व्यवसायों से धन अर्जित करेगा। इन व्यवसायों में से मस्तिष्क सम्बन्धी व्यवसाय (जैसे प्राध्यापक, साहित्यकार, उपन्यासकार शोध कार्य करने वाले), यातायात सम्बन्धी व्यवसाय और मशीन सम्बन्धी व्यवसाय (जैसे कारखाने खोलना) हो सकते हैं। इस अंक का प्रभाव जातक को उपर्युक्त हर प्रकार के व्यवसायों के लिये अनुकूल परिस्थितियां प्रदान करता है और थोड़े समय में जातक उस कार्य को संभालने में समर्थ हो जाता है। परन्तु जातक अर्थात इस अंक से प्रभावित व्यक्ति के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि जो लाभ उसे हो उसे असावधानी से उड़ा न दें। उसके लिये बुद्धिमानी काम यह होगा कि उन्नति और समृद्धि के समय का संचित धन कठिन समय या अवनति के समय के लिये सुरक्षित रखें। उसको चाहिये कि आर्थिक समझौतों पर और धन सम्बन्धी कागजों पर हस्ताक्षर करने से उनकी ध्यानपूर्वक और पूर्ण सावधानी से परीक्षा कर लें। उन पर आंखें बन्द करके या केवल दूसरों पर विश्वास करके हस्ताक्षर करने से उसको क्षति पहुंचने की सम्भावना है।

## अंक 2

इस अंक का जातक बहुत सावधानी से और सोच समझकर धन व्यय करता है। वह कंजूस हो सकता है; परन्तु नीच प्रकृति का नहीं होता। आवश्यकता पड़ने पर वह खुले दिल से भी धन व्यय कर सकता है; परन्तु वह अपने धन का पूरा मूल्य वसूल करता है। वह अपने निजी जीवन या व्यापार में (व्यवसाय में) आय और व्यय दोनों पर पूर्ण नियंत्रण रखता

है। इस अंक से सम्बन्धित व्यक्ति को, अपने व्यवसाय, उद्योग या व्यापार में रचनात्मक विकास की योजनाओं से अच्छा धन लाभ होता है। उसको अपनी योजनाओं का सूक्ष्म विश्लेषणा तो करना चाहिये, परन्तु यह भी ध्यान रखना चाहिये कि उन लोगों की, जो व्यवसाय में उनके सहयोगी हों, सम्मति और उसके निर्णयों पर अनावश्यक, आलोचना करने से गलत फहमियां उत्पन्न हो सकती हैं जिससे उसकी उनके साथ साझेदारी या सहयोग को क्षति पहुंच सकती है। इस अंक से सम्बन्धित व्यक्ति अपनी नियमित आय के अतिरिक्त अपनी साहित्यिक योग्यता (यदि उनमें हो), या हिसाब किताब लिखने के काम से भी ऊपरी आमदनी कर सकते हैं।

## अंक 3

अंक 3 का एक विचित्र प्रभाव यह है कि इससे प्रभावित व्यक्ति स्वयं बिना इच्छा या प्रयास से आर्थिक योजनायों की ओर आकर्षित हो जाते हैं या उस प्रकार की योजनायें बिना उनकी ओर से अभिरुचि ही उनको अपने जाल में खींच लेती हैं। वे व्यक्ति इन सुअवसरों को किस प्रकार इस्तेमाल करते हैं, उसी पर उनका आर्थिक लाभ निर्भर होता है। इस का अर्थ यह है कि स्वयं अपने आप आये सुअवसरों से उन्हें पूरा लाभ उठाने का प्रयत्न करना चाहिये। इस अंक से प्रभावित व्यक्तियों को सुख आराम और ऐश की वस्तुओं को प्राप्त करने की बहुत चाह होती है और उनमें यह प्रवृत्ति होती है कि वे सब बिना अधिक परिश्रम और प्रयास के मिल जायें। अपनी इस प्रवृत्ति के कारण इन लोगों के बेईमान और जालसाज लोगों के फन्दे में फंस जाने की सम्भावना होती है। धन का व्यय तो होता ही है, मान-सम्मान को भी चोट लगती है। इन व्यक्तियों की सबसे बड़ी कमजोरी यह होती है कि दूसरों के ऊपर एक दम विश्वास कर लेते हैं। इससे सम्भव है धन की प्राप्ति हो जाये; परन्तु वह आर्थिक सुरक्षा नहीं प्राप्त होती जो एक ईमानदार और विश्वासपात्र साझेदार से सहयोग करने से हो सकती है।

## अंक 4

यह अंक यह व्यक्त करता है कि इससे प्रभावित व्यक्तियों में धनोपार्जन

के लिये कठोर परिश्रम करने की क्षमता होती है। वे चाहे अपना काम करें या किसी के अधीनस्थ हों वे काफी धन अर्जित कर सकते हैं। परन्तु इस अंक से प्रभावित व्यक्तियों में धन व्यय करने की प्रवृत्ति होती है और यदि उस पर अंकुश न रखें तो ऋण के बोझ से दब सकते हैं। वे स्वभावतः अपव्ययी नहीं होते; परन्तु अपने उद्योग, व्यवसाय या व्यापार के लिए उसकी क्षमता वृद्धि के लिये आवश्यक सामान खरीदने में व्यय करने को विवश होंगे। उनको अपने घरेलू जीवन में सुख और सुविधाओं के प्राप्त करने के लिये धन व्यय करना पड़ता है; परन्तु उनको चाहिये कि इस प्रकार के व्यय अपनी आर्थिक परिस्थितियों को देखकर करें और उसके लिये ऋण न लें। सट्टे के लिये यह अंक विशेष शुभ फलदायक नहीं है और इसमें जातक को अनावश्यक रिस्क नहीं लेना चाहिये। इस अंक से सम्बन्धित व्यक्ति पूंजी निवेशन में सदा बुद्धिमानी का प्रदर्शन करते हैं।

## अंक 5

आर्थिक मामलों में अंक 5 विशेष रूप से सौभाग्यशाली अंक है। यह अंक यह व्यक्त करता है कि इससे प्रभाजित व्यक्ति के जीवन में धनागम के अनेकों अवसर आयेंगे और वह इस सम्बन्ध में सदा सौभाग्यशाली होगा। जातक को धनागम केवल अपने व्यवसाय द्वारा ही नहीं होगा; वरन् बुद्धिमानी पूर्ण पूंजी निवेशन, सट्टे से तथा विरासत से भी काफी धन प्राप्त होगा। इस अंक से प्रभावित व्यक्तियों के पास तरह-तरह से धन तो आता रहेगा; परन्तु उनके जीवन में ऐसे अवसर आयेंगे जब सट्टे या गलत पूंजी निवेशन द्वारा उनको धनहानि की सम्भावना दिखाई देगी और अस्थायी रूप से कुछ नुकसान भी होगा। इसलिये इन व्यक्तियों के लिये आवश्यक है कि सदा अपनी आर्थिक कार्य विधियों में सतर्कता और बुद्धिमानी से काम लें। यदि वे ऐसा करेंगे तो इस अंक का सौभाग्यसूचक प्रभाव उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाता चला जायेगा।

आप जानते ही हैं कि एक मध्यम वर्ग के परिवार में जन्म लेकर सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता अमिताभ बच्चन आज आर्थिक दृष्टि से कितने अधिक समृद्ध हो गये हैं। सुना है, वे प्रति वर्ष लगभग एक करोड़ रुपया

आय-कर देते हैं। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि उनकी वार्षिक आय कितनी होगी। फिल्म के काम के अतिरिक्त उन्होंने अपनी पूंजी-निवेशन से जो सम्पत्ति बनाई है उससे भी उन्हें लाखों रुपये की आय प्रति वर्ष होती है। यह अमिताभ बच्चन अंक 5 से प्रभावित है जैसा हम नीचे दिखा रहे हैं।

A M I T A B H
1 13 10 22 1 2 8
57=12

BAC HC HAN
2 1 11 8 11 8 1 14
56=11

12+11=23

क्योंकि 23 संख्या 22 के अधिक है। इसलिये अंक होगा 2+3=5 यह उदाहरण अंक विज्ञान की सत्यता को पूर्ण रूप से प्रमाणित करता है।

## अंक 6

अंक 6 भी आर्थिक मामलों में अत्यन्त सौभाग्यसूचक है। इस अंक का प्रभाव धन अर्जित करने में पूरी सहायता देता है। इस अंक से ऐसा प्रदोलन उत्पादित होता है जिससे इससे प्रभावित व्यक्तियों को बिना किसी विशेष प्रयत्न के धन प्राप्त होता है। परन्तु इससे यह न समझ लेना चाहिये कि लोग हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहें और आशा करते रहें कि कुबेर का धन भण्डार अपने आप उनके पास पहुंच जायेगा। इस अंक के सौभाग्य पूर्ण प्रभाव का पूरा लाभ उठाने के लिये इससे प्रभावित व्यक्तियों को धन अर्जित करने के लिये प्रयत्न और परिश्रम करना चाहिये। यदि वे ऐसा करेंगे तो अंक 6 के अधिष्ठाता ग्रह धनदायक ग्रह शुक्र के शुभ प्रदोलन उनको अपनी समृद्धि की वृद्धि में पूर्ण रूप से सहायता करेगा। उनको अपने व्यवसाय, व्यापार, पूंजी निवेशन और सट्टे में तथा दूसरों के सहयोग या साझेदारी से अप्रत्याशित धन लाभ होगा।

श्री घनश्याम दास विड़ला का, जो विड़ला औद्योगिक साम्राज्य के निर्माता हैं, धनांक 6 है। उनके नाम का उदाहरण हम इस प्रकरण के आरम्भ में दे चुके हैं।

## अंक 7

अंक 7 यह व्यक्त करता है कि अर्थिक क्षेत्र में साधारणतया प्रगति होती रहेगी और सौभाग्य के अवसर जीवन में बराबर आते रहेंगे। धनागम और आय विविध प्रकार की कार्य विधियों से होगी और जातक अपने मुख्य व्यवसाय के साथ अन्य स्रोतों द्वारा भी धन अर्जित करेगा।

अंक 7 सौभाग्यसूचक तो है; परन्तु इससे प्रभावित व्यक्ति की आमदनी और खर्च दोनों में उतार चढ़ाव होते रहते हैं। व्यय के सम्बन्ध में जातक को बुद्धिमानी से काम लेना चाहिये और भाग्य के सहारे नहीं बैठे रहना चाहिये। यदि सतर्कता नहीं बरती जायेगी तो सौभाग्यपूर्ण अवसरों के बावजूद व्यवसाय में धक्का लगने और क्षति होने की सम्भावना है। सट्टे आदि में समय-समय पर काफी धन की प्राप्ति होगी; परन्तु उसके लिये रिस्क लेना होगा और ऐसे अवसर पर यह देखना होगा कि आवश्यकता से अधिक रिस्क लेना उचित है या नहीं। अधिक लालच करने या अवसरवादी बनने से धन हानि हो सकती है जो जातक के लिये अत्यन्त चिन्ता का कारण बन सकती है और उसके कारण व्यवसाय पर दुष्प्रभाव पड़ सकता है।

## अंक 8

इस अंक से यह व्यक्त होता है कि इससे प्रभावित व्यक्तियों में धन सम्बन्धी महात्वाकांक्षा अधिक मात्रा में होती है। वे लोग केवल अपनी सुरक्षा के लिये ही धन की आकांक्षा नहीं करते, वरन् उन्हें अपने व्यवसाय और घरेलू जीवन के स्तर को ऊंचा करने की भी अभिलाषा होती है।

इस अंक से प्रभावित व्यक्ति अपने व्यय पर सदा नियंत्रण रखते हैं और कभी कभी ऐसी हद तक पहुंच जाते हैं कि आवश्यक कार्यों पर भी खर्च नहीं करना चाहते। 8 अंक वाले व्यक्ति अपने व्यापार या व्यवसाय की कार्य विधियों का विकास करके, तथा व्यापार को सार्वजनिक, सामाजिक

तथा राजनैतिक कार्यों से सम्बन्धित करके आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इन व्यक्तियों में संघटन की क्षमता पर्याप्त मात्रा में होती है और उपर्युक्त क्षेत्र में वह बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

## अंक 9

यह अंक यह व्यक्त करता है कि इससे प्रभावित व्यक्तियों की इच्छायें और आशायें सदा धन प्राप्ति से सम्बन्धित होती हैं। वे प्रचुर धन अर्जित करके अपने लिये सामाजिक और सार्वजनिक क्षेत्र में सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त करने की आकांक्षा रखते हैं।

इस अंक से प्रभावित व्यक्ति ऐसी संस्थाओं में जिनमें जनता का धन लगा होता है (जैसे लिमिटेड कम्पनीज जिनमें शेयर होल्डरों का धन लगा होता है या पब्लिक ट्रस्ट जो जनता से धन प्राप्त करके स्थापित किये जाते हैं), उच्च दायित्व के स्थानों पर आसीन होते हैं। ऐसी परिस्थिति में उनको ध्यान रखना चाहिये के वे जनता के धन को अपनी पूंजी से न मिला लें। ऐसा करने से उन्हें प्राय: काफी हानि उठाने कि सम्भावना होती है।

सट्टे आदि में रुपया लगाने के बजाय उनके लिए रचनात्मक पूंजी निवेशन (investment) अधिक लाभप्रद होता है क्योंकि इस अंक के प्रभाव से दूसरी श्रेणी के कार्य के लिदे उनका निर्णय अधिक ठीक होगा।

## अंक 10

अंक 10 यह व्यक्त करता है कि इससे प्रभावित व्यक्तियों को आकस्मिक धन लाभ और धन हानि होती है। ये लाभ और हानि व्यावसायिक कार्य विधियों में अप्रत्याशित परिवर्तन या सट्टेबाजी के कारण होंगे। परन्तु यदि इस अंक से प्रभावित व्यक्ति बुद्धिमानी और सूझबूझ से काम लें और सम्भावित हानि की सम्भावना पर ध्यानपूर्वक सोच विचार करके काम करें तो उन्हें लाभ अधिक होगा और हानि कम। साझेदारी और सहयोग वाले व्यापार में यदि समझदारी और सतर्कता न बरती जाये तो आकस्मिक जन्म लेने वाली गलतफहमियों के कारण धन हानि होने

की सम्भावना है। इस अंक के व्यक्ति लाटरी आदि से अकस्मात धन लाभ के लिये सौभाग्यशाली होते हैं।

## अंक 11

यह अंक विचित्र प्रकार का प्रभाव डालता है। इस अंक से प्रभावित व्यक्तियों में भविष्य की सम्भावनाओं और योजनायों के सम्बन्ध में ठीक मूल्यांकन करने की योग्यता होती है। वे अन्य लोगों से आर्थिक सहायता प्राप्त करने में भी समर्थ होते हैं। परन्तु इस अंक से सम्बन्धित व्यक्ति दूसरों द्वारा धोखेबाजी, विश्वासघात, बेईमानी या चोरी के शिकार बन सकते हैं और इस सम्बन्ध में उनको अत्यन्त सतर्क रहने की आवश्यकता है। इस अंक वाले व्यक्ति आर्थिक कष्ट के समय स्वयं भी अनैतिक तरीके अपनाने को तैयार हो जाते हैं और किसी-न-किसी प्रकार से अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिये धन प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। उनको ऐसी प्रवृत्ति पर अंकुश रखना चाहिये नहीं तो वे मुसीबत में पड़ सकते हैं।

## अंक 12

इस अंक से प्रभावित व्यक्तियों के जीवन में धनागम और धन-व्यय दोनों में उतार चढ़ाव देखने में आते हैं। कुछ समय ऐसा होगा जब वे निरंतर धनलाभ के सम्बन्ध में सौभाग्यशाली बने रहेंगे और ऐसे भी समय आयेंगे जब उन्हें अपनी आर्थिक स्थिति को संभालने के लिये भरसक प्रयत्न करना पड़ेगा। इस अंक से प्रभावित व्यक्ति यदि अपनी आर्थिक कार्य विधियों में सतर्क नहीं रहते तो उनको हानि पहुंचना निश्चित है। उन्हें तो यह चाहिये कि वह मैत्री पूर्ण सहयोग स्थापित करें और ऐसे लोगों के साथ साझेदारी करें या ऐसों का सहयोग प्राप्त करें जो पूर्णरूप से विश्वसनीय हों क्योंकि इस अंक के प्रभाव से धोखेबाज और विश्वासघाती मित्रता का रूप धारण करने वालों से आर्थिक हानि की सम्भावना होती है। इस अंक वाले व्यक्तियों को संदिग्ध आचरण वाले व्यक्तियों के जाल में फंसकर एक दम

से एक बड़ी धनराशि प्राप्त करने की प्रवृत्ति पर अंकुश रखना चाहिये क्योंकि इस अंक का प्रभाव इस प्रकार की प्रवृत्ति उत्पन्न करता है।

## अंक 13

इस अंक से प्रभावित व्यक्ति आय से अधिक व्यय करने से अपने आपको रोकने में असमर्थ पाते हैं। इसके कारण वे प्रायः आर्थिक कठिनाइयों से ग्रसित रहते हैं। इन लोगों में धन अर्जित करने की पूर्ण योग्यता होती है और जिस व्यवसाय या धन्धे के प्रति उनकी रुचि हो उसका यदि ठीक व्यवस्था के साथ प्रबन्ध करें और उसका विकास करें तो उन्हें धन लाभ के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। इन लोगों में अपने नियमित व्यवसाय पर उचित ध्यान न देकर सट्टे बाजी जैसे कार्यों से एकदम से एक बड़ी धनराशि प्राप्त करने की प्रवृत्ति होती है। ऐसी प्रवृत्तियों को दबाना उनके लिये आवश्यक है; क्योंकि यह अंक इस प्रकार के धन लाभ के लिये सौभाग्यसूचक नहीं है।

## अंक 14

यह अंक यह व्यक्त करता है कि आर्थिक मामलों में इससे प्रभावित व्यक्ति व्यावहारिक नीति अपनायेंगे। इन व्यक्तियों की ईमानदारी और सुचारू रूप से काम करने की क्षमता के कारण उनको आर्थिक मामलों में बहुत विश्वस्त माना जायेगा और आर्थिक संस्थानों के संचालन का दायित्व उनको दिया जायेगा। इस अंक से प्रभावित व्यक्तियों में धन संचय की प्रवृत्ति होगी और पर्याप्त धन के स्वामी बन जायेंगे।

सट्टेबाजी और पूंजी निवेशन में सदा बुद्धिमानी और सतर्कता से काम लेंगे और इन दिशाओं में तभी आगे बढ़ेंगे जब धन लाभ का उन्हें पूरा विश्वास हो जायेगा। यदि उन्हें लाभ हुआ तो वे अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ और सुरक्षित बनाने में प्रयत्नशील रहेंगे। यदि हानि हुई तो वे भविष्य के लिये सावधान हो जायेंगे।

संगीतकार, चित्रकार, मूर्तिकार, कलाकार, अभिनेता, सिनेमा

थियेटर चलाने वाले यदि इस अंक से प्रभावित्त हों तो बहुत लाभ उठा सकते हैं।

## अंक 15

अंक 15 यह व्यक्त करता है कि इससे प्रभावित व्यक्ति की नियमित आय और अतिरिक्त आय बुद्धिमानी और सोच विचार कर योजनायें बनाने और उनको साहस के साथ कार्यान्वित करने से होगी। इन व्यक्तियों की योजनायें उनको पर्याप्त धन लाभ कराने वाली होंगी; परन्तु उन्हें इस बात से सतर्क रहना होगा कि उनके उच्चाधिकारी उन योजनाओं का श्रेय लेकर उनको लाभ से वंचित न कर दें। उच्च और उत्तरदायित्व के पद ग्रहण करके इस अंक से प्रभावित व्यक्ति अपनी आर्थिक स्थिति को काफी दृढ़ बना सकते हैं और पर्याप्त धन जमा कर सकते हैं। सट्टे बाजी और पूंजी निवेशन के लिये यह एक सौभाग्यसूचक अंक है।

## अंक 16

यह अंक यह व्यक्त करता है कि इससे प्रभावित व्यक्तियों में धनोपार्जन के लिये कठोर परिश्रम करने की क्षमता होती है। यह अंक यह भी संकेत देता है कि यद्यपि इससे प्रभावित व्यक्ति पर्याप्त मात्रा में अपने परिश्रम और प्रयत्न द्वारा धन अर्जित करते हैं; परन्तु उनमें धन व्यय करने और बड़े रिस्क लेने की जो तीव्र प्रवृत्ति है उस पर वे नियंत्रण नहीं रख पाते। परिणामस्वरूप धन उनके हाथ से निकल जाता है और वे ऐसे कार्य करने लगते हैं जो भविष्य में चिन्ता का कारण बन जाते हैं। इन व्यक्तियों की आर्थिक उन्नति या अवनति में उनके साझेदार या साझेदारों की भी महत्व-पूर्ण भूमिका होती है। यदि साझेदार समझदार है और इस अंक से प्रभा-वित व्यक्ति पर कुछ अंकुश डाल सकता है तो स्थिति सुधर जाती है। यदि साझेदार भी उनकी तरह हो तो आर्थिक समस्याओं में और भी अधिक वृद्धि हो जाती है।

स्वर्गीय सेठ रामकृष्ण डालमिया का जीवन इस अंक के अंतर्गत आता है।

| R A M K R I S H N A | D A L M I A |
|---|---|
| 20 1 13 11 20 10 21 8 14 1 | 4 1 12 13 10 1 |
| 119=11 | 41=5 |

11+5=16 धनांक

सेठ रामकृष्ण डालमिया ने एक मध्यम वर्ग के परिवार में जन्म लिया था और अपनी सूझबूझ और कठोर परिश्रम से उन्होंने इतनी उन्नति की थी कि उनका एक समृद्धिशाली औद्योगिक साम्राज्य स्थापित हो गया था। परन्तु उनमें लम्बे हाथ मारने की, हेरा-फेरी करने की, इधर की पूंजी उधर और उधर की पूंजी इधर करने की तीव्र प्रवृत्ति उत्पन्न हो गई थी। परिणाम यह हुआ कि उनके उद्योगों की आर्थिक व्यवस्था टूटने लगी और उन्होंने अनैतिक, अव्यावसायिक तथा गैर कानूनी कार्यविधियों का सहारा लेना आरम्भ कर दिया। अन्त में उनके जीवन काल में समृद्धि का जो महल उन्होंने निर्माण किया था वह धराशायी हो गया। कई वर्ष उन्हें जेल में भी व्यतीत करने पड़े।

## अंक 17

अंक 17 यह व्यक्त करता है कि इससे प्रभावित व्यक्ति एक से अधिक तरीकों से धनोपार्जन कर सकते हैं। वे अपने लिये एक नियमित व्यवसाय या व्यापार चुन सकते हैं और साथ-साथ अतिरिक्त आय के लिये बचे हुये समय में कोई दूसरा काम कर सकते हैं।

उनके जीवन में आय व्यय के उतार-चढ़ाव आते रहेंगे। सौभाग्यपूर्ण और दुर्भाग्यपूर्ण दोनों प्रकार की परिस्थितियों का उन्हें अपने जीवन में सामना करना पड़ेगा। इस अंक से सम्बन्धित व्यक्तियों के लिये आर्थिक मामलों वाले कागजों, समझौतों आदि पर उनकी सूक्ष्म परीक्षा करके हस्ताक्षर करना उचित होगा।

## अंक 18

यह अंक यह व्यक्त करता है कि इससे प्रभावित व्यक्तियों की तीव्र कल्पना शक्ति आर्थिक मामलों में उनके निर्णयों पर प्रभाव डालती है। ये

व्यक्ति जब धन संग्रह कर लेते हैं तो उसको हाथ से नहीं निकलने देते।

ऐसे व्यक्तियों पर उनके आर्थिक मामलों में उनके परिवार के सदस्य और साझेदार काफी हस्तक्षेप करते हैं और उनका निर्णय उन लोगों की सम्मति से प्रभावित होता है। प्रायः इससे उनको लाभ ही होता है।

इस अंक से प्रभावित व्यक्तियों को अचल सम्पत्ति और विरासत से धन का लाभ होता है।

ऐसे व्यक्तियों के जीवन में पारिवारिक झगड़ों से धन की हानि भी होती है।

## अंक 19

यह अंक यह व्यक्त करता है कि इससे प्रभावित व्यक्ति धनोपार्जन के सम्बन्ध में अत्यन्त महत्त्वाकांक्षी होते हैं। वह एक बड़ी धनराशि के स्वामी बनकर सामाजिक और सार्वजनिक क्षेत्र में सम्मानित स्थान प्राप्त करने को उत्सुक होते हैं।

सौभाग्यवश इन व्यक्तियों में संघटन की पर्याप्त योग्यता होती है और उसके द्वारा वे अपने आर्थिक मामलों में सहयोग देने वाले व्यक्तियों पर अच्छी तरह से नियंत्रण रख सकते हैं।

ऐसे व्यक्तियों के जीवन में ऐसे भी अवसर आते हैं जब वे ऐश आराम का जीवन व्यतीत करने के लिये अपव्यय करने लगते हैं। यदि इस प्रकार की प्रवृत्तियों पर अंकुश न लगाया जाये तो ऐसा समय भी आ सकता है कि उनका व्यय उनकी आय से अधिक होने लगे।

सट्टे आदि और पूंजी निवेशन में उनको बहुत बुद्धिमानी और सतर्कता से काम लेना चाहिये; क्योंकि यह अंक इस सम्बन्ध में सौभाग्य-सूचक नहीं है।

## अंक 20

यह अंक यह व्यक्त करता है कि इससे प्रभावित व्यक्ति धन सम्बन्धी मामलों में भाग्यवान है। इस अंक के प्रभाव से उससे सम्बन्धित व्यक्ति स्वतः काम करने को प्रेरित होते हैं और अपनी योग्यता से धनोपार्जन

करते हैं। चाहे वे मस्तिष्क सम्बन्धी काम करें या वे व्यवसाय जिनमें हाथों की कौशल की आवश्यकता हो, दोनों प्रकार के काम योग्यता के साथ सम्पन्न करेंगे और उससे उन्हें धन लाभ होगा।

पारिवारिक व्यवसाय, पैतृक सम्पत्ति, तथा विरासत से भी इन व्यक्तियों को धन लाभ होता है।

भविष्य के लिये रचनात्मक योजनायें बनाने तथा उन्हें व्यावहारिक रूप से कार्यान्वित करने से इन व्यक्तियों को लाभ होता है।

## अंक 21

अंक 21 एक ओर अधिक सौभाग्यसूचक अंक है और यह व्यक्त करता है कि इस अंक से प्रभावित व्यक्ति केवल अपने ही परिश्रम और योग्यता से धन नहीं प्राप्त करते हैं, उनको उच्चाधिकारियों और प्रभावशाली व्यक्तियों की सहायता से भी पर्याप्त आर्थिक लाभ होता है। सट्टे आदि तथा पूंजी निवेशन (शेयर आदि खरीदना वेचना) की ओर इन व्यक्तियों की स्वाभाविक प्रवृत्ति होगी। इनसे लाभ भी होगा यदि वे इस सम्बन्ध में निर्णय क्षणिक प्रेरणावश नहीं वल्कि, अच्छी तरह सोच विचार कर करें।

## अंक 22

धन-लाभ के सम्बन्ध में यह एक विशेष सौभाग्यसूचक अंक नहीं है। इससे प्रभावित व्यक्तियों को आर्थिक मामलों में बहुत उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं; जिससे उनके व्यवसाय और कार्य क्षमता पर प्रभाव पड़ता है। इस अंक से सम्वद्ध व्यक्ति धन की उपयोगिता को अच्छी तरह समझते हैं और प्रयत्न भी करते हैं कि कठिन समय के लिये उनके पास पर्याप्त पूंजी जमा रहे। इन व्यक्तियों को अपनी और अपने परिवार की अस्वस्थता के इलाज पर प्राय: काफी पैसा खर्च करना पड़ता है।

# 25

# अंक और प्रश्न

अंकों द्वारा प्रश्न के उत्तर की जिस पद्धति को हम इस प्रकरण में दे रहे हैं वह न तो कीरो के मत के अनुसार है और न सेफेरियल के।

इस पद्धति में जो अंक अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षरों के लिये निर्धारित किये गये हैं वे कीरो और सेफेरियल से भिन्न हैं। इस प्रश्नोत्तर पद्धति को 'मिस्टिक पिरामिड' (Mystic Pyramid) कहते हैं।

इस पद्धति में अंकों का निर्धारण इस प्रकार है :—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| A=1 | G=1 | M=2 | S=1 | Y=3 |
| B=6 | H=4 | N=5 | T=6 | Z=7 |
| C=2 | I=3 | O=4 | U=5 | |
| D=6 | J=8 | P=9 | V=1 | |
| E=2 | K=3 | Q=4 | W=5 | |
| F=7 | L=7 | R=8 | X=9 | |

पहले अंग्रेजी में वह प्रश्न लिखिये जिसका आप उत्तर चाहते हैं। प्रश्न संक्षिप्त रूप में लिखना चाहिये। मान लीजिये आपका प्रश्न है कि रति आपसे विवाह करेगी या नहीं ? तो प्रश्न अंग्रेजी में लिखकर प्रत्येक अक्षर के नीचे उसके लिये निर्धारित अंक इस प्रकार लिखिये :—

| WILL | TINA | MARRY | ME? |
|---|---|---|---|
| 8 1 6 3 | 6 3 5 1 | 2 1 8 8 3 | 2 2 |
| 22=4 | 15=6 | 22=4 | 4 |

आपने ऊपर देखा कि हमने प्रत्येक शब्द के अक्षरों के अंकों को अलग-अलग एकल अंकों में परिवर्तित कर दिया है। अब इन एकल अंकों को इस तरह जोड़िये—

$$4+6+4+4=18=9$$

इस प्रकार हमें जो 9 का अंक प्राप्त हुआ, यही रहस्यपूर्ण (Mystic) अंक है।

अब हम मिस्टिक अंक सबसे प्रथम लिखेंगे और उसके बाद वे एकल अंक लिखेंगे जो ऊपर दिये हुये प्रश्न के शब्दों से बने हैं।

9 4 9 4 4

इनसे पिरामिड बनाने के लिये हम हर दो अंकों को जोड़ते जायेंगे

और उनसे बने एकल अंक उन दोनों के बीच में ऊपर की पंक्ति में लिखते जायेंगे। यह क्रम उस समय तक जारी रखना होगा जब तक हम शिखर पर एकल या मूल अंक न प्राप्त कर लें। उदाहरण नीचे देखिये—

9
7 2
8 8 3
4 4 4 8
9 4 9 4 4

आपने देखा होगा कि हमने प्रथम पंक्ति (पंक्तियां नीचे से ऊपर गिनिये) में 9 और 4 को जोड़ा तो 13 हुआ, 13 का एकल अंक 4 हुआ। उसकोहमने दूसरी पंक्ति में 9 और 4 के बीच में लिख दिया। इसी तरह दूसरे अंकों 4 और 9 को जोड़ा तो फिर अंक 4 आया तो उसे हमने 4 और 9 के बीच में लिख दिया। इसी विधि के अनुसार हम पिरामिड बनाते हुये मूल अंक 9 पर पहुंच गये। इस अंक के संकेतात्मक अर्थ से हमें प्रश्न का उत्तर मिलेगा। संकेतात्मक अर्थ वाले शब्दों में हम नीचे प्रश्न कुंजी दे रहे हैं।

## प्रश्न कुंजी

1. आसार अच्छे हैं। अधिकतर ग्रहों का प्रभाव आपके अनुकूल है; परन्तु कुछ अशुभ चिन्ह भी हैं। अभी कुछ मत करिये। अधिक अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा कीजिये जो शीघ्र आने वाला है।

2. सामने कठिनाइयां हैं परन्तु वे ऐसी नहीं हैं कि उन पर विजय न पाई जा सके। उन कठिनाइयों को दूर करने का भरसक प्रयत्न कीजिये, फिर सफलता आपकी है। इस सम्बन्ध में कोई रिस्क भी लेना पड़े तो संकोच न कीजिये। साहस दिखाइये।

3. यदि आप कठोर परिश्रम नहीं कर सकते तो सफलता की आशा मत रखिये। यदि संकोच में पड़ेंगे तो आपको कुछ नहीं प्राप्त होगा। आपको सफलता मिलेगी या नहीं; इसमें विपरीत लिंग के व्यक्ति का हाथ होगा।

4. आप जो चाहते हैं, आपको प्राप्त होगा यदि आपको जो सहायता

प्रस्तुत की जा रही हो उसे स्वीकार करें। किसी प्रकार की सहायता को अस्वीकार न कीजिये। साहस के साथ वह काम कीजिये जिसको आप उचित समझते हैं।

5. आप विश्वास रखियें कि उपयुक्त समय पर आपको सफलता प्राप्त होगी, आप अपने ध्येय को प्राप्त करेंगे। आपके स्वप्न पूरे होंगे। अप्रत्याशित घटनायें और अकस्मात् मित्रता से आपको बहुत सहायता मिलेगी।

6. दूसरों के प्रभाव में न आइये। अपनी समझदारी, अपने अंतर्विवेक तथा ठीक और गलत के सम्बन्ध में अपने विश्वास पर निर्भर होइये। तभी आप सुखी और सफल होंगे। परन्तु अधिक आशा न करिये। यदि आपकी अभिलाषा उचित है तो वह पूर्ण होगी।

7. निकट भविष्य धुंधला है। रास्ते में बहुत कठिनाइयां हैं। आपको दुर्भाग्य, आर्थिक हानि और बदनामी का सामना करना पड़ेगा; विशेषकर जब आप दूसरों पर निर्भर हों। परन्तु सदा ऐसा नहीं रहेगा। सन्तोष रखिये। बुरा समय गुजर जायेगा।

8. आपकी अभिलाषा उसी समय पूर्ण होगी जब आप अपने आदर्शों के प्रति सच्चे रहेंगे, यदि आप दृढ़ निश्चय के साथ अपना ध्येय प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे, यदि उसी पथ पर डटे रहेंगे जो आपके अंतर्विवेक के अनुसार उचित और ठीक है।

9. आपके ग्रह आपके अत्यन्त अनुकूल हैं। सौभाग्य की आशा रखिये —यदि तुरन्त नहीं तो निकट भविष्य में। परन्तु अपनी अस्थायी सफलता, आर्थिक लाभ और उन्नति के कारण अपने निश्चय को न बदलिये।

हमने जो ऊपर उदाहरण स्वरूप प्रश्न लिखा था उसका मिस्टिक पिरामिड की पद्धति से मूल अंक 9 निकला था। उसका उत्तर प्रश्न कुंजी में देखिये। 9 अंक में जो उत्तर लिखा है कि टीना आपसे तुरन्त नहीं तो निकट भविष्य में विवाह अवश्य करेगी।

हम एक और उदाहरण देते हैं। कोई युवक किसी नौकरी के लिये परीक्षा में बैठना चाहता है। वह प्रश्न करता है कि वह सफल होगा या नहीं। इसका उत्तर हम इस प्रकार प्राप्त करेंगे :—

| WILL | I | SUCCEED |
|---|---|---|
| 5 3 7 7 | 3 | 9 5 2 2 2 2 6 |
| 22=4 | 3 | 28=10=1 |

4+3+1=8

3

1 2

3 7 4

8 4 3 1

मूल अंक 3 निकला। इसी से प्रश्न कुंजी से हमें उत्तर प्राप्त होगा। उत्तर है आपको सफलता तभी मिलेगी जब आप कठोर परिश्रम करेंगे। यदि आप यही सोचते रहेंगे कि परीक्षा में बैठें या नहीं तो यों ही रह जायेंगे।

## 26

## अंकों द्वारा अपने नाम से अपने आगामी वर्षों का भविष्य जानने की एक रहस्यपूर्ण पद्धति

यह पद्धति हमें एक पाश्चात्य अंक विद्याशास्त्री के पुराने ग्रन्थ से प्राप्त हुई। हमें यह इतनी रोचक और लाभप्रद लगी कि हम इसको पाठकों के सम्मुख रखने का लोभ संवरण न कर सके। इस पद्धति से अपने नाम के अंकों द्वारा एक साधारण शिक्षित व्यक्ति भी यह जानकारी प्राप्त कर सकता है कि उसके आने वाले वर्ष कैसे होंगे।

हमारा नाम बताता है कि हमारा आने वाला वर्ष हमारे लिये कैसा होगा। हमारे नाम का प्रथम अक्षर हमारे जीवन प्रथम प्रदोलन (Vibration) का प्रतिनिधित्व करता है, दूसरा अक्षर दूसरा प्रदोलन और इसी प्रकार आगे आने वाले अक्षर क्रमानुसार प्रदोलन करते रहते हैं।

इस पद्धति में अंग्रेजी वर्णमाला को इस प्रकार अंक निर्धारित किये गये हैं :—

| | |
|---|---|
| 1—A J S | 8—H Q Z |
| 2—B K T | 9—I R |
| 3—C L U | |
| 4—D M V | |
| 5—E N W | |
| 6—F O X | |
| 7—G P Y | |

यह याद रखिए कि कीरो के अंक विद्या सम्बन्धी नियमों का इस पद्धति से कोई सम्बन्ध नहीं है।

अंक 1 से 9 अपने प्रदोलन से क्या व्यक्त करते हैं, इसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है :—

1—शक्तिशाली अंक। सक्रिय। पुल्लिग। रचनात्मक। निर्भीकता और शक्ति। व्यावहारिक। स्वार्थी और स्वयं केन्द्रित। नेतृत्व और प्रभुत्व। निर्देश देने वाला, योजनायें बनाने वाला और उत्पादन करने वाला अंक।

2—अंक 1 से विपरीत। स्त्री लिंग और ग्रहणशील (receptive)। शान्तिप्रिय। कृपालु। व्यवहार कुशल, सुसंस्कृत, सौम्य। सदा सहायता देने वाला। डाक्टरों, नर्सों, माताओं और राजनयिकों (Diplomats) के लिये विशेष अंक।

3—स्पष्टोच्चारण, अभिनय, संगीत, नृत्य, कला सम्बन्धीव्यवसाय, फोटोग्राफी और 'मूर्तिकला, आदि पर इस अंक का विशेष प्रभाव है। यह अंक हर्षोल्लास देने वाला है।

4—एक सृजनात्मक अंक जो शोध कार्य, वाद-विवाद, तर्क और सूक्ष्म विश्लेषण से सम्बन्धित है। नयी व्यावसायिक योजनाओं के आरम्भ करने के लिये एक शुभ अंक है। झगड़ा फसाद उत्पन्न करने वाला और सांसारिकता से सम्बन्ध रखने वाला।

5—नरवस, तूफानी, उत्तेजक। यह दो पहलू वाला अंक है और इससे प्रभावित व्यक्ति नहीं जान पाता कि कौन सा पहलू अपनाना चाहिये। इसलिये अनिश्चितता से पूर्ण है। रचनात्मक भी और धवंसकारी भी है। हर्षोल्लास और उदासीनता दोनों देने वाला। आशात्मक और निराशात्मक दुर्भाग्य पूर्ण। परिवर्तनशील।

6—अंक 2 के समान। शान्तिप्रियता और हर्षोल्लास देने वाला प्रेरणात्मक तथा अंतःप्रज्ञात्मक। विश्वास प्रदान करने वाला। सार्वभौमिक, धार्मिक विचारों और स्वास्थ्य पर इसका विशेष प्रभाव पड़ता है। आर्थिक मामलों के लिये महत्वहीन। विवाह, शान्ति, सुविधा, एशो आराम आदि के लिये शुभ।

7—रहस्यात्मक, अस्पष्ट (धुंधला), अपनी बात छिपाने वाला। अत्यन्त रुढ़िवादी और अल्पभाषी। नयी योजनाओं के आरम्भ करने के लिये अशुभ। अग्रसर न होने वाला। गुप्त विद्याओं और धार्मिक रुचि वालों के लिए आदर्श अंक, यह अंक अकेलापन और एकान्तप्रियता देने वाला है।

8—यह मस्तिष्क सम्बन्धी अंक है। विज्ञान और व्यापार में सफलता का द्योतक है। संगीत, कला आदि के लिये यह शुभ अंक नहीं है। सूक्ष्म विश्लेषण करने वाला, नेतृत्व देने वाला, योजनाओं को व्यावहारिक रूप देने वाला और सहानुभूति पूर्ण।

9—यह सार्वलौकिक सक्रिय अंक है। यह वैयक्तिक और सार्वलौकिक प्रेम व्यक्त करता है। यह अंक सब प्रदोलनों (vibrations) का उद्गम है और कठिनाइयों और बाधाओं से लड़ने की क्षमता देता है। यह अंक सदगुण, ईमानदारी, सत्यता, निष्ठा और दृढ़ता का प्रतीक है। यह अंक कला और संगीत के क्षेत्र में भी सफलता दिलाता है।

अब हम एक व्यक्ति के नाम का उदाहरण देकर बताते हैं कि नाम के द्वारा भविष्य कैसे जाना जाता है।

| J | O | H | N | R | I | C | H | A | R | D | F | E | R | R | I | S |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 |
| 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 |
| 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 |

ऊपर हमने नाम के अक्षरों के नीचे 1, 2, 3, 4 आदि के क्रम से जीवन के वर्ष लिख दिये हैं। इससे यह प्रगट होता है कि उपर्युक्त व्यक्ति के जीवन के वर्ष उस अक्षर (और उससे सम्बन्धित अंक) से प्रभावित होते हैं जिसके अंतर्गत वे वर्ष आते हैं। जैसे 'J' के नीचे 1, 18, 35 वर्ष लिखे हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि इस व्यक्ति को 1वां, 18वां और 35 वां वर्ष 'J' अक्षर या उसके अंक से प्रभावित है।

यदि हम जानना चाहें कि उपर्युक्त व्यक्ति का 29 वर्ष कैसे व्यतीत होगा तो हमें देखना होगा कि 29 वां वर्ष किस अक्षर के नीचे है और किस अंक से प्रभावित है। देखिये 29 वां वर्ष 'F' अक्षर के नीचे आता है। 'F' का अंक है 6। अब यदि हम 6 अंक का संकेतात्मक अर्थ समझ लेंगे तो हम बता सकेंगे कि उसका 29 वां वर्ष कैसा होगा। अंक 6 शान्तिप्रियता का अंक है। इस लिये 29 वां वर्ष शान्तिपूर्ण और बिना किसी अप्रिय घटना के व्यतीत होगा। उसके लिये हर्षोल्लास के अवसर आयेंगे। आर्थिक कार्य-विधियों में कोई सक्रियता नहीं होगी। इसका अर्थ है कि यदि वह व्यापार करता है तो नियमित रूप से चलता रहेगा और यदि वह कोई नौकरी करता है तो उसमें कोई विशेष उन्नति के अवसर नहीं आयेंगे। उस वर्ष उसका जीवन अधिकतर चिन्ता-मुक्त रहेगा।

इसी प्रकार किसी भी व्यक्ति के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त हो सकती है। इस पद्धति के जन्मदाता का कहना है कि 1 से 9 अंक के जो प्रभाव वर्णित किये गये हैं उनका शाब्दिक अर्थ नहीं निकालना चाहिये, उससे क्या संकेत मिलता है, उस पर ध्यान देना चाहिये। दो बातें और इस सम्बन्ध में ध्यान देने योग्य हैं :—

(1) जब किसी वर्ष का अन्त या आरम्भ हो रहा हो तो पिछले और अगले वर्ष दोनों का कुछ हद तक मिश्रित प्रभाव पड़ेगा।

(2) महिलाओं के सम्बन्ध में उनके अविवाहित काल के नाम से गणना करनी चाहिये।

27

## जन्म मास के अनुसार फलादेश

पाश्चात्य ज्योतिष में जिस मास में सूर्य जिस राशि में स्थित हो उसके अनुसार फलादेश देखने का बहुत प्रचलन है। उन्होंने इस सम्बन्ध में विस्तृत रूप से विचार किया है। इस प्रकरण में हम कीरो के अनुसार सायन सूर्य के विभिन्न राशियों में भ्रमण करने के जो मास होते हैं उनमें जन्म लेने वाले व्यक्तियों के गुण स्वभाव तथा उनके जीवन पर साधारणतया क्या प्रभाव पड़ता है, इसका संक्षिप्त विवरण नीचे दे रहे हैं :—

### 21 मार्च से 19 अप्रैल तक
### (अधिपति मंगल—अंक 9)

इस अवधिकाल में पाश्चात्य ज्योतिष के अनुसार सायन सूर्य मेष (Aries) राशि में स्थित होता है। इस मास में जन्म लेने वाले व्यक्तियों की इच्छा शक्ति अत्यन्त प्रवल होती है, वे दृढ़ निश्चयी होते हैं और अपने कार्य को सम्पन्न करने के लिये पूर्ण रूप से हठी वन जाते हैं। उनमें परि-स्थितियों से जूझने का जन्म जात गुण होता है। उनमें नेतृत्व की पूर्ण क्षमता और संघटन की योग्यता होती है। वे स्वतंत्र स्वभाव के होते हैं और प्रत्येक कार्य को अपने तरीके से करना चाहते हैं। यदि कोई उनके काम में हस्त-क्षेप करे तो वे उसको छोड़ देना ही पसन्द करते हैं।

यदि ये व्यक्ति अपने मानसिक सन्तुलन को वनाये रक्खें तो सर्वोच्च स्थान तक पहुंचना उनके लिये कठिन नहीं होता। प्राय: सफलता उनकी वरवादी का कारण भी वन जाती है; क्योंकि प्रशंसा और चापलूसी से वे हवा में उड़ने लगते हैं। इससे मानसिक सन्तुलन पर प्रभाव पड़ता है। वे बदमिजाज और हठी हो जाते हैं और चाहे ठीक हों या गलत अपनी ही बात पर अड़े रहते हैं।

इन व्यक्तियों में मानसिक शक्ति का अतुल भण्डार होता है और नयी तथा मौलिक योजनायें वनाने में पूर्ण रूप से सक्षम होते हैं। उनको अपना

ही दृष्टिकोण ठीक दिखाई देता है और दूसरों के विचारों को वे तभी ग्रहण करते हैं जब वे उनकी यर्थाथता से सन्तुष्ट हो जायें।

वे आवेशात्मक होते हैं और हर बात में जल्दबाजी करना उनके स्वभाव का एक अंग होता है। वे हर बात को सीमा तक ले जाते हैं। वे अत्यन्त स्पष्टवादी होते हैं और उनमें व्यवहार कुशलता की कमी के कारण प्रायः लोग उनके विरोधी या शत्रु बन जाते हैं। वे अत्यधिक महत्वाकांक्षी होते हैं और जीवन में सफलता प्राप्त करके खूब धन अर्जित करते हैं और उच्च उत्तरदायित्व के पदों को प्राप्त करते हैं।

यदि यह राशि किसी प्रकार दूषित हो तो उससे जातकों पर बुरा प्रभाप पड़ता है और ऐसी स्थिति में जातक अपने गुणों में गिर जाते हैं और अपने कार्य को पूर्ण करने में नैतिक या अनैतिक सभी तरीकों को इस्तेमाल करते हैं। वे क्रूर, क्रोधी और हिंसात्मक बन जाते हैं और प्रायः हिंसा के शिकार होते हैं। जिन जातकों पर कोई बुष्प्रभाव नहीं होता वे अच्छे स्वामी या अधिकारी होते हैं; परन्तु साथ-साथ अनुशासन प्रिय भी होते हैं।

इस अवधिकाल में जन्मे व्यक्ति यही चाहते हैं कि घर में या बाहर उनको प्रमुख समझा जाये और उनके आदेशों का पालन हो।

यह भी देखा गया है कि इस अवधिकाल में जन्म लेने वाले व्यक्ति अपने स्नेह या प्रेम के कारण कष्ट उठाते हैं। त्रिया चरित्र समझने में वह असमर्थ होते हैं और स्त्रियों के साथ सम्बन्धों में वे हानि उठाते हैं।

इस अवधिकाल की राशि का स्वामी मंगल होता है और इसमें स्थित सूर्य अपनी उच्च राशि मेष में होता है उनमें उग्रता, प्रतिभा, महत्त्वाकांक्षा, साहस, सक्रियता, अकारात्मकता उत्साह और स्फूर्ति होने का यही कारण है।

इन व्यक्तियों को सफलता प्राप्त करने के लिये अपने जल्दबाजी और आवेशात्मक स्वभाव पर नियंत्रण रखना चाहिये।

वे किसी प्रकार की रूढ़िवादिता और अपने ऊपर अंकुश जरा भी पसन्द नहीं करते। उनका पारिवारिक जीवन प्रायः सुखद तभी होता है जब उनके

परिवार के सदस्य उनकी ही विचारधारा के न हों; परन्तु जहां तक सांसारिक मामलों में सफलता का प्रश्न है उनका दृढ़ निश्चय, और उनकी संघटन और कार्य सम्पन्न करने की योग्यता के लिये कोई भी ऊंचाई उनके लिये कठिन और दूर नहीं है।

इस अवधिकाल में जन्म लेने वाले व्यक्ति प्रायः खूब स्वस्थ होते हैं; परन्तु आवश्यकता से अधिक काम करने के कारण और अपने आवेशात्मक स्वभाव के कारण उन्हें स्नायुमण्डल की थकावट और उदर रोगों का शिकार बनना पड़ता है। इस अवधिकाल के व्यक्ति दुर्घटनाओं, चोट आघात आदि से भी पीड़ित होते हैं। उनको नियमित रूप से व्यायाम करना चाहिये और विश्राम को भी महत्त्व देना चाहिये।

नोट—भारतीय ज्योतिष की मान्यताओं के अनुसार सूर्य मेष राशि में 13 अप्रैल से 12 मई तक स्थित होता है; परन्तु क्योंकि हमारी यह पुस्तक पाश्चात्य मान्यताओं पर आधारित है, इसलिये सूर्य के विभिन्न राशियों में भ्रमण करने के अवधिकाल हमने पाश्चात्य ज्योतिष के नियमों के अनुसार दिये हैं।

## 20 अप्रैल से 20 मई तक
## (अधिपति शुक्र अकारात्मक—अंक 6)

पाश्चात्य ज्योतिष के अनुसार इस अवधिकाल में सूर्य वृषभ (Taurus) राशि में स्थित होता है। इस अवधिकाल में जन्म लेने वाले व्यक्तियों में प्रत्येक काम के लिये दृढ़ निश्चयता होती है। वे आवश्यकता से अधिक हठी होते हैं। परन्तु वे परिश्रमी होने पर भी सबके साथ धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं, वे क्रोधी नहीं होते हैं; परन्तु यदि उन्हें सताया जाये तो वे बैल के समान सींग मारने को उतारू हो जाते हैं। वह मानसिक और शारीरिक दोनों रूप से अत्यन्त सहनशील होते हैं।

ये लोग बहुत मिलनसार होते हैं और अपने अतिथियों का सत्कार करने में उन्हें बहुत प्रसन्नता होती है। अच्छे वस्त्रों और अच्छे भोजन के वे शौकीन होते हैं। वे अपने घर को भी सुसज्जित रखना पसन्द करते हैं। वे इतने धनवान नहीं होते हैं जितना अन्य लोग उन्हें समझते हैं; क्योंकि ऊपरी

दिखावे में ये लोग बहुत चतुर होते हैं।

इस अवधिकाल में जन्म लेने व्यक्तियों को कम उम्र में विवाह नहीं करना चाहिये; क्योंकि इनका प्रथम प्रेम सम्बन्ध अधिकतर असफल होता है।

इस अवधिकाल के व्यक्ति विश्वस्त मित्र और उत्तम सरकारी अधिकारी बनते हैं। जल सेना और स्थल सेना में भी वे उच्च अधिकारी होकर सफल प्रकाशित होते हैं।

आर्थिक दृष्टि से जन्म लेने के लिये यह अवधिकाल अशुभ नहीं है। इस काल में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सहयोग, साझेदारी, संघटनों और विवाह से धन लाभ होता है।

इन लोगों में धन अर्जित करने की और धनवान होने की उत्कट आकांक्षा होती है जिससे वे खूब शान शौकत और ऐशो आराम से रह सकें।

इस अवधिकाल में जन्म लेने वाली स्त्रियां धनी घरानों में विवाहित होती हैं; परन्तु उनके एक से अधिक विवाह होने की संभावना होती है।

इन लोगों के लिये लाभप्रद व्यवसाय है भूमि विकास, खदानों और खनिज पदार्थों का विकास, इमारतें बनवाना और उनका प्रबन्ध करना, होटल और जलपान गृह चलाना आदि।

इन व्यक्तियों को गुरदे के रोग तथा गले के रोग और जननात्मक अंगों में रोग होने की सम्भावना होती है। जो लोग आवश्यकता से अधिक परिश्रम करते हैं उन्हें मूर्च्छा का रोग भी हो सकता है।

नोट—भारतीय ज्योतिष के नियमों के अनुसार सूर्य वृषभ राशि में 13 मई से 14 जून तक स्थित रहता है।

### 21 मई से 20 जून तक
### (अधिपति बुध—अंक 5)

पाश्चात्य ज्योतिष के अनुसार सूर्य इस अवधिकाल में मिथुन (Gemini) राशि में स्थित होता है।

इस अवधि काल में जिन व्यक्तियों का जन्म होता है उनके दो रूप होते हैं, दो तरह के स्वभाव होते हैं और दो तरह की विचारधारायें होती हैं।

उनका मस्तिष्क इतना तीव्रग्राही होता हैं कि वह कठिन-से-कठिन बात को तुरन्त समझ लेते हैं। वह सोसाइटी में अत्यन्त मन मोहक होते हैं और उनका स्वभाव ऐसा मीठा होता है कि उनसे मिलकर तबीयत खुश हो जाती है। परन्तु वह अपनी बात पर टिकने वाले नहीं होते और न ही कोई उनको अपनी पकड़ में रख सकता है। अपने मन में तो वे यह सोचते हैं कि वे स्थिर स्वभाव के हैं और वफादार हैं; परन्तु वास्तव में वे इतने परिवर्तनशील होते हैं कि पता नहीं किस समय वह क्या व्यवहार करने लगें। यदि वे अपनी इच्छा-शक्ति को दृढ़ बना लें और एक बात पर जम जायें तो वे जो भी काम हाथ में लें उसको अत्यन्त सफलतापूर्वक सम्पन्न करने में सफल होते हैं।

इस अवधिकाल में जन्म लेने वाले व्यक्ति सट्टे की तरह सौदों में, स्टाक एक्सचेन्ज (शेयर मारकेट) में, नयी कम्पनियां खोलने में, आविष्कारों को व्यापारिक रूप देने में और व्यापार सम्बन्धी योजनायें बनाने में बहुत सफल होते हैं और इन कार्यों द्वारा खूब धन अर्जित करते हैं। राजनियक बातचीत में वे निपुण होते हैं और यात्रा के शौकीन होते हैं।

प्रेम के मामलों में वे एक पहेली हैं। वे बड़े जोश के साथ प्रेम का इजहार करते हैं, अपने प्रेम जाल में किसी को फंसा लेते हैं और फिर कुछ बाद में ऐसे बन जाते हैं कि अपनी प्रेमिका या प्रेमी को जानते ही नहीं।

उनके जीवन में उतार चढ़ाव आते रहते हैं; परन्तु उससे उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। जब समय बुरा होता है तो वे हताश से दिखाई देते हैं; परन्तु जब समय अच्छा आ जाता है तो वे फिर प्रफुल्ल हो उठते हैं। बुरे समय की उन्हें याद ही नहीं रहती।

वे अत्यन्त कुशाग्रबुद्धि के होते हैं पर न तो एक स्थान में स्थायी तौर पर रह सकते हैं और न किसी व्यवसाय में।

वे मेधावी, मौलिक विचार वाले और सक्रिय होते हैं; परन्तु उनमें स्थिरता और दृढ़ निश्चयता की बहुत कमी होती है। यदि वे इन कमियों को दूर करलें तो अपनी जीवन प्रगति में अत्यन्त सफल हो सकते हैं।

इन लोगों के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में बहुत कुछ इस बात पर निर्भर

होता है कि उनका समय कैसा गुजर रहा है। जब वे अपनी सफलताओं के फलस्वरूप प्रसन्नचित्त होते हैं तो बिल्कुल स्वस्थ रहते हैं। असफलाओं के कारण हताश और निरुत्साहित होने पर उन्हें स्नायुतंत्र के रोग घेर लेते हैं और 'नरवस ब्रेक डाउन' हो सकता है।

उनकी जिन रोगों की ओर प्रवृत्ति है वह स्नायुतंत्र (nervous system) के रोग, फेफड़े के रोग जैसे प्लूरेसी और निमोनिया। उनको त्वचा के रोग तथा रक्त सम्बन्धी रोग भी हो सकते हैं।

नोट—भारतीय ज्योतिष के नियमों के अनुसार सूर्य मिथुन राशि में 15 जून से 15 जुलाई तक स्थित रहता है।

### 21 जून से 20 जुलाई तक
### (अधिपति चन्द्रमा—अंक 2-7)

पाश्चात्य ज्योतिष के नियमों के अनुसार इस अवधिकाल में सूर्य कर्क (Cancer) राशि में स्थित होता है।

इस अवधि काल में जो भी व्यक्ति जन्म लेते हैं वे वहुत परिश्रमी होते हैं; परन्तु या तो वे अत्यन्त सौभाग्यशाली होती है या अत्यन्त दुर्भाग्य शाली। किसी नियमित व्यवसाय में यदि वे काम करते हैं तो उनको आर्थिक सफलता प्राप्त होती है। परन्तु शेयरों के जुये में या सट्टे आदि में वे प्राय: हानि उठ ते हैं। उनमें सट्टे बाजी के प्रति स्वभावत: बहुत आकर्षण होता है और इसके कारण वह परिश्रम से बनाये हुये व्यापार को बरबाद कर देते हैं।

उनमें एक विशेष प्रवृत्ति यह है कि वे किसी योजना को लेकर आगे बढ़ते हैं; परन्तु जब उसे कार्यान्वित करने का समय आता है तो वे अपने विचार बदल देते हैं और काम को रोक देते हैं। अर्थिक मामलों में उनके जीवन में बहुत उतार चढ़ाव आते हैं। उनको चाहिये कि अपनी सट्टे बाजी या हर बात में जुआ खेलने के स्वभाव पर अंकुश रक्खें और जो धन अपने नियमित व्यापार से अर्जित करें उसे आवश्यकता के समय के लिए सुरक्षित रक्खें।

इस अवधिकाल में जन्म लेने व्यक्ति बहुत ऊंचे पदों पर पहुंच जाते हैं और बहुत प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं। परन्तु बाहर उनका कितना ही

नाम क्यों न हो, उनका पारिवारिक जीवन सुखद नहीं होता।

वे बड़ी-बड़ी योजनाओं के स्वप्न देखते हैं। दूसरों की भलाई के लिये उनके ऊंचे आदर्श होते हैं; परन्तु यदि उनका विरोध हो और उनके काम की कटु आलोचना की जाये तो वे मानवद्वेषी बन जाते हैं और अपने आपको इस तरह के कामों से अलग कर लेते हैं।

वे अत्यन्त स्नेही स्वभाव के होते हैं; परन्तु वे अपने स्नेह का प्रदर्शन नहीं करते। इसलिये लोग उन्हें रूखे स्वभाव का समझने लगते हैं। उनकी कल्पना शक्ति बहुत तीव्र होती है और वे बहुत सफल लेखक और संगीत संयोजक बन सकते हैं। उनकी स्मरण शक्ति बहुत अच्छी होती है और जो बात उनके दिमाग में एक बार प्रवेश कर जाती है उसे वे कभी नहीं भूलते। वे अपनी पारिवारिक परम्पराओं के अनुयायी होते हैं।

उनको अपने आर्थिक मामलों में बहुत सतर्क होने की आवश्यकता है क्योंकि उनके जीवन में बहुत परिवर्तन आते हैं। नयी कम्पनियों और नयी योजनाओं में पूंजी निवेशन करने में उन्हें हानि होने की सम्भावना होती है। आर्थिक मामलों से सम्बन्धी कागजात पर उन्हें सूक्ष्म रूप से परीक्षा करके हस्ताक्षर करना चाहिये।

दूसरों के साथ संपर्क स्थापित करने से प्राय: उन्हें विचित्र प्रकार से धन लाभ होता है। अप्रत्याशित स्रोतों से भी उन्हें कभी कभी काफी धन लाभ होता है।

निम्नलिखित वस्तुओं से सम्बन्धित संस्थानों में पूंजी निवेशन से उन्हें सदा आर्थिक लाभ होता है :—

तेल, पेट्रोल और उससे सम्बन्धित उत्पादन, कोयला, जहाज रानी, रेडियम, प्लेटिनम, बिजली, पुरावस्तुये (Antiques), दवाइयों और जलीय वस्तुओं का आयात।

स्वास्थ्य के सम्बन्ध में उन्हें उदर सम्बन्धी रोगों, अन्दरूनी ट्यूमर, केन्सर और ड्रापसी जैसे रोगों के प्रति सतर्क रहना चाहिये। उनको भविष्य सम्बन्धी चिन्ताओं से अपने आपको मुक्त रखना चाहिये और काल्पनिक आपत्तियों की ओर ध्यान नहीं देना चाहिये। इसके कारण उनके स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ सकता है।

सर्दी जुकाम, गठिया, फेफड़ों की खराबी और रक्तविकार जैसे रोगों की ओर भी इन लोगों की प्रवृत्ति होती है।

नोट—भारतीय ज्योतिष के नियमों के अनुसार सूर्य कर्क राशि में 16 जुलाई से 16 अगस्त तक स्थित रहता है।

## 21 जुलाई से 20 अगस्त तक
## (अधिपति सूर्य—अंक 1-4)

पाश्चात्य ज्योतिष के नियमों के अनुसार सूर्य इस अवधि काल में सिंह (Leo) राशि में स्थित होता है।

इस अवधिकाल में जन्म लेने वाले व्यक्ति अत्यन्त महत्वाकांक्षी होते हैं और उनका ध्येय यही होता है कि सर्वोच्च स्थान पर पहुंच जायें। चाहे जितनी हीन परिस्थिति में उनका जन्म हुआ हो, वे अपनी प्रबल इच्छा शक्ति, दृढ़ निश्चय और योग्यता द्वारा उन्नति करते हैं और कोई भी व्यवसाय हो उसमें वे एक ऊंचा स्थान प्राप्त करने में सफल होते हैं।

इस अवधिकाल में जन्म लेने वाले बड़े दिलवाले और उदार हृदय होते हैं। वे अत्यन्त स्वतंत्र स्वभाव के होते हैं और यह जरा भी पसन्द नहीं करते कि वे किसी से निर्देश लें या कोई उन पर अंकुश लगाये। वह जिस काम को करने का वीड़ा उठाते हैं उसको सफलता पूर्वक सम्पन्न करके ही चैन लेते हैं। उनमें एक ऐसी आकर्षण शक्ति होती है कि लोग बिना संकोच के उनके निर्देशों का पालन करते हैं। लोगों की उनके प्रति निष्ठा होती है और जब वे नेतृत्व संभालते हैं तो अपने अधीनस्थ काम करने वालों के निःसंकोच सहयोग से कठिन से कठिन परस्थितियों में भी सफलता प्राप्त करते हैं।

इन व्यक्तियों में जोश और उत्साह तभी तक रहता है जब तक वे सक्रिय बने रहें। यदि किसी कारणवश अपने जीवन में खाली बैठना पड़ जाये या उनके पास कोई काम न हो तो वे हतोत्साह हो जाते हैं।

उन्हें स्पष्टवादिता पसन्द होती है और इसके कारण उनके अनेक विरोधी और शत्रु बन जाते हैं। उनमें क्रोधकी मात्रा पर्याप्त होती है; परन्तु शीघ्र ही शान्त भी हो जाते हैं।

आर्थिक मामलों में इस अवधिकाल में जन्म लेने व्यक्ति अधिक सौभाग्यशाली माने जाते हैं। नियमित व्यवसायों में अधिकतर सफल होते हैं। अपने उच्च अधिकारियों द्वारा या अपने से अधिक उम्र वाले लोगों के द्वारा उन्हें आर्थिक लाभ होता है। सोने के खदानों में पीतल के कारखानों में, हीरों के क्रय विक्रय में, और आयात निर्यात में पूंजी निवेश से उन्हें आर्थिक लाभ की सम्भावना होती है।

ये व्यक्ति अधिकतर स्वस्थ रहते हैं। और यदि उन्हें कोई बीमारी हो भी तो वह उससे शीघ्र ठीक हो जाते हैं। उनका मुख्य रोग हृदय स्पन्दन में अनियमितता है जिसके कारण शरीर में रक्त-संचालन पर दुष्प्रभाव पड़ सकता है। कभी कभी उन्हें गठिया का रोग पीड़ित कर सकता है। उनके लिये खुली हवा में रहना और धूप में बैठना, औषधियों से अधिक लाभदायक प्रमाणित होते हैं।

नोट—भारतीय ज्योतिष के नियमों के अनुसार सूर्य सिंह राशि में 17 अगस्त से 16 सितम्बर तक स्थित रहता है।

### 21 अगस्त से 20 सितम्बर तक
### (अधिपति बुध नकारात्मक—(अंक 5)

पाश्चात्य ज्योतिष के नियमों के अनुसार इस अवधिकाल में सूर्य कन्या (Virgo) राशि में स्थित होता है।

इस अवधिकाल में जन्म लेने व्यक्ति प्रायः अपने जीवन में सफल होते हैं। वे कुशाग्र बुद्धि वाले होते हैं और उनकी स्मरण-शक्ति बहुत अच्छी होती है। जिनके साथ वे काम करते हैं उनके प्रति वे सावधान रहते हैं और साधरणतया वे किसी के धोखे में नहीं आते।

उनमें मौलिकता तो विशेष नहीं होती है; परन्तु जिन योजनाओं में वे दिलचस्पी ले लेते हैं, उनको वे सफलतापूर्वक कार्यान्वित करते हैं। जो काम अन्य लोग समाप्त करने में असमर्थ रहते हैं उनको भी वे सम्पन्न कर देते हैं। जिस काम को हाथ में लेते हैं उस पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित कर देते हैं और उसको पूर्ण करके चैन लेते हैं।

ये लोग जो काम हाथ में लेते हैं, उसके सब पहलुओं का सूक्ष्मता से

विश्लेषण करते हैं। वे अपने घर को साफ सुथरा और सुसज्जित रखते हैं और हर वस्तु को अपने उपयुक्त स्थान पर देखना पसन्द करते हैं।

वह उच्च अधिकारियों और सम्मानित व्यक्तियों के प्रति आदर भाव रखते हैं और कानून और नियमों का पालन करते हैं। वे योग्य वकील और कुशल वक्ता बन सकते हैं; परन्तु इस दिशा में वे कोई मौलिकता नहीं प्रदर्शन कर पाते हैं। जो सामग्री पहले से मौजूद होती है उसका पूर्ण योग्यता के साथ इस्तेमाल करते हैं। व्यापार और विज्ञान के शोध कार्य में भी वे सफल होते हैं।

उनमें अपने में ही केन्द्रित हो जाने की प्रवृत्ति होती है और अपने ध्येय को प्राप्त करने के लिये स्वार्थी बन जाते हैं। वे दूसरों की सहायता पर अधिक विश्वास नहीं करते और आत्मनिर्भर होना पसन्द करते हैं।

वे अच्छाई या बुराई दोनों में आखिरी हद तक पहुंच जाते हैं। यदि उनमें धन संचय की अभिलाषा जन्म ले ले तो वे धन अर्जित करने के लिये सब कुछ करने को तैयार हो जाते हैं। इस सम्बन्ध में वे अपने नियम और कानून पालन की स्वाभाविक प्रवृत्ति को भी तोड़ देते हैं।

प्रेम के सम्बन्ध में इनका स्वभाव समझना बहुत कठिन है। इस अवधि-काल में जन्मे पुरुष और स्त्री या तो सच्चे प्रेमी होते हैं या अत्यन्त विश्वासघाती निकलते हैं।

यदि उनमें परिवर्तन आता है तो वे अपने स्वाभाविक रूप और अपने आचरण बिल्कुल विपरीत बना लेते हैं और अपने वास्तविक रूप को छिपाने की उनमें अपूर्व क्षमता होती है। उनका नशीले द्रव्य सेवन करने तथा मदिरा पान की ओर आकर्षण होता है और यदि अपनी इस प्रवृत्ति पर वह अंकुश रखने में असमर्थ होते हैं तो पतन के खड्ड में गिर जाते हैं।

वे मानव स्वभाव को अच्छी तरह समझ सकते हैं और एक ही बार देखने पर आदमी को परख लेते हैं। परन्तु अपने सम्बन्ध में उनमें आत्म विश्लेषण की प्रवृत्ति इतनी अधिक होती है कि उस पर नियंत्रण न रखा जाये तो वे आगे चलकर मानसिक सन्तुलन खो बैठते हैं।

पढ़ने लिखने में उनको बहुत रुचि होती है और साहित्य और कला के

वे सफल आलोचक बन सकते हैं। अपने अथक परिश्रम और हर बात को ठीक तरह समझ जाने की क्षमता के कारण वे साधारणतया जीवन में सफलता तो प्राप्त करते हैं। उनकी योग्यता को बहुत समय तक मान्यता नहीं प्राप्त होती; परन्तु देर सवेर वे अपना नाम रोशन करने में सफल हो जाते हैं।

इन लोगों में एक विशेष बात यह होती है कि उम्र बढ़ जाने पर भी ये युवा दिखाई देते हैं।

वे चिड़चिड़े मिजाज के होते हैं और साधारण-सी बात पर क्रुद्ध हो उठते हैं; परन्तु वे हिंसात्मक नहीं होते।

वे अधिकतर स्वस्थ होते हैं; परन्तु स्वयं वे अपने आपको स्वस्थ नहीं समझते। वे रोगों के विषय में पुस्तकों, समाचार पत्रों आदि में पढ़ते हैं और ऐसा समझने लगते हैं कि वे भी इस प्रकार के रोगों से ग्रसित हैं। उन्हें अंतड़ियों के रोग, कब्ज, उदर शूल, पेचिश जैसे रोगों के होने की सम्भावना होती है। उनके कन्धे और बाहु न्यूराइटिस से पीड़ित हो सकते हैं। उनके लिये उचित है कि सादा भोजन लें, अधिक पानी पियें, खुली हवा में रहें और साधरण से अधिक सोयें।

इस अवधि काल में जन्म लेने वाले व्यक्ति भूमि और मकानों के क्रय-विक्रय से बहुत आर्थिक लाभ उठा सकते हैं।

नोट—भारतीय ज्योतिष के नियमों के अनुसार सूर्य कन्या राशि में 17 सितम्बर से 16 अक्टूबर तक स्थित रहता है।

### 21 सितम्बर से 20 अक्टूबर तक
### (अधिपति शुक्र नकारात्मक—अंक 6)

पाश्चात्य ज्योतिष के नियमों के अनुसार इस अवधि काल में सूर्य तुला राशि (Libra) में स्थित होता है।

इस अवधि काल में जन्म लेने वाले व्यक्ति बहुमुखी स्वभाव और गुणों वाले होते हैं; परन्तु जो कुछ भी वे करते हैं उसका मस्तिष्क से सम्बन्ध अवश्य होता है।

वे विवेक से काम करने वाले होते हैं; परन्तु यदि उन्होंने किसी विशेष

पथ पर चलने का दृढ़ निश्चय कर लिया हो तो उससे उनको हटाना कठिन होता है। वह अपना काम पूर्ण ही करके रहते हैं, उसके लिये कोई भी कीमत चुकानी पड़े।

जो कोई तर्क उनके सामने पेश किया जाता है उसकी वह अपने मस्तिष्क में नाप तोल करते हैं। इस अवधिकाल में जन्म लेने वाले व्यक्ति सार्वजनिक कार्य विधियों में अत्यन्त दिलचस्पी लेते हैं और अपने साथियों और अपनी जाति के लोगों के जीवन को उन्नत और सुखी बनाने में प्रयत्नशील रहते हैं।

उनका विवेक और तर्कसंगत स्वभाव उन्हें कानून के अध्ययन की ओर आकर्षित करता है। वे कानून बनाने में दक्ष होने का प्रयत्न करते हैं और इस विषय पर पुस्तकें या लेख लिखने में दिलचस्पी लेते हैं।

इस अवधिकाल में जन्म लेने वाले बहुत से व्यक्ति अपना पूरा जीवन काल अध्ययन और शोधकार्य में व्यतीत कर देना चाहते हैं। वे अत्यन्त कुशल वैज्ञानिक और चिकित्सक बनते हैं। वे जो कुछ भी करते हैं सम्पूर्णता के साथ सम्पन्न करते हैं।

इन व्यक्तियों को यदि अपने चारों ओर का वातावरण अपने अनुकूल नहीं लगता तो वे उदास रहने लगते हैं और एकान्तप्रिय बन जाते हैं।

वे शान्तिप्रिय होते हैं और झगड़े फसाद से दूर रहना पसन्द करते हैं। वे साफ सुथरे रहते हैं और किसी प्रकार की अव्यवस्था उन्हें अरुचिकर होती है।

ऊंचे आदर्श और दृढ़ नैतिक सिद्धान्त उनके जीवन के मूलाधार होते हैं। अपने विचारों में निश्चित वे किसी बात की यथार्थता को स्वीकार नहीं करते हैं जब तक उसके ठोस प्रमाण न हों।

प्रेम का प्रदर्शन करना उनके स्वभाव के विपरीत होता है। वे बहुत सतर्कता के साथ प्रेम के क्षेत्र में कदम रखते हैं। इसके कारण वे प्रायः भ्रान्ति में पड़ जाते हैं और उन्हें निराश होना पड़ता है। इस अवधिकाल के व्यक्ति अत्यन्त लोकप्रिय होते हैं और उनके बहुत मित्र होते हैं।

धन के सम्बन्ध में वे लोभी नहीं होते और सट्टेबाजी जैसे कामों से अधिकतर दूर ही रहते हैं।

वे कलाप्रिय होते हैं और संगीत में भी उनको बहुत दिलचस्पी होती है। इन दिशाओं में उनको काफी योग्यता भी होती है। अध्ययनशील और शोधकार्य में तल्लीन रहने के कारण शिक्षा क्षेत्र में उन्हें विशिष्टता प्राप्त होती है। वे 'वर्तमान' में रहते हैं। जो बीत चुका है और भविष्य में क्या होगा, इसकी वे चिन्ता नहीं करते।

आर्थिक मामलों में इस अवधिकाल में जन्म लेने वाले व्यक्ति पर्याप्त धन अर्जित तो कर लेते हैं; परन्तु बहुत कम ऐसे होते हैं जो धन को वृद्धावस्था के लिये बचा कर रख सकें। उदाहरण के लिये ओस्कर वाइल्ड (OSCAR WILD) जिसका जन्म 16 अक्टूबर को हुआ था, अपने समय का सबसे अधिक मूल्य प्राप्त करने वाला नाटककार था; परन्तु अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में उसके पास साधारण भोजन के लिये भी कोई साधन न था और उसके मित्रों ने चन्दा एकत्रित करके उसे दफनाया था।

इस अवधिकाल में जन्म लेने वाले स्वास्थ्य के सम्बन्ध में सौभाग्यशाली होते हैं। क्योंकि वे व्यवस्थित जीवन व्यतीत करते हैं, इससे वे अधिक रोगग्रस्त नहीं होते। परन्तु यदि वे अपने ऊपर अधिक बोझ डाल लेते हैं तो उन्हें गुरदे के रोग हो सकते हैं। वे यद्यपि शारीरिक रूप से अधिक पुष्ट नहीं होते; परन्तु बीमार होने पर शीघ्र ठीक हो जाते हैं।

नोट :—भारतीय ज्योतिष के नियमों के अनुसार सूर्य तुला राशि में 17 अक्टूबर से 13 नवम्बर तक स्थित रहता है।

### 21 अक्टूबर से 20 नवम्बर तक
### (अधिपति मंगल नकारात्मक—अंक 9)

पाश्चात्य ज्योतिष के नियमों के अनुसार इस अवधिकाल में सूर्य वृश्चिक (Scorpio) राशि में स्थित होता है। इस अवधिकाल में जन्म लेने वाले व्यक्ति या तो बहुत भले होते हैं या बहुत दुष्ट।

लगभग 21 वर्ष की अवस्था तक इस अवधिकाल के व्यक्ति पवित्र मन के, सदाचारी और धार्मिकता में विश्वास करने वाले होते हैं। परन्तु

यदि यौन सम्बन्धी उत्तेजना उनमें उत्पन्न हो जाती है तो उनके स्वभाव और गुणों में एकदम परिवर्तन आ जाता है। यह होते हुये भी अनेकों महान पुरुषों ने इस अवधिकाल में जन्म लिया है।

इस अवधिकाल में जन्म लेने वालों में बड़ी आकर्षण शक्ति होती है। वे कुशल चिकित्सक, दक्ष सरजन, ओजस्वी वक्ता और धर्म के प्रचार करने वाले बनते हैं। सार्वजनिक सभाओं में जब वे बोलते हैं तो सुनने वालों पर जादू का-सा प्रभाव डाल देते हैं।

भाषा पर उनको पूरा अधिकार होता है। बोलने और लिखने दोनों में वे बहुत प्रवीण होते हैं। यदि वे अच्छाई वाली श्रेणी में होते हैं तो वे बहुत लोकोपकारी, अत्यन्त उदार और अपना बलिदान करने वाले होते हैं। संकट के समय उनमें जरा-सी घबराहट नहीं होती।

उनकी विचारधारा मौलिक होती है। चाहे साहित्य हो, व्यापार हो, या राजनीति हो वे जिस भी क्षेत्र में प्रविष्ट होते हैं उसमें सफलता प्राप्त करते हैं।

वे भाग्य के हाथ में खिलौने के समान होते हैं और भाग्य प्रायः उनको धोखा दे जाता है। उनके सम्बन्ध में फैलाई गई गलत अफवाहों से प्रायः उनकी बदनामी होती है।

शारीरिक रूप से कम और मस्तिष्क शक्ति द्वारा वह अधिक बलवान होते हैं। यदि उन्हें युद्ध स्थल में जाने को विवश कर दिया जाये तो वे कुशल संघटनकर्ता प्रमाणित होते हैं; परन्तु अधिकतर वे हिंसा से नफरत करते हैं।

वे कुशल राजनियक होते हैं और बातचीत करवा कर दूसरों के झगड़े समाप्त करने या युद्ध में सन्धि करवाने में अत्यन्त व्यवहार कुशल प्रमाणित होते हैं।

इनके स्वभाव और चरित्र के दो रूप होते हैं। एक दूसरों को दिखाने के लिये और दूसरा अपने लिये। एक तरफ तो वे अपनी पत्नी और बच्चों के साथ सुखी जीवन व्यतीत करते हैं और दूसरी ओर अन्य स्त्रियों के साथ प्रेम क्रीड़ायें करते रहते हैं।

गुप्त विद्याओं (जैसे ज्योतिष, हस्त सामुद्रिक शास्त्र) में उन्हें बहुत

रुचि होती है और उनका अंतर्ज्ञान शीघ्रता से विकसित हो जाता है। वे लेखक, चित्रकार, कवि और संगीतकार के रूप में सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं।

इन लोगों के प्रायः एक से अधिक आय के जरिये होते हैं। आरम्भ में ये लोग काफी आर्थिक कष्ट उठाते हैं। परन्तु उनकी कठिनाइयां उनकी इच्छा शक्ति और महत्त्वाकांक्षा और भी प्रबल बना देती हैं और शीघ्र नहीं तो कुछ विलम्ब से सफलता और प्रसिद्धि उनके चरण चूमती हैं।

इस अवधि काल में जन्म लेने वाले व्यक्ति सफल वैज्ञानिक और रसायन शास्त्री बनते हैं। आर्थिक मामलों में उनके जीवन में उतार चढ़ाव आते रहते हैं। वे सरलता से दूसरों पर विश्वास करके ऐसी योजनाओं में सम्मिलित हो जाते हैं जिनका कोई मूलाधार नहीं होता। वे अत्यन्त उदार होते हैं और अपव्ययी भी। वे खूब धन अर्जित करते हैं; परन्तु धन उनके पास टिक नहीं पाता।

उनको सताने वाले मुख्य रोग हैं—फिस्टूला, अंतड़ियों और मूत्राशय में सूजन, गुप्त इन्द्रियों के रोग। वे प्रायः दुर्घटनाओं के भी शिकार होते हैं।

नोट—भारतीय ज्योतिष के नियमों के अनुसार सूर्य वृश्चिक राशि में 14 नवम्बर से 14 दिसम्बर तक स्थित रहता है।

### 21 नवम्बर से 20 दिसम्बर तक
### (अधिपति वृहस्पति—अंक 3)

पाश्चात्य ज्योतिष के नियमों के अनुसार इस अवधिकाल में सूर्य धनु (Sagittarius) राशि में स्थित होता है।

इस अवधिकाल में जन्म लेने वाले व्यक्ति ठीक निशाने पर तीर मारने वाले होते हैं। वे अपनी बोल चाल में निश्चित होते हैं और जरूरत से ज्यादा उनके बोलने के स्वभाव के कारण वे अपने लिये शत्रु उत्पन्न कर लेते हैं।

जब वे किसी काम को हाथ में लेते हैं तो उस पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित कर देते हैं और जब तक उसमें संलग्न रहते हैं उन्हें और किसी काम से मतलब नहीं रहता।

स्पष्टवादिता उनका सबसे बड़ा गुण है और वे यदि किसी व्यक्ति को किसी दूसरे को धोखा देते देख लेते हैं तो उसको बेनकाब कर देते हैं चाहे इसके कारण उनको हानि ही क्यों न उठानी पड़े।

व्यापार या व्यवसाय के मामलों में अत्यन्त उद्यमी और साहसी होते हैं; परन्तु एक ही व्यवसाय में वे अधिक दिन नहीं टिकते। उनके दृष्टिकोण और विचार बदलते रहते हैं। यदि वे राजनीतिज्ञ हों तो वे अपनी जीवन प्रगति में अपने विचारों और नीतियों को कई बार बदल डालते हैं, यदि वे धर्म प्रचारक हों तो अपने धार्मिक विचार को बदलने में संकोच नहीं करते हैं और यदि वे वैज्ञानिक हों तो वे विज्ञान के क्षेत्र का परित्याग करके उद्योग के क्षेत्र में आ जाते हैं। वे प्रायः हर कार्य में सीमा से बाहर पहुंच जाते हैं और कुछ करना चाहते हों तो उसका एकदम निर्णय ले लेते हैं चाहे बाद में उन्हें खेद ही क्यों न हो। परन्तु वे अपनी गलतियों को कभी स्वीकार नहीं करते।

जब किसी कार्य में उन्हें यह अनुभव होने लगता है कि वे ध्येय को प्राप्त नहीं कर सकते तो उसे बीच ही में छोड़ देते हैं और किसी और कार्य को करने लगते हैं। यह भी होता है कि उसके बाद जीवन भर कोई काम नहीं करते।

इस अवधिकाल में जन्म लेने वाले पुरुष और स्त्री दोनों क्षणिक आवेग में आकर विवाह कर बैठते हैं और बाद में पछताते हैं। परन्तु उनमें इतना आत्माभिमान होता है कि वे अपनी गलती को स्वीकार नहीं करते और सुखी दाम्पत्य जीवन का नाटक रचाते रहते हैं।

वे नियम और कानून का पालन करने वाले होते हैं। वे लोकप्रिय इतने अधिक हो जाते हैं कि लोग किसी देवता की तरह उनकी उपासना करने लगते हैं। प्रसिद्धि और उच्च स्थान वे प्राप्त नहीं करते उनके ऊपर थोप दिये जाते हैं।

वे सत्य, न्याय और शान्ति के समर्थक होते हैं और कष्ट में पड़े लोगों की सेवा करना अपना मुख्य कर्तव्य समझते हैं। प्रायः अपने लोकोपकारक कार्यों के कारण समाज में एक आदरपूर्ण स्थान प्राप्त करते हैं। वे आशा-

वादी होते हैं। उदार इतने होते हैं कि प्राय: उनके इस गुण का लोग अनुचित लाभ उठाते हैं।

इस अवधिकाल में जन्म लेने वाली स्त्रियां अपने पतियों और सन्तान को जीवन में सफल बनाने के लिये अपना सब कुछ बलिदान कर देती हैं। वे अपने पारिवारिक जीवन से बिल्कुल बंधी रहती हैं और यदि उनका दाम्पत्य जीवन सुखी न हो तो भी वे उस परिस्थिति से भागने का प्रयत्न नहीं करतीं।

आर्थिक मामलों में इस अवधिकाल में जन्म लेने वाले व्यक्ति अपने मस्तिष्क की क्षमता द्वारा धनोपार्जन करते हैं। साझेदारी से उन्हें अधिक लाभ नहीं होता।

उनको प्राय: विरासत से या दूसरे से भेंट स्वरूप धन प्राप्त होता है; परन्तु वह अधिक धन संचय करने में असमर्थ होते हैं।

स्वास्थ्य के सम्बन्ध में ये लोग मस्तिष्क सम्बन्धी काम करने के कारण प्राय: आवश्यकता से अधिक काम का बोझ उठा लेते हैं, जिससे उनकी जीवन शक्ति पर कुप्रभाव पड़ता है। उन्हें स्नायु सम्बन्धी विकार हो सकते हैं। साइटिका और जिगर के विकार की ओर भी इन लोगों की प्रवृत्ति होती है। उनके पैर भी लकवे से अशक्त हो सकते हैं। उनको अपने शरीर में रक्त संचार की नियमितता की ओर ध्यान रखना चाहिये। उन्हें अधिक तेज दवाइयां भी नहीं सेवन करनी चाहियें। उन्हें आवश्यक विश्राम करना चाहिये—शारीरिक भी और मानसिक भी।

नोट—भारतीय ज्योतिष के नियमों के अनुसार सूर्य धनु राशि में 15 दिसम्बर से 13 जनवरी तक स्थित रहता है।

### 2 दिसम्बर से 20 जनवरी तक
### (अधिपति शनि—अंक 8)

पाश्चात्य ज्योतिष के अनुसार सूर्य इस अवधिकाल में मकर (Capricorn) राशि में स्थित रहता है।

इस अवधिकाल में जन्म लेने वाले व्यक्ति स्वभाव से महत्त्वाकांक्षी, आवश्यकता पड़े तो लड़कर भी अपने ध्येय को पूरा करने वाले, उद्यम-

शील और धुन के पक्के होते हैं। उनमें अपनी इच्छा की वस्तु प्राप्त करने के लिये विपुल प्रयत्न करने की क्षमता होती है। वे सावधानी और होशियारी से चलने वाले होते हैं। जब तक वे किसी योजना के परिणाम के सम्बन्ध में सोच विचार न कर लें, उसे हाथ में नहीं लेते हैं। उनके स्वभाव में किसी भी काम का जूआ खेलने या रिस्क लेने की प्रवृत्ति नहीं होती। नये सिद्धान्तों को वह संदिग्ध दृष्टि से देखते हैं और उनका पूर्ण रूप से विश्लेषण करके जब उनके प्रति सन्तुष्ट हो जाते हैं तभी उन्हें मान्यता देते हैं। उनकी विचार शक्ति अत्यन्त बलवान होती है और स्वभाव से वे विज्ञानानुसारी (Scientific) होते हैं। वे या तो धर्मान्ध और धर्म के मामले में दुराग्रही होते हैं या बिल्कुल नास्तिक बन जाते हैं। बुद्धिमत्ता इनका सबसे अधिक विशेष गुण है और बुद्धिमान लोगों की वे कद्र करते हैं।

उनमें निहित अंतर्ज्ञान उन्हें लोगों का वास्तविक रूप समझने में सहायता करता है। परन्तु अपनी योजनाओं को सफल न हो रहे देख कर ये लोग बहुत शीघ्र हतोत्साह हो जाते हैं। प्रेम, कर्त्तव्य और सामाजिक गतिविधियों के सम्बन्ध में इनके विचार ऐसे निराले होते हैं कि लोग इन्हें सनकी समझने लगते हैं। ये व्यक्ति अत्यन्त स्वतन्त्र स्वभाव के होते हैं और जो कार्य हाथ में लेते हैं उसमें बहुत शीघ्र आगे बढ़ जाते हैं। उनको अपने ऊपर किसी प्रकार का नियंत्रण पसन्द नहीं होता। वे लोग एक ओर तो अपने काम में हस्तक्षेप पसन्द नहीं करते, दूसरी ओर वे परम्पराओं और अधिकृत प्रमाणों को मान्यता देते हैं। जीवन उनके लिये गम्भीर और कठिनाइयों से पूर्ण समस्या होता है और वे अधिकतर निराशावादी होते हैं।

वे पागलों की तरह काम में जुट जाते हैं और वे एक ध्येय को सामने रखकर चुपचाप और धीरे-धीरे आगे बढ़कर उसे प्राप्त करते हैं। यदि वे जल्दबाजी या उत्तेजनावश काम करें तो सफल नहीं होते। अपने ही प्रयत्नों से और अपने व्यक्तित्व की शक्ति से उनके लिये जीवन में उन्नति करना सम्भव होता है। उनका स्वभाव अकारात्मक (Positive) होता है परन्तु सफल होने के लिये उनको अपने जीवन में उदासी और निराशा के स्थान में हर्षोल्लास और उत्साह लाना और आशावादी बनना अत्यन्त आवश्यक है।

साधारणतया ये लोग गलतफहमियों के शिकार होते हैं, वे दूसरों से बहुत कम मिश्रित होते हैं और उनके बहुत कम मित्र होते हैं। इसलिये वे बहुत अकेलापन अनुभव करते हैं।

वे सार्वजनिक जीवन में, जैसे म्यूनिसिपलिटी के सदस्य बनना, राजनैतिक क्षेत्र में काम करना या उत्तरदायित्वपूर्ण स्थानों को संभालना, अत्यन्त सफल हो सकते हैं।

आर्थिक क्षेत्र में इस अवधिकाल में जन्म लेने वाले व्यक्तियों के उन्नति पथ में अनेकों प्रकार की कठिनाइयां, विघ्न-बाधायें और सीमायें, उपस्थित होती हैं, विशेषकर जीवन के प्रारम्भिक भाग में।

इनको आर्थिक उन्नति, धनलाभ और धनोपार्जन में सफलता, उद्यमशीलता, सावधानी तथा व्यय पर नियंत्रण रखकर हो सकती है। उनकी उन्नति एकदम नहीं, धीरे-धीरे होती है। इनके ऊपर छप्पर फाड़ कर धन की बौछार नहीं होती। उन्हें कठोर परिश्रम करके और निजी प्रयत्नों से धन अर्जित करना पड़ता है। उन्हें मकान बनवाने, कारखाने खोलने में, यातायात की मशीनरी के क्रय-विक्रय करने में, कृषि के काम में, पूंजी निवेशन से धन लाभ होता है।

स्वास्थ्य के मामलों में उनके शरीर की गठन बहुत पुष्ट होती है और उनमें शारीरिक शक्ति की कमी नहीं होती। परन्तु शीघ्र निराश और चिन्तित हो जाने के कारण वे उदर विकार, पित्त विकार, हाइपर ऐसिडिटी और अंतड़ियों के रोग से पीड़ित हो सकते हैं। स्वस्थ रहने के लिए उनको अपने जीवन में हर्षोल्लास लाना, मित्रमडली बनाना चाहिए और आशावादी होना चाहिए। सरदी जुकाम के प्रति उन्हें सावधान रहना चाहिए क्योंकि उसके कारण उनको दमा रोग हो जाने की सम्भावना होती है।

**नोट**—भारतीय ज्योतिष के नियमों के अनुसार सूर्य मकर राशि में 14 जनवरी से 13 फरवरी तक भ्रमण करता है।

**21 जनवरी से 18 फरवरी तक**

**(अधिपति शनि नकारात्मक—अंक 8)**

पाश्चात्य ज्योतिष के नियमों के अनुसार इस अवधिकाल में सूर्य कुम्भ

(Aquarius) राशि में स्थित होता है ।

इस अवधिकाल में जन्म लेने व्यक्ति आवश्यकता से बहुत अधिक भावुक होते हैं । उनके मन को लोगों के ताने और व्यंग्यों से बहुत आघात लगता है । यद्यपि वे अनेकों लोगों के सम्पर्क में आते हैं; परन्तु अपने जीवन में वे अकेलापन ही अनुभव करते हैं ।

वे अपने प्रेम या स्नेह का खुला प्रदर्शन नहीं करते; परन्तु जिनको वे प्यार करते हैं उनके प्रति पूर्ण निष्ठा निभाते हैं । और अपने मित्र के लिये या जिस सेवा कार्य के करने के लिये उन्होंने बीड़ा उठाया हो, वे अन्तिम समय तक लड़ते रहते हैं ।

इन व्यक्तियों को दूसरों के वास्तविक रूप को पहचानने की अद्‌भुत क्षमता होती है; परन्तु किसी को हानि न पहुंचाने के अभिप्राय से वे अपने मन की बात प्रगट नहीं करते । यदि वे दूसरों का भण्डा फोड़ दें तो बाद में उन्हें बहुत पश्चाताप होता है ।

सार्वजनिक भलाई के कार्यों में वे बहुत सक्रिय होते हैं और दूसरों के दुःख निवारण में बहुत उदार होते हैं ।

व्यापार के सम्बन्ध में उनकी योजनायें और विचार बहुत ठोस होते हैं और उनकी सलाह दूसरों के लिये अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होती है । साधरणतया वे अत्यन्त उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर आसीन होते हैं; परन्तु उनकी सफलता का लाभ उन्हें कम और जिनके लिये वे काम करते हैं, उनको अधिक होता है ।

उनको अपनी प्रशासन योग्यता का जब अवसर मिलता है तो लोग उनकी अद्‌भुत क्षमता देखकर चकित हो जाते हैं ।

यदि वे अपनी भावुकता पर नियंत्रण रखने में समर्थ हो जायें और अपने आपको आत्म विश्वास से पूर्ण कर दें तो कोई भी उच्च पद उनकी पहुंच से बाहर नहीं होता । ऐसे व्यक्ति मानवता की भलाई के लिये ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं, या कोई ऐसा आविष्कार करते हैं, जिससे उनका नाम अमर हो जाता है ।

यदि वे धनवान परिवार में जन्म लेते हैं तो उनके वास्तविक गुण कभी विकसित नहीं होते और वे एक साधरण जीवन व्यतीत करते रहते हैं ।

इस अवधिकाल में जन्म लेने व्यक्तियों के जीवन में अकस्मात भाग्य परिवर्तन की सम्भावना बनी रहती है। जिस क्षेत्र में भी वे कार्य करें उनको परख लेना चाहिए कि वह अनिश्चित सम्भावना का तो नहीं है। उनके लिये लाभप्रद व्यवसाय है, किसी ट्रस्ट का उत्तरदायित्व संभालना, बैंक और बीमा कम्पनियों से सम्बन्धित कार्य करना, बिजलीघरों, विमान सम्बन्धी क्षेत्रों में कार्य करना या व्यापार करना और अपने या दूसरों के आविष्कारों को व्यापारिक रूप देना।

यों तो उनके जीवन में धनोपार्जन में सदा अनिश्चितता बनी रहेगी परन्तु उनके जीवन में एक ऐसे समय के आने की सम्भावना होती है जब उन्हें अप्रत्याशित रूप से काफी बड़ी धन राशि प्राप्त हो।

स्वास्थ्य के सम्बन्ध इस अवधिकाल में जन्म लेने व्यक्तियों को अधिकतर उदर, जिगर और गॉल ब्लाडर के रोग पीड़ित करते हैं। उन्हें दवाइयां खाने की आदत सी पड़ जाती है। उनके लिये अन्य सम्भावित रोग हैं—रक्त संचार में खराबी, कम खून बनना (anaemia)' सिर दर्द, हृदय में धड़कन और हृदय की कमजोरी, गुरदे में विकार और ड्राप्सी।

नोट :—भारतीय ज्योतिष के नियमों के अनुसार सूर्य कुम्भ राशि में 14 फरवरी से 13 मार्च तक स्थित रहता है।

### 19 जुलाई से 20 मार्च तक
### (अधिपति वृहस्पति नकारात्मक—अंक 3)

पाश्चात्य ज्योतिष के नियमों के अनुसार इस अवधिकाल में सूर्य मीन (Pisces) राशि में स्थित रहता है।

इस अवधिकाल में जन्म लेने व्यक्तियों में अंतर्निहत स्वाभाविक समझने की शक्ति होती है, और अंतर्ज्ञान भी पर्याप्त मात्रा में होता है। विभिन्न देशों के इतिहास, यात्राओं और नये नये देशों की गवेषणा, शोध कार्य आदि में उनको अत्यन्त दिलचस्पी होती है और इन विषयों का ज्ञान वे सहजता से ग्रहण कर लेते हैं।

ऊपर से वे कुछ भी कहें; परन्तु वास्तव में वे अत्यन्त महत्त्वाकांक्षी होते हैं। वे जिस विषय पर बोलने या लिखने वाले होते हैं उसका पूर्ण-

रूप से अध्ययन पहले ही से कर लेते हैं। यदि उन्हें विश्वास हो जाये कि लोग उन्हें विश्वस्त समझते हैं तो वे अपने मित्रों के प्रति और उस सेवा कार्य के प्रति जो वे संभालते हैं, पूर्ण निष्ठा निभाते हैं। प्रायः सभी उत्तर-दायित्व पूर्ण स्थानों में वे सफलता प्राप्त करते हैं।

कानून के नियमों का वे कठोरता से पालन करते हैं और जिस धर्म या समाज को मान्यता देते हैं उसकी परम्पराओं का आदर करते हैं।

इस अवधिकाल में जन्म लेने वाले व्यक्ति अपने स्वभाव से अत्यन्त सद्गुणी और सदाचारी या अत्यन्त दुर्गुणी और दुराचारी होते हैं। कुछ में जन्म जात ऐशो आराम और विषय-भोग की प्रवृत्ति होती है। इस प्रकार के लोग गलत प्रकार के मित्रों की संगित में पड़कर छलपूर्ण या कपटपूर्ण योजनायें बनाने में सम्मिलित होते हैं और कुछ तो नशीले द्रव्य या मदिरा आदि सेवन करने लगते हैं। परन्तु उनमें अपने आप को सुधा-रने की भी अपूर्व क्षमता होती है।

इस अवधिकाल में जन्म लेने व्यक्ति अत्यन्त भावुक और आवेशात्मक होते हैं। यदि अवगुणों वाला स्वभाव उन पर अधिकार कर लेता है तो वे पतन के खड्ड में जा गिरते हैं। परन्तु यदि सद्गणों वाले स्वभाव का उन पर प्रभाव हो तो उनकी आवेशात्मक प्रवृत्ति उनको सर्वोच्च पदों पर पहुंचा देती है।

व्यापार में यातायात के कार्यों में, विदेशों से व्यापार करने में और आयात-निर्यात के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करते हैं।

इस अवधिकाल के व्यक्ति अंधविश्वासी होते हैं और गुप्त विद्याओं (ज्योतिष, हस्त-सामुद्रिक शास्त्र, तंत्र-मंत्र आदि) में पूरी आस्था रखते हैं और यदि दिलचस्पी लेते हैं तो उनके सम्बन्ध में पर्याप्त ज्ञान भी अर्जित कर लेते हैं।

स्वभाव से वे उदार होते हैं; परन्तु मन ही मन में वे धनहीनता से डरते रहते हैं। इस लिये अपनी उदारता पर अंकुश लगाने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु अपने प्रेमी या प्रेमिका के लिये वे फकीर भी बनने को तैयार हो जाते हैं।

आर्थिक मामलों में इस अवधिकाल में जन्म लेने व्यक्ति अपने जीवन

से बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं यदि उनकी महत्त्वाकांक्षा जागृत हो उठे। परन्तु उनकी महत्त्वाकांक्षा मानसिक अधिक होती है और शारीरिक कम। वे बड़े-बड़े स्वप्नों के महल बनाते हैं; परन्तु अपनी सोची हुई योजनाओं को कार्यान्वित करने में असमर्थ होते हैं। परिणामस्वरूप ऐसे व्यक्तियों को अपने जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं। इससे वे तभी बच सकते हैं जब वे अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को कार्यरूप में परिणित करने में समर्थ हों।

इस अवधिकाल के व्यक्ति धन के सम्बन्ध में लापरवाह होते हैं और भविष्य के लिये कुछ बचाकर रखने की ओर उनकी प्रवृत्ति नहीं होती। परिणाम यह होता है कि अपनी वृद्धावस्था में उनको आर्थिक कष्टों से पूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ता है और वे दूसरों पर निर्भर होने को विवश हो जाते हैं।

स्वास्थ्य के सम्बन्ध में इस अवधिकाल में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को अधिकतर बीमारियों के कारण चिन्ता होती है। वे निराश और हतोत्साह हो जाने पर उदर विकार से, स्नायु तंत्र के रोगों से और लकवे से पीड़ित होते हैं। उनके फेफड़े भी कमजोर होते हैं और उन्हें क्षय रोग होने की भी सम्भावना होती है। इन व्यक्तियों में ट्यूमर होने और अंतड़ियों के खराब हो जाने का भी भय रहता है।

**नोट**—भारतीय ज्योतिष के नियमों के अनुसार सूर्य मीन राशि में 14 मार्च से 12 अप्रैल तक स्थित रहता है।